अंक ज्योतिष



अंक ज्योतिष

अंक ज्योतिष एक नवीन विद्या है,
जिसके द्वारा मात्र जन्म-तारीख से भविष्यफल
स्पष्ट किया जा सकता है।

'आनन्द पेपरबैक्स' जैसी विख्यात एवं प्रतिष्ठित
प्रकाशन संस्था ने जिस सजधज के साथ इस पुस्तक
का नया परिवर्तित एवं परिवर्द्धित संस्करण
प्रकाशित किया है,
वह वास्तव में ही सराहनीय है।

और इससे भी ज्यादा इस पुस्तक की उपयोगिता
इसलिए बढ़ गई है कि इसके प्रारंभ में
'अंक ज्योतिष : एक विवेचन'
तथा अन्त में 'अंक ज्योतिष : भविष्यदर्शन'
शीर्षक नामक जो दो नये अध्याय दिए हैं,
वे सर्वथा मौलिक हैं और पहली बार प्रकाशित
हो रहे हैं जिनके माध्यम से प्रैक्टिकल
रूप में अंक ज्योतिष से भविष्यफल स्पष्ट
करने की विधि प्रस्तुत की है।

मुझे विश्वास है, मेरे पाठकों
को यह प्रयास अनुकूल प्रतीत होगा
और वे उत्साह के साथ इसे अपनाएंगे।

—नारायणदत्त श्रीमाली

डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली की अन्य पुस्तकें

वर्षफल दर्पण	(,,)	5·00
कुण्डली-दर्पण		5·00
भारतीय ज्योतिष		6·00
जन्मपत्री रचना		6·00
फलित ज्योतिष		5·00
हस्ताक्षर विज्ञान	(प्रकाश्य)	5·00
अंक दीपिका	(,,)	5·00
ज्योतिष योग चन्द्रिका	(,,)	5·00
दशाफल दर्पण	(,,)	5·00
ज्योतिष योग दीपिका	(,,)	5·00

अंक ज्योतिष

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली



आनंद पेपरबैक्स

अंक ज्योतिष

आनंद पेपरबैक्स
मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

विद्या भारती प्रेस
शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित

ANK JYOTISH
By Dr. Narayan Dutt Shrimali

विषय सूची

शुभ रत्न, देवता, ध्यान, मंत्र, शारीरिक स्वास्थ्य तथा बीमारियाँ, व्रतोपवास, मित्रता, रोमांस, आपकी विशेषताएँ, सावधानियाँ, उल्लेखनीय व्यक्तित्व।

अंक ज्योतिष : एक विवेचन

अंक ज्योतिष अपने-आप में एक नवीन विकसित विज्ञान है, जिसका पूरा आधार गणित और उससे निसृत फल है। इसका मूल आधार किसी भी व्यक्ति की जन्म-तारीख आदि से है।

इससे पूर्व भारतीय ज्योतिष विज्ञान में दो पद्धतियाँ विशेष रूप से प्रचलित थीं जिनमें एक जन्म-कुण्डली से भविष्य-विवेचन तथा दूसरा हाथ की रेखाओं से भविष्य को स्पष्ट करना था।

परन्तु पाश्चात्य देशों में इसके अतिरिक्त एक और पद्धति प्रचलित हुई जिसका मुख्य आधार जन्म-तारीख ही रहा। उन्होंने जन्म-तारीख के माध्यम से ही पूरे भविष्य को स्पष्ट करने का तरीका स्पष्ट किया।

परन्तु सही रूप में देखा जाए तो यह पाश्चात्य ज्योतिष नहीं है अपितु इसका मूल उद्गम भारतीय ज्योतिष ही रहा है क्योंकि भारतीय ज्योतिष में अष्टक वर्ग एक प्रामाणिक विवेचन रहा है और ज्योतिष सिद्धांतों में यह कहा गया है कि जो अष्टक वर्ग का बिना अध्ययन किए ही भविष्य स्पष्ट करता है वह अपूर्ण ज्योतिषी होता है और उसका भविष्य पूर्ण रूप से प्रामाणिक नहीं हो सकता।

इसका मूल कारण यही है कि भारतीय ज्योतिष में अष्टक वर्ग को सबसे अधिक मान्यता दी गई है और इस ज्योतिष अष्टक वर्ग से ही ग्रहों का बल निकालकर उसका स्पष्ट विवेचन किया गया है।

वास्तव में ही ज्योतिष अष्टक वर्ग अपने-आप में प्रामाणिक विवेचन है। इससे यह ज्ञात हो जाता है कि जन्म-कुण्डली में जो ग्रह स्थित हैं वे कितने बलवान हैं, दो ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध कितना सुदृढ़ है तथा किस ग्रह को कितनी रेखाएँ प्राप्त हुईं। इन रेखाओं के अध्ययन से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि जो दो ग्रह एक ही भाव में बैठे हैं उनमें कौन-सा ग्रह ज्यादा बलवान है और उसका प्रभाव दूसरे ग्रह पर कितना है। यही नहीं, अपितु इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिशत के हिसाब से भी दोनों ग्रहों का बल कितना है और मानव के भविष्य-निर्माण में किस ग्रह का योगदान ज्यादा है।

परन्तु आधुनिक रूप में हम जिसे अंक ज्योतिष कहते हैं, वह सर्वथा इससे भिन्न है। अंक ज्योतिष मूलतः भारतीय धरातल पर उत्पन्न हुआ है परन्तु यह फला-फूला विदेशी धरती है। वहीं पर इसपर शोध हुई और इस सम्बन्ध में कई नये प्रयोग हुए और इस प्रकार एक नवीन ज्योतिष का जन्म हुआ जिसे आजकल की भाषा में अंक ज्योतिष कहते हैं।

इसका मूल आधार अंक हैं और एक से नौ तक के अंक विशेष महत्त्व रखते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार भी अंक का शोध सबसे पहले भारत में ही हुआ था और शून्य की खोज करके भारत ने गणित क्षेत्र में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन ला दिया था, क्योंकि इस शून्य ने बहुत बड़ी-बड़ी संख्याओं से पिण्ड छुड़ा दिया और शून्य के माध्यम से हम बड़ी संख्याओं को भी संक्षेप में लिख सके।

भारतीय महर्षियों के अनुसार भी एक से नौ तक के अंकों में विशेष विद्युत् प्रवाह है और इनका जब भी उपयोग किया जाता है तब एक विशेष प्रकार की चुम्बकीय शक्ति पैदा होती है जो कि आसपास के वातावरण को चुम्बकीय बना देती है।

पाश्चात्य अंक ज्योतिषशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक अंक का अधिपति एक ग्रह है और उस ग्रह के अनुसार ही उस अंक की शक्ति, प्रगति और स्वभाव है। उनके अनुसार अंक और सम्बन्धित ग्रह इस प्रकार हैं :

अंक	सम्बधित ग्रह
१.	सूर्य
२.	चन्द्रमा
३.	गुरु
४.	सूर्य या हर्शल
५.	बुध
६.	शुक्र
७.	वरुण या नेपच्यून
८.	शनि
९.	मंगल

इस प्रकार प्रत्येक अंक का अधिपति एक ग्रह है और उस ग्रह के अनुसार ही अंक की प्रगति भी है। अतः अंक को समझने से पूर्व ग्रह तथा उसकी प्रकृति को समझना उचित रहेगा।

नीचे मैं प्रत्येक अंक व उससे सम्बन्धित ग्रह का संक्षिप्त कारकत्व स्पष्ट कर रहा हूँ :

१. सूर्य—यह समस्त ग्रहों का अधिपति ग्रह है और अन्य सभी ग्रह इसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं। इसका स्वभाव अत्यन्त तेजस्वी और उग्र होता है तथा यह पुल्लिग और राजस्व गुण वाला है। विशेष रूप से यह आत्मसिद्धि, पिता, जंगल, विदेश यात्राएँ, भ्रमण, सिरदर्द और मानसिक चिन्ताओं का कारक है। इसका प्रभाव विशेष होता है।

२. चन्द्रमा—यह स्त्री जातक ग्रह है। पुरुषार्थ मानव प्रकृति आदि का अध्ययन इसी ग्रह के माध्यम से किया जाता है। यह राजस्व गुण वाला है तथा इसकी स्थिति सूर्य के बाद विशेष महत्त्वपूर्ण मानी गई है। यह शीघ्रगामी है अतः यह जातक को तुरन्त लाभ या हानि

पहुँचाने की क्षमता रखता है। यह मन और तत्सम्बन्धी कार्य, सुगन्धित द्रव्य, पानी, माता, आदर, सम्मान, श्रीसम्पन्नता, एकान्तप्रियता, सर्दी-जुकाम, चर्म रोग और हृदय रोग का कारक ग्रह है।

३. गुरु—यह देव गुरु कहलाता है, अतः इसका स्वभाव सरल और सहयोगी होता है। यह पुल्लिंगी तथा राजस्व स्वभाव वाला ग्रह है तथा सन्तान, सन्तान-सुख, विद्या, इन्द्रिय-निग्रह, राज्य-सम्मान, लाभ, कीर्ति और पवित्र व्यवहार आदि का विशेष विचार इस ग्रह के माध्यम से सम्भव है।

४. हर्शल—यह ग्रह अपने-आप में विशेष अधिकार-सम्पन्न है, और मानव की उन्नति, विदेश-प्रवास, विदेश में स्थायित्व आदि पर इसका विशेष प्रभाव माना गया है। इस ग्रह से सम्बन्धित व्यक्ति जीवन में जन्म-स्थान की अपेक्षा किसी अन्य स्थान पर विशेष सफलता प्राप्त करता है और जीवन में भाग्योदय भी विदेश में ही होता है।

५. बुध—इस ग्रह का विशेष अधिकार कंधे, गर्दन तथा भावनाओं पर रहता है। यह नपुंसक लिंगी तथा सात्विक गुण वाला है। यह ग्रह वेद, पुराण, ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन, साक्षी, राज्य-व्यापार, वैद्यक, कुष्ठ रोग, संग्रहणी आदि का कारक है। ऐसा व्यक्ति व्यापार अथवा लेन-देन के कार्यों में निपुण होता है तथा व्यापार के माध्यम से ही इस प्रकार के व्यक्ति का भाग्योदय होता है।

६. शुक्र—यह विशेष रूप से प्रतिभावान ग्रह है और इसका प्रभाव व्यक्तित्व तथा चेहरे पर विशेष रूप से रहता है। यह स्त्रीलिंगी तथा राजस्व गुण वाला ग्रह है और इस प्रकार के व्यक्ति शौक-मौज करने वाले तथा प्यार में निपुण होते हैं।

विवाह, सगाई, सम्बन्धविच्छेद, तलाक तथा द्यूत, भोग-विलास, प्रेमी-प्रेमिका सुख, संगीत, चित्र, कला-निपुणता, छल-कपट, कोषाध्यक्षता, मानाध्यक्षता, विदेश गमन, स्नेह-स्निग्धता, प्रमेह रोग आदि का कारक ग्रह है।

ऐसे व्यक्ति वास्तव में ही जीवन का पूर्ण आनन्द लेने वाले होते हैं

और अपने जीवन में सभी प्रकार से भौतिक सुख प्राप्त करने में विश्वास रखते हैं।

७. वरुण—यह ग्रह जल से सम्बन्धित है। ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय वर्तमान स्थान से दूर नदी-तट या समुद्र-तट के किनारों वाले शहर में विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्तियों को चाहिए कि वे व्यापार में विशेष रुचि लें और इस प्रकार के व्यापार जिनका सीधा सम्बन्ध जल से हो तो वे विशेष लाभ उठा सकते हैं।

८. शनि—यह ग्रह मंदचर होने के साथ-साथ अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है और यह नपुंसक लिंगी तथा तामस स्वभाव वाला ग्रह माना जाता है। यह आयु, मृत्यु, चोरी का कार्य, द्रव्य की हानि, घाटा, दिवाला, बन्धन, जेल, मुकदमा, फांसी, शत्रुता, राजभय, त्यागपत्र, गठिया तथा वायु सम्बन्धी रोगों का कारक है।

इससे सम्बन्धित व्यक्ति एक अच्छे वकील और अच्छे मशीनरी सम्बन्धी जानकार हो सकते हैं।

९. मंगल—यह विशेष उग्र स्वभाव का ग्रह है और पुल्लिंगी तथा तामस ग्रह होने के कारण इसका व्यवहार अपने-आप में विशिष्ट होता है।

यह ईमानदारी, जमींदारी, रोग, मानसिक आघात, बड़े भाई का सुख, एक्सीडेण्ट, गरीबी, शूरता, चालाकी आदि का विशेष कारक ग्रह है।

इस प्रकार का व्यक्ति लेन-देन, खेती-जायदाद, पशुओं का लेन-देन तथा कपट-व्यवहार आदि में विशेष सफल माना जाता है।

अब मैं आगे के पृष्ठों में कुछ नवीन तथ्य प्रस्तुत कर रहा हूँ जो कि पहली बार अंक ज्योतिष के क्षेत्र में प्रकाश में आ रहे हैं।

मैं आगे की पंक्तियों में प्रत्येक अंक के सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ और इसके माध्यम से यह जाना जा सकता है कि सम्बन्धित अंक के व्यक्ति किस प्रकार के होते हैं तथा उनका स्वभाव, रहन-सहन, खान-पान आदि की स्थिति कैसी होती है। इससे हमें

मालिक, नौकर, मित्र, पत्नी, प्रेमिका आदि के बारे में जानकारी प्राप्त हो सकती है, जिससे कि हम उसके बारे में भली प्रकार से सारे तथ्यों को जान सकें और उसके अनुसार अपने व्यवहार को बनाकर उससे लाभ उठा सकें।

अंक एक व उनका चरित्र

आपका व्यक्तित्व अपने-आप में दया-भावना से पूर्ण है। आपमें सहयोग की भावना विशेष रूप से होती है। स्वयं को पूर्ण नियंत्रण में रखना आपकी विशेषता है। आप मिजाज से ठण्डे, सौम्य तथा सरल स्वभाव के हैं। अधिक उन्नत और सभ्य जीवन जीने की इच्छा आपमें बराबर बनी रहती है। आपके सामने एक उद्देश्य होता है और उस उद्देश्य की पूर्ति ही आपका लक्ष्य होता है।

आप जन समाज के अधिक से अधिक निकट रहने का प्रयास करते हैं इसीलिए समाज में आप सम्मानित माने जाते हैं।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

आप जनप्रिय तथा कोमल प्रकृति के व्यक्ति हैं तथा नियम-पालन में आप विशेष सतर्क रहते हैं। आपका व्यक्तित्व ठोस होने के कारण आपपर सामान्यतः कोई कीचड़ नहीं उछाल सकता। लोभ-लालच तथा क्षुद्र भावनाओं से आप दूर रहते हैं। व्यवहार से निष्कपट तथा उदारमना होने के कारण आप स्पष्ट वक्ता हैं। शान्तिपूर्वक जीवन जीना आपको प्रिय है। संकट व आपत्तिकाल में आपके व्यक्तित्व में विशेष निखार आ जाता है।

आपका सक्रिय जीवन

मित्रों की तरफ से आपको पूरा-पूरा सहयोग मिलता है, और आप भी अपने मित्रों को सभी प्रकार से पूर्ण सहयोग देते हैं। आपके साथ जिस किसीका भी एक बार सम्पर्क जुड़ जाता है, वह टूटता नहीं

है। आप परजनहिताय कार्य करने में विशेष आनन्द अनुभव करते हैं।

मानसिक सन्तुलन

आपका मस्तिष्क उर्वर है और आप नित्य नवीन कल्पनाएँ करते रहते हैं। परन्तु आप अपने विचारों में जल्दी परिवर्तन कर लेते हैं जो कि उचित नहीं कहा जा सकता। यात्रा करने का आपको विशेष शौक है। आपका जीवन गतिशील है। समय के साथ-साथ कदम बढ़ाकर चलने की आपमें क्षमता है, परन्तु कई बार उतावलापन आपका अहित कर बैठता है। आपको इस संदर्भ में सावधानी बरतनी चाहिए।

कार्य-पद्धति

अव्यवस्था एवं फूहड़पन से आपको घृणा है। दैनिक जीवन में आप जो भी कार्य करते हैं उसमें बुद्धि का पूरा-पूरा योगदान रहता है। मौलिकता आपका विशेष गुण है अतः आपके प्रत्येक कार्य में मौलिकता अवश्य रहती है और यही आपकी सफलता का रहस्य है।

सहयोग व जन-सम्पर्क

समाज में आपका सम्मान रहता है, आप अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी समाज के कार्यों में रुचि लेते हैं। छोटे-मोटे व्यक्ति अपनी समस्याएँ लेकर आपके पास आते हैं और आप उनका निर्णय कुछ इस प्रकार से देते हैं कि वादी और प्रतिवादी दोनों ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। वातावरण देखकर उसके अनुकूल अपने-आपको ढाल देना आपका विशेष गुण है।

जीवन-रहस्य

विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी आप हँसमुख बने रहते हैं। प्रत्येक मुसीबत आपको एक कदम और ऊँचा उठाती है। हताश होने की अपेक्षा आप निरन्तर अपनी गति से कार्य करते रहते हैं। कठोर,

श्रमसाध्य जीवन ही आपके जीवन का रहस्य है।

जन्मजात प्रवृत्ति

नेतृत्व करने एवं उचित मार्ग-निर्देशन करने का आपमें जन्मजात गुण है। आपको चाहिए कि आप इस गुण को अधिक से अधिक बढ़ाएँ तथा अपने नेतृत्व को उस स्थान पर पहुँचा दें जहाँ आपका व्यक्तित्व उठ सके।

आपका आदर्श वाक्य

अनुशासित जीवन ही वास्तविक जीवन है और यही आपके जीवन का मूल मंत्र है। जीवन की वास्तविकता को आप भली प्रकार से समझते हैं तथा आदर्श जीवन के लिए अपने-आपको खपा देना आपका मूल उद्देश्य रहता है। वास्तव में ही संघर्ष में आप जिस प्रकार से अविचलित रहते हैं उससे प्रेरणा ली जा सकती है।

अंक दो व उनका चरित्र

आपका व्यक्तित्व भव्य है। नेतृत्वशीलता आपकी सबसे बड़ी विशेषता है। जीवन में चाहे कितनी ही बाधाएँ आ जाएँ आप सहज ही विचलित नहीं होते अपितु अपने जीवन-पथ पर बराबर आगे बढ़ते रहते हैं। दूसरे लोगों पर आपका प्रभुत्व रहता है तथा आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपके कठोर परिश्रम की सराहना करने के साथ-साथ आपके प्रशासन से मन ही मन भयभीत भी रहते हैं।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

आपका व्यक्तित्व उस बादाम के समान है जो ऊपर से अत्यन्त कठोर होते हुए भी अन्दर से अत्यन्त नरम, मृदु और सुस्वादु है। आपका परिचय-क्षेत्र जितना भी है, उन सबके लिए आप बराबर प्रयत्न करते रहते हैं और उन्हें ऊँचा उठाने के लिए हर संभव सहायता

करते रहते हैं। कठोर परिश्रम, लक्ष्य की तरफ निरन्तर गतिशील रहना तथा सभी लोगों से मधुर व्यवहार बनाए रखना आपके व्यक्तित्व की प्रधान विशेषता कही जा सकती है।

आपका सक्रिय जीवन

आपका जीवन जरूरत से ज्यादा व्यस्त एवं सक्रिय रहता है। इसका कारण यह है कि आपका परिचय क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत तथा उच्चस्तरीय होता है। फलस्वरूप आप प्रत्येक के लिए कार्य करते हैं और इसी वजह से आप ज्यादा व्यस्त रहते हैं। हकीकत में देखा जाए तो आपके हृदय में स्नेह और प्रेम का समुद्र लहरा रहा है। ऊपर से आप चाहे कितनी ही कठोरता दिखाएँ, पर मन से आप किसी का भी अहित नहीं करते।

मानसिक सन्तुलन

यद्यपि आपका जीवन जरूरत से ज्यादा संघर्षपूर्ण है परन्तु फिर भी आपमें आत्मविश्वास की कमी नहीं है। मुसीबतों को चुनौती देने की आपमें सामर्थ्य है तथा कठिनाइयों में भी हँसकर आगे बढ़ने की योग्यता आपमें है। आप निरन्तर अपने कार्य में लगे रहते हैं और एक बार जो निर्णय ले लेते हैं उस पर अटल रहते हैं।

कार्य-पद्धति

आपके जीवन में कई कार्य तो आपके व्यक्तित्व के कारण ही सम्पन्न हो जाते हैं। प्रसन्नमुख तथा आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होने के कारण आपके कई कार्य आपके परिचित या मित्र कर देते हैं। आपमें तुरन्त निर्णय कर लेने की भी विशेष क्षमता है और यह गुण आपको आगे बढ़ाने में विशेष सहायक है। स्पष्ट तथा दो-टूक बात कहने में आप ज्यादा विश्वास करते हैं परन्तु इससे कई बार दूसरे लोग बुरा भी मान जाते हैं।

सहयोग व जन-सम्पर्क

किसी भी कार्य की जड़ तक पहुँचकर तथा उसकी कार्यपद्धति समझकर उसके अनुरूप नीति निर्धारित करना आपका स्वभाव है। वातावरण व परिस्थितियों के अनुसार अपने-आपको ढाल लेते हैं तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेने की कला भी आपमें है। आप मानव मनोविज्ञान के अच्छे ज्ञाता हैं, फलस्वरूप किससे किस प्रकार से काम लिया जाए यह कला आपको भली प्रकार से आती है।

जीवन-रहस्य

आपके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि आप बाधाओं, मुसीबतों तथा कठिनाइयों में भी मुस्कराते रहते हैं। प्रत्येक बाधा आपके संकल्प को और ज्यादा मजबूत करती है। कठिनाइयों से आप हताश नहीं होते अपितु दूने जोश से उस कार्य में जुट जाते हैं और जब तक वह कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता तब तक आप विश्राम नहीं करते। यही आपका जीवन-रहस्य है।

जन्मजात प्रवृत्ति

नेतृत्व करने की प्रवृत्ति आपमें जन्मजात है और जीवन में यही गुण आपको सफलता के सबसे ऊँचे शिखर पर ले जाने में समर्थ है। कभी-कभी इससे आपमें निरंकुशता आ जाती है। इससे कई कठिनाइयाँ पैदा हो जाती हैं। आपको चाहिए कि आप दूसरों की बात को भी सुनें और उसके बाद ही निर्णय लें। समय-समय पर स्वयं की आलोचना करना भी श्रेष्ठ गुण कहा जाता है।

आपका आदर्श वाक्य

जीवन में आपने जितने परिवर्तन देखे हैं उतने बहुत ही कम लोग देख पाते हैं। आप साहस से काम लें और इसी प्रकार निरन्तर आगे बढ़ते रहें तो निश्चय ही आप समाज में अपने-आपको अग्रणीय

स्थान पर स्थापित कर सकते हैं।

अंक तीन व उनका चरित्र

आपमें कल्पना-शक्ति विशेष रूप से है। आपका व्यक्तित्व कोमलता, भावुकता, मधुरता जैसे दिव्य गुणों से ओतप्रोत है। यद्यपि आप एक ही बिन्दु पर ज्यादा समय तक स्थिर नहीं रह पाते परन्तु फिर भी आप नित्य नवीन प्रकार से सोच सकते हैं और उसके अनुसार कार्य करके सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

आपका व्यक्तित्व कोमल, कल्पना-प्रधान है। सहृदयता, परोपकार, मोह-ममता आदि की प्रधानता होने के कारण आप शारीरिक दृष्टि से भले ही बलवान न हों परन्तु मानसिक दृष्टि से आप सबल हैं फलतः दिमागी कार्यों से ही आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपकी जुबान में 'ना' शब्द नहीं है, परन्तु इससे कई बार नई समस्याएँ भी पैदा हो जाती हैं।

आपका सक्रिय जीवन

दूसरों को सम्मोहित करना आपका विशेष ज्ञान है और अपरिचित को अपने अनुकूल बना लेना आपका गुण है परन्तु कभी-कभी कल्पनाशील होने के कारण आपको आलोचना का भी सामना करना पड़ता है परन्तु आप इसकी परवाह नहीं करते।

मानसिक सन्तुलन

आपके मस्तिष्क में कई प्रकार की कल्पनाएँ आती-जाती रहती हैं, इसी वजह से निरन्तर मानसिक संघर्ष बना रहता है। निराशा एवं हीन भावना आपमें अधिक रहती है और कार्य करने के बाद आप कई बार पछताते हैं कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

यों आप समझदार एवं सतर्क व्यक्ति हैं पर कार्य का प्रारम्भ आप

जितने उत्साह से करते हैं उसकी समाप्ति उतने उत्साह से नहीं होती।

कार्य-पद्धति

आपका मस्तिष्क कभी भी खाली नहीं रहता अपितु वह नई-नई कल्पनाएँ संजोता रहता है। शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम में आपको ज्यादा अनुकूलता अनुभव होती है। आत्म-विश्वास का अभाव होने के कारण कई बार आप सही समय पर कार्य प्रारंभ करने से चूक जाते हैं और बाद में पछतावा भी रहता है।

सहयोग व जन-सम्पर्क

आप अर्थ के पीछे दीवाने नहीं हैं अपितु ज्ञानपिपासु सही रूप में आप कहे जा सकते हैं। किसी चीज की गहराई में जाने की आपमें भावना रहती है। वातावरण को अनुकूल बना लेने में आप सिद्धहस्त हैं। एकान्त आपको प्रिय नहीं होता। मित्रों की तरफ से आपको बराबर धोखा मिलता रहता है।

जीवन-रहस्य

आपके जीवन का रहस्य इस बात में निहित है कि आप किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में स्वयं को प्रसन्नचित्त रख सकते हैं। हर समय मुस्कराते रहना आपका विशेष गुण है। चाहे कितनी ही बाधाएँ आ जाएँ आप विचलित नहीं होते और चुपचाप धैर्यपूर्वक आत्मविश्वास रखते हुए अपने कार्य को करते रहते हैं।

जन्मजात प्रवृत्ति

मित्रता निभाने तथा नेतृत्व करने का आपमें जन्मजात गुण है और यह गुण जितना ही ज्यादा विकसित होगा, आपको उतनी ही ज्यादा सफलता मिलेगी। आपको कई बार अपने स्वयं को परखना चाहिए और उसके अनुकूल ही अपना कार्य बनाना चाहिए।

आपका आदर्श वाक्य

आपने बचपन से ही संघर्ष झेला है अतः आप किसी भी प्रकार का संघर्ष झेल सकते हैं। आप आत्मविश्वास बनाए रखें और कर्म-पथ पर आगे बढ़ते रहें, यही आपका आदर्श वाक्य होना चाहिए।

अंक चार व उनका चरित्र

दृढ़ता, कार्यक्षमता तथा श्रम का आप सही-सही मूल्यांकन करना जानते हैं। विपत्ति की पाठशाला में पढ़कर ही आपके व्यक्तित्व का विकास हुआ है। आप भावुक हैं और इस भावुकता के कारण ही आर्थिक दृष्टि से व्यय ज्यादा होता है। पैसे को आप हाथ का मैल समझते हैं, पर जब पैसा हाथ में नहीं होता तो आप परेशान भी अधिक होते हैं।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

आप स्वभाव से भावुक हैं। यथार्थवादी होते हुए भी कल्पना की ऊंची उड़ान भरने से नहीं चूकते। महत्त्वाकांक्षाएं बहुत बढ़ी-चढ़ी रहती हैं। तुच्छता तथा हल्कापन आपको पसन्द नहीं। छोटा पद, छोटा व्यवसाय और कोई-भी छोटा कार्य आपको कम पसन्द रहता है। उच्च पदस्थ व्यक्तियों को देखकर आप भी ऊंचा उठने का प्रयास करते हैं और इस कारण कई बार मित्र भी शत्रुवत् व्यवहार करने लग जाते हैं।

आपका सक्रिय जीवन

आप अपने ही हाल में मस्त रहने वाले हैं अतः आप न तो किसी दूसरे के कार्य की नुक्ताचीनी करते हैं और न ही अपने निजी कार्य में किसी का हस्तक्षेप पसन्द करते हैं। प्रेम के क्षेत्र में आप सदैव असफल रहे हैं अतः प्रेम या लव आपकी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। पत्नी-प्रेम की ओर से आप निश्चिंत बने रहेंगे तथा उनसे भरपूर सहयोग भी मिलेगा।

मानसिक संतुलन

अपने व्यक्तित्व की गरिमा से आप दूसरे व्यक्तियों को बहुत जल्दी प्रभावित कर लेते हैं, पर थोड़ी-सी नुक्ताचीनी या विरोध आपकी प्रकृति से मेल नहीं खाता। भाइयों से या सगे-सम्बन्धियों से किसी प्रकार का कोई सहयोग नहीं मिलेगा। धर्म के पक्ष में आप समन्वयवादी नीति लेकर चलते हैं। देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को मोड़ने की क्षमता आपमें है। पाखण्ड और दिखावे से दूर जो भी यथार्थ है, वही आपको मान्य है।

कार्य-पद्धति

दैनिक जीवन के कार्यों में भी आप सरलता, ईमानदारी तथा उदारता का उपयोग करते हैं। जल्दी निर्णय न लेने से कई बार आपको मानसिक घुपड़न बना रहता है। अनुशासन की दृष्टि से कठोर नियंत्रण के आप पक्षधर हैं। स्वयं अनुशासनप्रिय हैं तथा आप चाहते हैं कि बच्चे भी पूरी तरह से अनुशासन में रहें।

सहयोग व जन-सम्पर्क

आप नवीनता के उपासक तथा पुरातनता का विरोध करते हैं। शुद्ध तर्कसंगत तथा मानवीय भावनाओं से युक्त विचारों को आप तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं। जिस कार्य को आप करते हैं, समयानुकूल उसमें परिवर्तन भी करते रहते हैं। ऐश्वर्य के साधनों तथा मित्र-मण्डली में आप बढ़-चढ़कर खर्च कर डालते हैं, फलस्वरूप प्रायः अर्थाभाव बना रहता है।

जीवन-रहस्य

आपके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि आप विपरीत से विपरीत परिस्थितियों की भी परवाह नहीं करते तथा अनुशासन के माध्यम से आप उन विपरीत परिस्थितियों से भी निकल आते हैं।

सुडौल देह व सरकारी नौकरी आपको प्रिय है तथा जीवन में संयम, मर्यादा, धर्म, कर्तव्यपालन, अनुशासनता आपका प्रधान जीवन-रहस्य है।

जन्मजात प्रवृत्ति

गहरी निद्रा, स्वादिष्ट भोजन, कठोर परिश्रम, सजावट, सम्पन्नता, आराम आदि आपके जीवन की विशेषताएँ हैं। बाल्यावस्था के बाद धीरे-धीरे उम्र बढ़ने के साथ-साथ यश की कामना भी बढ़ती जा रही है। समाज-सुधार के कार्यों में आप बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। नेतृत्व करने की प्रवृत्ति जन्मजात है, पर साथ ही साथ व्यर्थ का वादविवाद, दूसरों की आलोचना या टीका-टिप्पणी आपको पसन्द नहीं रहती।

आपका आदर्श वाक्य

बचपन से ही आपके जीवन में संघर्ष रहा है, हिम्मत एवं साहस की आपके जीवन में कमी नहीं रही है, परन्तु ठीक समय पर ठीक निर्णय न लेने के कारण जीवन में असफलता आना स्वाभाविक है। अर्थोपार्जन, कठोर परिश्रम, धार्मिक भावना, यश-सम्मान तथा उन्नति की ओर निरन्तर अग्रसर होना ही आपका आदर्श वाक्य है।

अंक पाँच व उनका चरित्र

उथल-पुथल से भरा आपका जीवन वास्तव में ही आदर्श जीवन है। सुघड़, सुरुचिपूर्ण तथा सुन्दर जीवन जीने की कला आपको आती है। लगातार 'क्रियाशील रहना एक ऐसा गुण है जिस पर आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व जगमगाता रहता है। आप हँसमुख, मिलनसार तथा शीघ्र ही घुल-मिल जाने वाले व्यक्ति हैं। अतः आपका व्यक्तित्व व्यवस्था, सादगी, सुरुचि, सुघड़ता आदि गुणों का सम्मिलित रूप है।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

आप यथार्थवादी तथा व्यावहारिक व्यक्ति हैं, इसीलिए आप

व्यर्थ में अपना समय व्यय नहीं करते। धन का अभाव रहते हुए भी आप मुक्त हस्त से व्यय करते रहते हैं। गम्भीरता आपको पसन्द है। गम्भीर विषय पर चिन्तन तथा मनन करने में आपको विशेष आनन्द आता है। कोई भी कार्य करने से पूर्व उस पर खूब सोच-समझ लेना आपका मुख्य गुण है।

आपका सक्रिय जीवन

आप अधिक समय तक अकेले नहीं रह सकते। मित्रों पर आप जरूरत से ज्यादा विश्वास करते हैं तथा बहुत जल्दी निराशा भी आपके जीवन में आ जाती है। कोई भी कार्य आपसे प्रेमपूर्वक तो करवाया जा सकता है परन्तु दबाव में लाकर आपसे कोई भी कार्य नहीं करवाया जा सकता।

मानसिक संतुलन

आप दूसरे लोगों की भावनाओं व विचारों का खूब आदर करते हैं। किसी के दिल-दिमाग को दुखाना आपने सीखा नहीं है। जो भी मिलता है उसे आप अपना मित्र मान बैठते हैं और फलस्वरूप आप धोखा खा जाते हैं तथा परेशानियों में फंस जाते हैं। आपको चाहिए कि आप इस पर पूरी तरह से नियंत्रण करें। धैर्य की अपेक्षा आपमें उतावलापन कुछ ज्यादा है। यह उतावलापन आपके लिए शोभनीय नहीं।

कार्य-पद्धति

आप प्रतिदिन जो कार्य करते हैं उसपर आपके सौन्दर्य-बोध तथा कुशाग्र बुद्धि की भी छाप रहती है। लापरवाही या अव्यवस्थित ढंग से कोई भी कार्य करना आपको पसन्द नहीं। किसी भी प्रकार की कुरूपता आपको सहन नहीं होती। आप मिलनसार तथा व्यवहार-कुशल हैं। दूसरों से अधिक घुलमिलकर उसके मन का भेद सहज ही ताड़ लेते हैं।

सहयोग व जन-सम्पर्क

आप आधुनिकता के पुजारी हैं। आपके कर्मक्षेत्र, व्यापार, नौकरी, घरेलू जीवन आदि सभी में आधुनिकता दिखाई देती है। आपकी विषयगत पकड़ अत्यन्त मजबूत है। वातावरण को अनुकूल बनाने की आपमें अद्भुत क्षमता है। आपके चेहरे पर हर समय मुस्कराहट छाई रहती है। इस मुस्कराहट में जैसा आकर्षण है, वैसा दूसरों में बहुत कम देखने को मिलता है।

जीवन-रहस्य

आपके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि विपरीत से विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने की क्षमता आपमें है। बाधाएँ आपको अपने इच्छित मार्ग से हटा नहीं सकतीं। कठिन परिस्थितियों में भी आप न तो हिम्मत हारते हैं और न धैर्य खोते हैं, उल्टे आप शान्तिपूर्वक आगे बढ़ते रहते हैं।

जन्मजात प्रवृत्ति

आधुनिकता एवं सौन्दर्य के प्रति विशेष रुचि बनाए रखना ही आपका विशिष्ट गुण है और इस पर श्रम, समय व धन भी व्यय होता है। आपको चाहिए कि आप आत्मलोचन करें और अपनी कमियों को दूर करने का प्रयत्न करें।

आपका आदर्श वाक्य

आप व्यवस्थित ढंग से जीवन जीने में विश्वास रखते हैं। आप गृहस्थी में भी सभी सुख-सुविधाएँ चाहते हैं। आपको चाहिए कि आपका लक्ष्य सामने रहे तो निश्चय ही आप अपनी मंजिल पर ठीक समय पर पहुँच सकेंगे।

अंक छः व उनका चरित्र

आपके जीवन में आकस्मिक घटनाएँ ज्यादा घटती हैं। आपके

जीवन में जो भी घटनाएं घटित हुई हैं वे सब आकस्मिक रूप से ही घटित हुई हैं। आपके व्यक्तित्व की विशेषता इसी बात में है कि आप ऐसी स्थिति आने पर विचलित नहीं होते अपितु सही ढंग से कार्य सम्पन्न कर वातावरण को अनुकूल बना लेते हैं।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। इसका कारण है आप जीवन में यथार्थवादी तथा व्यावहारिक हैं। जीवन में कई कार्य तो मात्र आपके भव्य व्यक्तित्व के कारण ही हो जाते हैं। चाटुकारिता तथा झूठी प्रशंसा से आपको घृणा है। स्पष्ट और दो-टूक, मगर समय और स्थान का विचार कर बात कहना आपके व्यक्तित्व की विशेषता कही जा सकती है।

आपका सक्रिय जीवन

आपने अपने जीवन में स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा स्वतन्त्र निर्णय को ही स्थान दिया है। किसी के अनुचित दबाव में आकर आप कार्य नहीं कर सकते। एक बार आप जो निर्णय ले लेते हैं उस पर अटल रहते हैं। जरा-जरा-सी बात पर अपने निर्णय को बदलना आपका स्वभाव नहीं।

मानसिक संतुलन

संघर्ष एवं विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रहना ही आपके व्यक्तित्व की विशेषता है। आपके जीवन की सफलता का कारण आपकी सही निर्णयशक्ति, मानसिक सन्तुलन तथा दूरदर्शिता है। वास्तव में ही आपका मानसिक सन्तुलन समय के अनुकूल रहता है।

कार्य-पद्धति

आप स्वभाव से ही चतुर एव प्रसन्नचित्त रहने वाले व्यक्ति हैं

इसलिए त्वरित निर्णय, बुद्धि, चतुराई, मेल-जोल तथा अपने व्यक्तित्व के माध्यम से कार्य भली प्रकार से सम्पन्न कर लेते हैं और जीवन में सफलता की ओर निरन्तर अग्रसर होते रहते हैं।

सहयोग व जन-सम्पर्क

आपका यह स्वभाव है कि आप किसी भी क्षेत्र में, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक; राजनैतिक या धार्मिक हो, आप उसमें नेतृत्व करने की क्षमता रखते हैं और जन-सम्पर्क के माध्यम से इस नेतृत्व में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। वातावरण व परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने की कला आपमें विशेष रूप से है।

जीवन-रहस्य

आपके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि आप विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कराते रहते हैं और कठिनाइयों में आप निर्भीकता से आगे बढ़कर परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेते हैं।

जन्मजात प्रवृत्ति

नेतृत्व करने की कला आपमें जन्मजात है और इसी सद्गुण से आप आगे बढ़ सके हैं। जीवन में यही गुण आपको सफलता के सर्वोच्च शिखर पर ले जाने में समर्थ होगा।

आपका आदर्श वाक्य

ऊँचे आदर्श के लिए जीना आपके जीवन का चरम लक्ष्य है। यदि आपका लक्ष्य सामने रहा तो निश्चय ही हिम्मत के बल पर आप समाज के अग्रगण्य लोगों में गिने जाएँगे।

अंक सात व उनका चरित्र

आपका व्यक्तित्व ही आपकी असली पूँजी है। आप जितने अधिक

व्यक्तियों के साथ निकटता उत्पन्न करेंगे आपके व्यक्तित्व में उतना ही ज्यादा निखार आता रहेगा।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

हकीकत में आप वास्तविक जीवन जीने के आदी हैं। खाली कल्पनाओं तथा गप्पों में आप विश्वास नहीं करते। दो विपरीत विचारधाराओं में भी आप अपनी बुद्धि से सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। किसी भी व्यक्ति को धोखे में नहीं रखते अपितु वास्तविकता को सही रूप में उसके सामने रख देते हैं। यही आपकी महानता है।

आपका सक्रिय जीवन

स्वयं हानि उठाकर भी सामने वाले की इच्छापूर्ति एवं वचन-रक्षा करना आपका कर्तव्य है। ऐसा मानकर चलते हैं। आपने अपने जीवन में पैसे की अपेक्षा प्यार को ही ज्यादा महत्त्व दिया है।

मानसिक सन्तुलन

विपरीत परिस्थितियों में भी आप अपने मानसिक सन्तुलन को ज्यों का त्यों बनाए रखते हैं। धार्मिक भावनाओं में आप समन्वय-वादी हैं। व्यर्थ के पाखण्ड में आप विश्वास नहीं रखते।

कार्य-पद्धति

आप अपने दैनिक जीवन में जो भी कार्य करते हैं, उसमें बुद्धि का पूरा-पूरा योगदान रहता है। कोई भी कार्य लापरवाही या अव्यवस्थित रूप से करना आपको प्रिय नहीं है। प्रत्येक कार्य में मौलिकता ही आपके व्यक्तित्व की विशेषता कही जा सकती है।

सहयोग व जन-सम्पर्क

आपके पास आधुनिकतम जानकारी रहती है। जो भी कार्य आप

अपने हाथ में रखते हैं उसके बारे में पूरी जानकारी बनाए रखना आपका स्वभाव है। विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाए रखने की क्षमता आपमें है।

जीवन-रहस्य

बाधाएँ आपको विचलित नहीं कर सकतीं, कठिनाइयों से आप हताश नहीं होते और चुपचाप अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं—यही आपके जीवन का रहस्य है।

जन्मजात प्रवृत्ति

नेतृत्व करने की प्रवृत्ति आपमें जन्मजात है। यह गुण जितना ही ज्यादा विकसित होगा आप उतने ही ज्यादा अपने कार्य के क्षेत्र में सफल रहेंगे। प्रदर्शन छोड़कर वास्तविकता की तरफ बढ़ना ही आपके जीवन का ध्येय होना चाहिए।

आपका आदर्श वाक्य

जीवन को एक ऊँचे आदर्श के लिए खपा देना आपका स्वभाव होना चाहिए। क्रोध पर नियन्त्रण रखकर धैर्य के साथ आगे बढ़ेंगे तो निश्चय ही आप अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर लेंगे।

अंक आठ व उनका चरित्र

चुम्बकीय आकर्षण लिए हुए आपका व्यक्तित्व ही आपके जीवन की पूंजी है। निरन्तर गतिशील बने रहना आपका स्वभाव है और शत्रु पक्ष को भी स्नेह से वशीभूत करना आपका स्वभाव है। आप अतिथि-सत्कार व धर्म-कर्म में पूर्णतया विश्वास रखने वाले हैं।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

संघर्षशील आपका जीवन रहा है। आपके चेहरे को देखकर कोई भी आपके मन की बात नहीं जान सकता। आपकी वृत्ति अन्तर्मुखी

है अतः आप बिना प्रदर्शन किए चुपचाप शान्ति व धैर्य से अपना कार्य करते रहते हैं।

आपका सक्रिय जीवन

आप स्वभाव से ही शांत, एकान्तप्रिय तथा ठोस कार्य करने में विश्वास रखने वाले हैं। आपका व्यक्तित्व ऊपर से जहाँ कठोर है, वहीं भीतर से अत्यन्त कोमल है। इसीलिए आप अपने जीवन में गतिशील हैं।

मानसिक सन्तुलन

आप घोर महत्त्वाकांक्षी हैं। ऊपर उठने की चाह आपमें निरन्तर बनी रहती है। नेतृत्व आदि में आप जरूरत से ज्यादा व्यय कर डालते हैं अतः आपको इस सम्बन्ध में सावधानी बरतनी चाहिए।

कार्य-पद्धति

आप बिना हो-हल्ला किए चुपचाप कार्यरत रहना ज्यादा पसन्द करते हैं। आपको घटिया स्तर पसन्द नहीं है। जीवन में छोटे कार्य से आप सन्तुष्ट नहीं रहते। ऊँचा कार्य व भव्य व्यक्तित्व आपके मन की भावना के अनुकूल हैं।

सहयोग व जन-सम्पर्क

आपकी मूलभूत विशेषता प्रत्येक के साथ विश्वास करने की है। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के कारण सामाजिक जीवन से अलग-थलग रहकर निरन्तर कार्य करते रहते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी रुचि प्रारम्भ से ही रही है।

जीवन-रहस्य

आपके व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि आप जब किसी के मित्र हैं तो हर प्रकार से उसकी सहायता करते हैं, परन्तु जब किसी पर क्रोधित हो जाते हैं तो उसका सर्वनाश करने के लिए उतावले हो

उठते हैं। आपके जीवन को और विचारों को आसानी से कोई भी नहीं समझ सकता।

जन्मजात प्रवृत्ति

मूलतः आप भौतिकवादी व्यक्ति हैं। पैसे को आप अपने जीवन में जरूरत से ज्यादा महत्त्व देते हैं। आपको चाहिए कि आप समाज-सेवा भी करें और दूसरों की सहायता करना तथा उनके लिए समय व्यतीत करना भी व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है।

आपका आदर्श वाक्य

जीवन की सार्थकता सही ढंग से जीने में है। एक आदर्श के लिए स्वयं को अर्पण कर देना ही जीवन का सही मूल्यांकन है और यही भावना आपके मन में बराबर बनी रहती है।

अंक नौ व उनका चरित्र

मुसीबत के समय आपकी कार्यक्षमता दुगुनी हो जाती है। आप अपने जीवन में किसी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ते तथा अपने पथ से विचलित नहीं होते। यही आपके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है।

व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण

न तो आप कल्पना में जीवित रहते हैं और न किसी से असत्य कहते हैं। मुँह के सामने स्पष्ट कह देना आपका स्वभाव है और इससे कई बार परेशानियाँ भी आ जाती हैं। हमेशा काम में लगा रहना तथा निरन्तर आगे बढ़ना ही आपके व्यक्तित्व की विशेषता है।

आपका सक्रिय जीवन

दूसरों को सहायता करना तथा उन्हें ऊँचा उठाना आपके जीवन का स्वभाव है। अपने तरीके से कार्य को करते रहना आपके व्यक्तित्व की विशेषता बन गई है।

मानसिक सन्तुलन

आपके जीवन में यद्यपि उतार-चढ़ाव आते रहते हैं पर इनसे आप विचलित नहीं होते अपितु सही निर्णय लेकर कार्य को अपने अनुकूल बना लेते हैं।

कार्य-पद्धति

आपके व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि सही-सही बात किसीको भी कह दी जाए, चाहे वह कितना ही बड़ा व्यक्तित्व हो। इससे आपके व्यक्तित्व में निखार ही आता है।

सहयोग व जन-सम्पर्क

जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में ऊँचा उठना आपकी इच्छा रहती है। आप अपने हाथ में जो भी कार्य लेते हैं जब तक आप उस कार्य को पूरा नहीं कर लेते, चैन से नहीं बैठते। मनुष्य को समझने व उससे काम निकालने की आपमें अद्भुत क्षमता है।

जीवन-रहस्य एवं जन्मजात प्रवृत्ति

जैसी परिस्थिति होती है अपने आपको उसके अनुरूप ढाल देना ही आपके जीवन का रहस्य है। निर्भीकता आपके जीवन का सबसे बड़ा गुण है।

नेतृत्व करने की आपमें जन्मजात प्रवृत्ति है और उर्वर मस्तिष्क तथा घोर परिश्रम करना आपके जीवन का विकास है।

आपका आदर्श वाक्य

आपके जीवन का एक ही लक्ष्य है—जीवन में ऊँचा उठना और कुछ इस प्रकार से रोशनी बिखेरना कि आपके व्यक्तित्व से सारा विश्व जगमगा उठे। एक ऊँचे आदर्श के लिए जीना आपके जीवन का आदर्श वाक्य है।

वस्तुतः प्रत्येक अंक की मूलभूत विशेषताएँ होती हैं और उन्हीं विशेषताओं को संक्षेप में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

प्रवेश

अंक-विज्ञान विश्व का सर्वाधिक प्राचीन एवं नवीनतम विज्ञान है। प्राचीन इसलिये कि भारतीय ऋषियों, विज्ञानविदों एवं भविष्य-वेत्ताओं को इसका सांगोपांग ज्ञान था और नवीनतम इसलिये कि जिस रूप में आजकल इसका अध्ययन किया जा रहा है उसके अनुसार वह प्राचीन पद्धति से हटकर अपनी एक नवीन सत्ता के साथ आगे बढ़ रहा है।

अंक-विज्ञान का अध्ययन करने के लिए मस्तिष्क का सन्तुलन परमावश्यक है। यदि मस्तिष्क एकाग्र न हो सके तो इस विज्ञान के मूल में नहीं पहुँचा जा सकता। अंक-विज्ञान एक रहस्य है, एक ऐसा रहस्य जो अपने आप में मानव के सुख-दुःख, भूत-भविष्य आदि को समेटे हुए है।

यह समस्त विश्व व्यष्टिगत होते हुए भी समष्टिगत है, इसकी विविधता में भी एकता है। विश्व में जो कुछ भी, जैसा भी और जितना भी दिखाई देता है, उसके मूल में मुख्यतः पाँच तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—ही हैं। इन पाँचों तत्त्वों के मिलन से ही यह दुनिया इतनी रंगीन, विचित्र एवं विविधतापूर्ण है। तत्त्वों की न्यूनाधिक्यतर

से ही यह विरोधाभास एवं अनेकता दिखाई देती है। समस्त खगोल के ग्रह भी इन पाँचों तत्त्वों से ही निर्मित हैं, परन्तु ये तत्त्व सभी में समान नहीं हैं। इन तत्त्वों के अनुपात को ही ध्यान में रखकर महर्षियों ने ग्रहों की अलग-अलग जप संख्या निर्धारित की है। सूर्य की ७०००, चन्द्रमा की ११,०००, मंगल की १०,०००, बुध की ९,०००, गुरु की १९,०००, शुक्र की १६,०००, शनि की २३,०००, राहु की १८,००० तथा केतु की १७,००० जप संख्या के मूल में यही अंक-विज्ञान काम कर रहा है। मंत्रों में शब्द संख्या पर भी विशेष बल है, २४ शब्द, ३२ शब्द तथा ६३ शब्दों के मंत्रों का निर्माण भी इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि 'शब्द' और संख्या का पारस्परिक सम्बन्ध घनिष्ट है।

भारतीय विद्वानों तथा महर्षियों ने अंकों की महत्ता काफी पहले समझ ली थी। अंकों का मूल शून्य में माना और शून्य को सर्वाधिक महत्व दिया। एक शून्य ही किसी अंक की शक्ति को दस गुना बढ़ाने के लिए पर्याप्त है। पंच तत्त्वों के मूल आकाश को भी महत्ता देने के लिये उसे शून्य से संबोधित किया तथा यह भी स्पष्ट किया कि जहाँ और कुछ नहीं है अथवा जिस जगह पर अन्य किसी भी तत्त्व की गति नहीं, वहाँ शून्य या आकाश सहज ही प्राप्य है। यही नहीं, अपितु उन्होंने तो ग्रहों के जाप में भी विविध मालाओं की महत्ता स्पष्ट की। मोक्ष प्राप्ति के लिए २५ मणियों की माला, धन प्राप्ति एवं लक्ष्मी सिद्धि के लिये ३० मणियों की माला, स्वार्थ सिद्धि के लिये २७ मणियों की माला, प्रिया प्राप्ति के लिये ५४ मणियों की माला और समस्त प्रकार की सिद्धि करने के लिये १०८ मणियों की माला का विधान कर अंकों की महत्ता को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है।

प्रत्येक शुभ कार्य यथा हवन, जप आदि में भी १०८ मणियों की माला को प्रधानता प्राप्त है और इस अंक को शुभ माना गया है। यदि मूल में जावें तो हमें पता चलेगा कि इसके पीछे भी व्यवस्थित वैज्ञानिक रहस्य है।

ऋषियों ने काल की गणना काफी पहले कर ली थी। जीवन,

जगत् और सृष्टि का प्राणाधार सूर्य है, जो कि एक मास में एक वृत्त पूरा कर लेता है। खगोलीय वृत्त ३६० अंशों के निर्मित है और यदि इसकी कलाएँ बनाई जायें तो ३६०×६०=२१६०० सिद्ध होती हैं। चूँकि सूर्य ६ महीने उत्तरायन तथा शेष ६ महीने दक्षिणायन में रहता है, अतः एक वर्ष में दो अयन होने से यदि इन कलाओं के दो भाग करें तो एक भाग १०८०० सिद्ध होता है। सामंजस्य हेतु अंतिम बिन्दुओं से संख्या को मुक्त कर दें तो शुद्ध संख्या १०८ बच रहती है, इसीलिये भारतीय धर्म ग्रंथों में उत्तरायण सूर्य के समय सीधे तरीके से तथा दक्षिणायन सूर्य के समय अपसव्य तरीके से १०८ मणियों की माला फेरने का विधान है, जिससे कार्यसिद्धि में पूर्ण सफलता मिलती है।

भारतीय कालगति में एक दिन-रात का परिमाण ६० घड़ी माना है, जिसके ६०×६०=३६०० पल तथा ३६००×६०=२१६००० विपल सिद्ध होते हैं, इस प्रकार इसके दो भाग करने से १०८००० विपल दिन में तथा १०८००० विपल रात्रि में सिद्ध होते हैं और शुद्ध शुभकार्य में अहोरात्र का पूर्व भाग दिन को ही उत्तम माना है, जिसके विपल १०८००० हैं, अतः उस शुभ कार्य में १०८ मणियों की माला को प्रधानता देना तर्कसंगत और वैज्ञानिक ही तो है।

किसी एक जंगल में एक जगह चीनी बिखेर दें तथा उससे १५-२० गज दूर बकरा बाँध दिया जाये तो चीनी की गंध से खिचकर चींटे चीनी के पास जुट जायेंगे, बकरे के पास नहीं। इसी प्रकार शेर बकरे की गंध पाकर उस ओर खिचा चला आयेगा, चीनी की ओर नहीं। अतः यह स्पष्ट है कि समानधर्मा वस्तुएँ परस्पर एक दूसरे को खींचती हैं अथवा आकर्षित करती हैं। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक संख्या या प्रत्येक अंक समानधर्मी अंक को अपनी ओर खींचता है। एक का अंक, एक अंक से संबंधित व्यक्ति या वस्तु को अपनी ओर खींचेगा तथा परस्पर प्रगाढ़ मैत्री स्थापित कर सकेगा, अतः वे व्यक्ति जिनका मूलांक एक है, एक मूलांक वाले व्यक्तियों की ओर सहज ही आकृष्ट होंगे। विरोधी अंकों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों की मित्रता

नहीं निभ सकती और न ऐसे युगलों का दाम्पत्य-जीवन ही कभी सुखी रह सकता है।

अतः जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है, कि हम अंकों का महत्व समझें, मूलांक को पहचानें, फिर यह निर्णय लें कि क्या यह व्यक्ति मेरे लिये उपयोगी है ? क्या इसे भागीदार बनाया जा सकता है ? क्या इसके साथ जीवन-निर्वाह हो सकेगा, आदि-आदि।

'अंक-ज्योतिष' ऐसा ही साधन है, जिसके द्वारा हम प्रत्येक दिन, प्रत्येक समय और प्रत्येक घण्टे तक का भविष्य जान सकते हैं। किसी अधिकारी से कब और किस समय मिलें, जिससे कार्य सिद्ध हो सके, किस मूलांक वाले प्रेमी या प्रेमिका से संबंध स्थापित करें जो चिरायु हो सके, प्रेमिका को मिलने का कौन-सा समय दिया जाय ? किसी अधिकारी, फर्म या व्यापारी को किस दिन पत्र लिखा जाय जिससे मन्तव्य सफल हो सके, आदि बातों पर विचार करने तथा जीवन में शीघ्र सफलता प्राप्ति के लिये अंक-ज्योतिष का सहारा लेना आवश्यक है।

अंक-विद्या

भारतीय ज्योतिष में मूल रूप से नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है, अतः अंक-विद्या में भी प्रथम नौ अंकों की ही प्रधानता मानी जाती है। इसके पश्चात् के अंक 'संयुक्त संख्या' के रूप में जाने जाते हैं। एक से नौ तक के अंक 'मूलांक' कहलाते हैं, दस और उसके बाद की

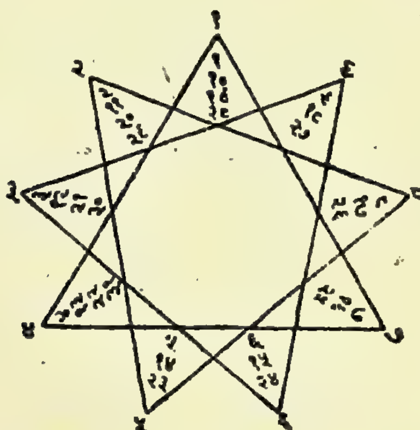
संख्या को जोड़कर उसके मूलांक बनाये जाते हैं। चूंकि किसी भी अंग्रेजी मास में ३१ से अधिक दिन नहीं होते, अतः ३१ की संख्या तक के मूलांक आगे स्पष्ट किये जा रहे हैं।

मूलांक

१ = १
२ = २
३ = ३
४ = ४
५ = ५
६ = ६
७ = ७
८ = ८
९ = ९
१०=१+०=१
११=१+१=२
१२=१+२=३
१३=१+३=४
१४=१+४=५
१५=१+५=६
१६=१+६=७
१७=१+७=८
१८=१+८=९
१९=१+९=१०=१+०=१
२०=२+०=२
२१=२+१=३
२२=२+२=४
२३=२+३=५
२४=२+४=६

२५=२+५=७
२६=२+६=८
२७=२+७=९
२७=२+८=१०=१+०=१
२९=२+९=११=१+१=२
३०=३+०=३
३१=३+१=४

यदि इससे आगे भी किसी संख्या का मूल अंक निकालना हो तो इसी प्रकार प्रत्येक अंक को परस्पर जोड़कर अंतिम एक अंक निकाला जा सकता है, जो मूलांक कहलायेगा। उदाहरणार्थ, २८३५४२ संख्या का मूलांक ज्ञात करना है, तो इस संख्या के सभी अंकों को परस्पर जोड़ लिया जाय। २+८+३+५+४+२=२४ अब इन २४ को भी परस्पर जोड़ लिया जाय २+४=६, अतः यह सिद्ध हुआ कि उपर्युक्त संख्या २८३५४२ का मूलांक ६ है।



संसार के प्रत्येक व्यक्ति का जन्म अंग्रेजी पद्धति से किसी मास में

एक से ३१ तारीख के बीच में ही होता है, अतः जन्म तारीख से मूलांक सहज ही ज्ञात किया जा सकता है, उदाहरणार्थ, जिन व्यक्तियों का जन्म किसी भी मास की १, १०, १९ और २८ तारीखों को होता है तो उस व्यक्ति का मूलांक एक होगा। इसी प्रकार २, ११, २० और २९ तारीखों में जन्म लेने वाले व्यक्ति का मूलांक दो होता है। आगे के चक्र से आप सहज ही अपना मूलांक ज्ञात कर सकते हैं।

मूलांक १, २, ३, ४ चार-चार तारीखों का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन मूलांक ५, ६, ७, ८ और ९ तीन-तीन तारीखों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिये कुछ विद्वान पहले चार अंकों को 'वृहद मूलांक' तथा शेष पांच मूलांकों को 'लघु मूलांक' भी कहते हैं।

उपर्युक्त नौ मूलांकों का ग्रहों से संबंध निम्न प्रकारेण है :

ग्रह	मूलांक
सूर्य	१
चंद्रमा	२
वृहस्पति	३
हर्षल	४
बुध	५
शुक्र	६
वरुण	७
शनि	८
मंगल	९

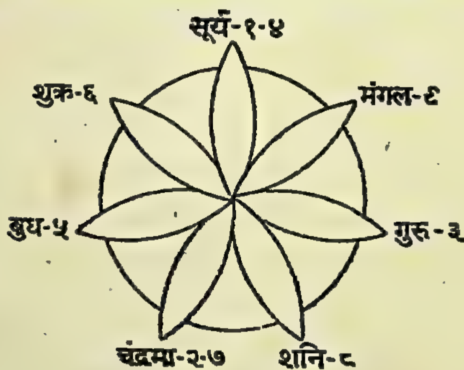
जिस व्यक्ति का जो मूलांक होता है, उस मूलांक से संबंधित ग्रह ही उस व्यक्ति के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है और अपनी आदत, स्वभाव तथा लक्षण के अनुसार उस व्यक्ति के जीवन को ढालता है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति का जन्म १८ तारीख को हुआ तो १८ का मूलांक ९ है, जिसका प्रतिनिधि ग्रह मंगल है, अतः यह स्पष्ट है कि उस व्यक्ति के स्वभाव, रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार आदि पर मंगल का ही आधिपत्य रहेगा और मंगल ग्रह से संबंधित विशेषताएं उस

व्यक्ति के जीवन में सहज ही पाई जायेंगी। वह हृष्ट-पुष्ट, ऊँचे कद-काठ का तथा अक्खड व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति होगा। निर्भीकता उसका प्रधान गुण होगा तथा वह ऐसे कार्यों, नौकरी अथवा व्यवसाय में रुचि लेगा, जो मार-काट से संबंधित हों। ऐसे व्यक्ति सफल पुलिस आफीसर या फौज में पदाधिकारी होते हैं।

उपरोक्त नौ मूलांक सातों वारों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कि इस प्रकार है।

रविवार	१,४
सोमवार	२,७
मंगलवार	९
बुधवार	५
गुरुवार	३
शुक्रवार	६
शनिवार	८

उपर्युक्त सात वारों में रविवार दो अंकों १ तथा ४ एवं सोमवार भी दो अंकों २ तथा ७ का प्रतिनिधित्व करता है, बाकी सभी वार एक-एक अंक का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिये सूर्य तथा चंद्र को



'द्विस्वांक' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। इसका तात्पर्य यह भी है कि सूर्य 'यूरेनस' का तथा चंद्र 'नेपच्यून' का प्रतिनिधित्व करता है। यह भी देखा गया है कि एक मूलांक वाले व्यक्ति चार मूलांक वाले व्यक्तियों से घनिष्ठ मित्रता रखते हैं, इसी प्रकार दो मूलांक वाले व्यक्तियों की मित्रता सात मूलांक वाले व्यक्तियों के साथ भी देखी गई है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिन व्यक्तियों का जन्म १, १०, १९ तथा २८ तारीखों को हुआ है वे ४, १३, २२, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों के घनिष्ठ मित्र एवं विश्वासी होते हैं।

पृष्ठ १६ के चित्र से प्रत्येक ग्रह दिन के मूलांक सहज ही ज्ञात किये जा सकते हैं।

मूलांक-१

अंग्रेजी तारीख—१, १०, १९, २८

प्रतिनिधि ग्रह—जिन व्यक्तियों का जन्म १, १०, १९ या २८ तारीख को होता है, उनका मूलांक १ तथा प्रतिनिधि ग्रह सूर्य होता है। सूर्य चूंकि समस्त ग्रहों का अधिपति होता है तथा ग्रहों में प्रधान होता है, अतएव एक मूलांक भी सभी अंकों में प्रधान और श्रेष्ठ गिना गया है। एक मूलांक वाले व्यक्ति तेजस्वी, साहसी, कर्मठ, निरन्तर उद्योग में रत एवं परिश्रमी होते हैं। आकाश में जब-जब भी सूर्य प्रबल रहेगा, आपकी स्थिति प्रबल बनेगी, परन्तु सूर्य की क्षीणावस्था में आपका जीवन भी क्षीण होता दिखाई देगा।

निर्बल समय—लगभग अक्तूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर में सूर्य की किरणें इतनी तेजस्वी नहीं रहतीं, अतः यह समय आपके लिए अधिक अनुकूल नहीं होता। स्वास्थ्य में क्षीणता, कार्य में अनुत्साह और व्यर्थ की परेशानी तथा भाग-दौड़ इस समय में देखी जा सकती है।

उन्नत समय—आकाश मण्डल में सूर्य की प्रबल स्थिति ही आप के जीवन की प्रबल स्थिति मानी जानी चाहिए। इस दृष्टि से २१ मार्च से २८ अप्रैल तथा १० जुलाई से २० अगस्त तक सूर्य प्रखर एवं तेजस्वी रहता है, अतः यह समय आपके लिए श्रेष्ठ, उन्नत एवं प्रभावशाली माना जा सकता है।

शुभ तारीखें—वे सभी व्यक्ति या स्त्रियाँ जिनका जन्म १, १०, १९, २८ तारीखों में हुआ है, आपके लिए सहायक एवं सुविधापूर्ण होंगे। ये तारीखें आपके जीवन में भी मोड़ देने वाली हैं, अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारम्भ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा। अपने से उच्च अधिकारी से मिलने जाना या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि इन्हीं तारीखों में प्रारम्भ करना चाहिए, जिससे शीघ्र सफलता मिल सके।

शुभ दिवस—प्रत्येक सप्ताह का रविवार या सोमवार आपके लिए शुभ फलदायक है। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रवि या सोमवार पड़ रहा हो तो वह दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ रंग—अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आपको चाहिए कि यथासम्भव ड्राइंग रूम के पर्दे, तकिये की खोली, बिछावन आदि इसी रंग के हों। अपने पास इस रंग का रूमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आपको चाहिए कि आप इसी रंग के वस्त्र पहनें।

शुभ रत्न—आपका प्रधान रत्न माणिक है, जिसे संस्कृत में

पद्म-राग, फारसी में याक़ूत, उर्दू में चुन्नी और अंग्रेजी में रूबी कहते हैं। शुभ मुहूर्त में सोने की अंगूठी में लगभग पाँच रत्ती का माणिक इस प्रकार से जड़वाएँ कि वह अनामिका उँगली को स्पर्श करता रहे। रविवार को ही यह रत्न जड़वायें और उसी दिन पहन लें।

देवता—आप सूर्योपासना करें तथा उगते हुए सूर्य का दर्शन करने के पश्चात् ही नित्य के कार्यों में संलग्न हों। यदि यह संभव न हो तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के ही दर्शन कर लें।

ध्यान—प्रातःकाल उठकर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें—

प्रत्यक्ष देवं विशदं सहस्त्र मरीचिभिः शोभित भूमि देशम्।
सप्ताश्वगं सस्त्रज हस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे॥

मंत्र—आपका चित्त जब भी व्याकुल हो, घबराहट हो, किसी भी प्रकार की परेशानी या संकट हो तो आप निम्न मंत्र को १०८ बार पढ़ लें, आप कार्य सिद्धि का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥

शारीरिक स्वास्थ्य तथा बीमारियाँ—आप हृदयपक्ष से कमजोरी महसूस करेंगे तथा हृदय-संबंधी कोई न कोई कष्ट आपको बना रहेगा। रक्त-संबंधी बीमारियाँ भी यदाकदा होंगी तथा उससे पीड़ित रहेंगे। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र-पीड़ा जैसे रोग यदाकदा होते रहेंगे। आप रक्त की शुद्धता एवं सहज प्रवहता की ओर विशेष ध्यान देते रहें।

व्रतोपवास—यदि संभव हो सके तो आप रविवार को भूखे रहें या एक समय भोजन करें। यदि भोजन के साथ नमक का सेवन न करें तो यह विशेष लाभदायक रहेगा। इसी दिन भोजन करने से पूर्व सुगंधित अगरबत्ती जलाकर 'आदित्य हृदय' कवच का पाठ करें तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आप कई बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं तथा बीमारियाँ आप से दूर ही रहती हैं।

मित्रता—जिन लोगों का जन्म १, १०, १९ और २८ तारीखों

को अथवा १० जुलाई से २०अगस्त तथा २२मार्च से २८ अप्रैल के बीच हुआ है, वे व्यक्ति आपके लिए अधिक अनुकूल, सहयोगी एवं विश्वास-पात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के लोगों से आपकी मित्रता टिकाऊ रहेगी तथा व्यवसाय, रोजगार, साझेदारी आदि में भी ये व्यक्ति सहायक सिद्ध होंगे।

रोमांस—जिनका मूलांक १, ४ या ७ है, वे आपके लिये अच्छे साथी सिद्ध हो सकते हैं। उपर्युक्त मूलांक वाले व्यक्तियों से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं।

आपकी विशेषताएँ—१. आपकी सहनशक्ति उत्तमकोटि की है। जीवन में आपको भयंकर उथल-पुथल देखनी पड़ी है तथा असंगतियों एवं विपरीत परिस्थितियों से आप निरन्तर संघर्ष करते रहे हैं, परन्तु इतना होने पर भी आप में साहस की कमी नहीं और न किसी प्रकार की दुर्बलता ही आई। जीवनी-शक्ति जितनी आप में है, उतनी अन्य लोगों में कम ही पाई जाती है।

२. नेतृत्व करने की प्रवृत्ति आप में प्रबल है। बचपन में साथियों तथा हमजोलियों का नेतृत्व तथा बड़े होने पर अपने मित्रों तथा संबंधियों का नेतृत्व आप करते ही रहे हैं। यह गुण आप में जन्मजात है।

३. परिचय क्षेत्र विस्तृत होगा, किसी भी अपरिचित व्यक्ति को परिचित बना लेना तथा थोड़े ही दिनों में उससे मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित कर लेना आपकी विशेषता है। समाज में भी आपको कई लोग जानेंगे तथा आपके कार्यों एवं गुणों की प्रशंसा करेंगे।

४. जिन व्यक्तियों का मूलांक एक होता है, वे हर समय नवीनता की खोज में रहते हैं। कुछ न कुछ नया, विलक्षण, अलौकिक कार्य करना इनकी खूबी है। ऐसे ही व्यक्ति संसार को कुछ नई चीज दे जाते हैं।

५. आपकी शारीरिक संरचना प्रबल एवं सुदृढ़ है, जिससे शारीरिक रूप से भी कार्य करने में आप सक्षम हैं तथा जीवन में हिम्मत नहीं हारते।

६. व्यापार में आप अगुआ रहेंगे। आपके व्यापार की सफलता

आपकी दूरदर्शिता ही है जिसके कारण कम ही समय में काफी प्रगति कर सकेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो शीघ्र ही उच्चपदाधिकारी बनेंगे तथा आपके नेतृत्व में कई लोग कार्य करेंगे। चाहे व्यापारिक कार्य हो, चाहे सामाजिक, आपका नेतृत्व प्रमुख रहेगा ही।

७. सबसे बड़ी जो विशेषता आप में है, वह है अपने सामने निश्चित लक्ष्य। आप अपने लक्ष्य के प्रति पूर्णतः सजग और सचेष्ट हैं और निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर गतिशील हैं, अंधेरे में भटकने वाले व्यक्ति आप नहीं।

८. एक मूलांक वाले व्यक्ति निर्णय लेने में भी चतुर होते हैं। अनिश्चय की स्थिति नहीं के बराबर होती है। किसी भी कार्य या व्यवसाय के बारे में तुरन्त निर्णय ले लेना आपके जीवन की सफलता है और ऐसा निर्णय अधिकांशतः सही होता है।

९. स्वतंत्र व्यक्तित्व, स्वतंत्र निर्णय और स्वतंत्र जीवन आपके लिये प्रधान रहा है, किसी की धौंस में जीवित रहने वाले आप नहीं, अपने विचारों के आप स्वयं निर्माता और अगुआ हैं।

१०. पिटे-पिटाये तौर-तरीकों से आप प्रसन्न नहीं। किसी भी कार्य में नवीनता का मिश्रण आपकी विशेषता रहेगी। कार्यालय में भी आप नवीन पद्धति से काम लेंगे। मौलिकता आपके मस्तिष्क की प्रधान विशेषता है।

११. जो निर्णय ले लिया, वह ले लिया, आप उस पर अटल और अडिग हैं, जरा-जरा-सी बात में निर्धारित नीति बदलना आपके स्वभाव में नहीं और इसीलिए समाज की दृष्टि में आप विश्वासी हैं, कार्यनिष्ठ हैं, सही और सच्चे हैं।

१२. महत्वाकांक्षा की उग्रता आप में रहेगी। आपका मस्तिष्क हर समय इसी ओर क्रियाशील रहेगा कि किस प्रकार मैं अपना अभ्युत्थान कर सकता हूं, ऊँचा उठ सकता हूं, आगे बढ़ सकता हूं और इसलिये कभी-कभी झुंझलाहट, खीझ, मानसिक अस्तव्यस्तता भी आ सकती है, पर थोड़े समय के लिये ही, क्योंकि आप तुरन्त सिर झटककर

बासी और निराशापूर्ण विचारों को दूर फेंक कर आगे के लिए सोचना शुरू कर देते हैं।

१३. आप अपने कार्य में कम से कम हस्तक्षेप चाहते हैं। आप नहीं चाहते कि जरा-जरा-सी बात पर आपको कोई टोकता रहे या बिना माँगे ही सुझाव दे। आप शांति चाहते हैं और सही मार्ग पर आगे बढ़ते रहना ही आपको पसन्द है।

१४. यदि कहा जाय कि नई से नई सूझ, विचारों तथा योजनाओं के लिए आपका मस्तिष्क उर्वर है तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं। आप एक सफल 'प्लानर' बन सकते हैं, नये से नये एवं श्रेष्ठ लोगों से आपका सम्पर्क बना रहेगा, बढ़ता रहेगा।

१५. द्रव्य कमाने में आप जितने परिश्रमी हैं, उतने ही व्यय करने में उदार भी। पैसा आपके पास कम ही टिक पाता है। हृदय से आप संकुचित और संकीर्ण नहीं, जहाँ जैसी आवश्यकता अनुभव करते हैं, तुरन्त व्यय कर डालते हैं।

१६. सुन्दर, सलीक़ेदार एवं सुरुचिपूर्ण जीवन से आपको प्रेम है। अस्तव्यस्तता, फूहड़पन व शिथिलता आपको पसन्द नहीं। स्त्री भी आपको लगभग आपके विचारों के अनुकूल ही प्राप्त होगी। आप कला-सौन्दर्य पारखी और प्रशंसक होंगे।

१७. चाटुकारिता, झूठी प्रशंसा आदि से आपको घृणा होगी। स्पष्ट और दो टूक, परन्तु समय और स्थान का विचार कर बात कहना आपकी विशेषता कही जा सकती है।

१८. आपको आकस्मिक लाभ-व्यय होते ही रहेंगे। तात्पर्य यह कि आपके जीवन में आकस्मिकता का प्राधान्य रहेगा। आमदनी अथवा द्रव्य लाभ होगा तो अचानक और आकस्मिक रूप से ही होगा, इसी प्रकार खर्चे भी आकस्मिक रूप से ही आयेंगे। कभी-कभी ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि बजट असन्तुलित हो जाय, परन्तु शीघ्र ही आप उसे व्यवस्थित कर लेंगे।

१९. आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, फलस्वरूप कई कार्य

तो आपके व्यक्तित्व के फलस्वरूप ही संभव हो जायेंगे। आपका व्यक्तित्व ही आपकी सफलता का हेतु है।

२०. आप इसी प्रकार के कार्य या व्यवसाय में सिद्धि प्राप्त करेंगे, जो त्वरित निर्णय सम्पन्न हो, जिसमें शिथिलता न हो एवं जिसमें बुद्धि का प्रयोग होता हो।

२१. आप स्वभाव से ही चतुर, हँसमुख एवं आकर्षणप्रधान होंगे। दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने का आप में प्रधान गुण होगा।

सावधानियाँ—१. कभी-कभी आप शान-शौकत दिखाने के लिए जरूरत से ज्यादा व्यय कर डालते हैं, यह ठीक नहीं। आपके बजट असन्तुलन का कारण यही है।

२. कभी निरंकुशता हद से ज्यादा बढ़ जाती है और यह निरंकुशता आपके लए खतरे की सूचक हो जाती है।

३. आप जोखिम उठावें, पर धन संबंधी मामलों में आप जोखिम न उठावें, इससे आप परेशानी में पड़ सकते हैं।

४. हद से ज्यादा किसी पर विश्वास भी न करें, मित्रों की ओर से धन संबंधी धोखा मिलेगा, सावधान रहें।

५. सौन्दर्य और स्त्री की आसक्ति आप पर लांछन भी ला सकती है, अतः बहुत संभल कर धीरे-धीरे ही आगे बढ़ें।

शुभ तारीखें—१, ४, १०, १३, १९, २२, २८ और ३१।

शुभ वर्ष—१, १०,१९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, व ७३वाँ वर्ष। आपके जीवन के उल्लेखनीय वर्ष होंगे।

उपरोक्त वर्षों का जोड़ एक है, अतः आपके जीवन के वे सभी वर्ष जिनका योग एक है, आपके जीवन को उन्नत मोड़ देने वाले एवं श्रेष्ठ सिद्ध होंगे।

अशुभ तारीखें—७, १६, २५

अशुभ वर्ष—७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० आदि वे सभी वर्ष जिनका योग सात होता है आपके लिए अनुकूल नहीं कहे

जा सकते। आपको चाहिए कि आप अपने महत्त्वपूर्ण कार्य इन तारीखों में प्रारम्भ न करें।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—संसार के प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति जिनका मूलांक एक रहा है—

१.	सिकन्दर महान्	जन्म	१ जुलाई	मूलांक	१
२.	ड्यूक विलिंगटन	"	१ मई	"	१
३.	जनरल गोर्डन	"	२८ जनवरी	"	१
४.	राष्ट्रपति गारफ़ील्ड	"	२९ नवम्बर	"	१
५.	डेविड लिविंगस्टोन	"	१९ मार्च	"	१
६.	एनीबीसेन्ट	"	१ अक्टूबर	"	१
७.	राष्ट्रपति विल्सन	"	२८ दिसम्बर	"	१
८.	राष्ट्रपति हूवर	"	१० अगस्त	"	१
९.	ऑरविल राइट	"	१९ अगस्त	"	१
१०.	बिस्मार्क	"	१ अप्रैल	"	१
११.	केप्टन कुक	"	२८ अक्तूबर	"	१
१२.	दांते	"	२८ अक्तूबर	"	१
१३.	गोथे	"	२८ अगस्त	"	१
१४.	मजरूह सुलतानपुरी	"	१ अक्तूबर	"	१
१५.	मीनाकुमारी	"	१ अगस्त	"	१
१६.	राजेन्द्रसिंह बेदी	"	१ सितम्बर	"	१
१७.	लता मंगेशकर	"	२८ सितम्बर	"	१
१८.	सम्पूर्णानन्द	"	१ जनवरी	"	१

मूलांक—२

अँग्रेजी तारीख—२, ११, २०, २९

मूलांक २ का प्रतिनिधि ग्रह चन्द्रमा है, जो कि भावुक, कोमल, कल्पनाप्रिय एवं मधुर है, फलस्वरूप इस मूलांक से संबंधित व्यक्ति भी सहृदय, कल्पनाप्रिय एवं मधुरभाषी होता है। 'चन्द्रमा मनसो जातः' के अनुसार चंचलमना होने से अधिक समय तक एक ही विषय पर स्थिरता नहीं रहती और न एक ही कार्य को लम्बे समय तक कर पाते हैं। इन्हें नित्य नये-नये विचार सूझते हैं और नई से नई कल्पनाएँ मन में जन्म लेती रहती हैं।

दो मूलांक वाले व्यक्ति शारीरिक रूप से अधिक प्रबल नहीं होते, परन्तु मानसिक रूप से ये अधिक स्वस्थ और सबल होते हैं, फलस्वरूप मजदूरी एवं श्रम की अपेक्षा दिमागी कार्यों में ये अधिक योग्य सिद्ध होते हैं।

स्वभाव से शंकालु और सदैव दूसरों का हित सम्पादन करते रहते हैं। 'ना' कहना आपके वश की बात नहीं, प्रत्येक कार्य या सुझाव में 'हाँ' ही आपकी जबान पर रहता है। स्वभाव से कोमल होने के कारण आप दूसरों पर दयालु भी रहते हैं।

सौन्दर्य के प्रति आपकी रुचि परिष्कृत है। प्रेम और सौन्दर्य के क्षेत्र में आप महारथी हैं. दूसरों को सम्मोहित करने की कला आपको आती है और चुटकियों में ही अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को भी

परिचित बना लेते हैं। अपनी गलती स्वीकार करने में भी आप हिच-किचाते नहीं। आत्मविश्वास की कमी होने से भी कई बार उधेड़बुन में ग्रस्त रहते हैं और क्षण-क्षण में आपके विचारों में परिवर्तन होते रहते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि आपके सरल एवं सहृदय होने के कारण दूसरे लोग आपका गलत उपयोग करते हैं। यद्यपि आप यह जानते हैं कि सामने वाला व्यक्ति चापलूसी करके अपना उल्लू सीधा कर रहा है, परन्तु फिर भी आप चुप रहते हैं।

अधिक कल्पनाशील होने के कारण परिवार से भी यदाकदा जली-कटी सुनने को मिलती है तथा मानसिक संघर्ष बना रहता है, पर फिर भी आप इससे बच नहीं सकते। अधैर्य के कारण आप गलत-सही कुछ भी कर तो डालते हैं, परन्तु फिर आप पछताते रहते हैं। निराशा और हीनता की भावना भी आपमें बढ़ी-चढ़ी होती है जिसके कारण उदासी, गमगीनी आदि विचार भी बने रहते हैं। यद्यपि जीवन में मित्रों की संख्या अधिक होगी तथापि उनसे कोई विशेष लाभ हो, यह संभव नहीं है। वास्तविक मित्रों का अभाव आपको सदैव खटकता ही रहेगा, क्यों कि बिना मित्रों के आप एक क्षण भी नहीं रह सकते। आपको हर समय किसी न किसी की संगति चाहिए जबकि इसी कारण आपका कार्य शिथिल पड़ा रहता है।

चन्द्र तत्व प्रधान होने के कारण आपके स्वभाव और व्यवहार में स्त्रीत्व की मात्रा विशेष रहेगी। स्त्रियों के मामले में आप सौभाग्य-शाली रहेंगे, स्त्रियां सहज ही आपका विश्वास कर लेंगी तथा उनसे परिचय भी आप अन्य की अपेक्षा जल्दी बढ़ा लेंगे। स्त्रियों से काम निकालने और उनसे राज उगलवाने में भी आप सिद्धहस्त माने जा सकते हैं।

दूसरों के हृदय की बात जान लेने का आपमें सहज गुण है। सामने वाला व्यक्ति कहे या न कहे, आप तुरन्त ही उसके मन तक पहुंच कर उसकी थाह ले सकते हैं। ललित कलाओं में रुचि रखने के कारण आपका काफी समय, शक्ति और श्रम व्यर्थ ही जायेगा। अपनी पत्नी

प्रति आप विश्वासी रहेंगे तथा सुन्दर एवं शिक्षित पत्नी के पति कहलाने का गौरव प्राप्त करेंगे।

नदी, समुद्र या जलतटीय नगरों में आपका भाग्योदय हो सकता है। ऐसे कार्य जिनमें यात्राएँ करनी होती हैं, यदि आपको सुलभ हों तो आप उनमें अच्छा लाभ उठा सकेंगे।

सावधानियाँ—यद्यपि आप सभ्य, समझदार, सुशील एवं सतर्क व्यक्तित्व सम्पन्न पुरुष हैं, फिर भी कुछ तथ्य ऐसे हैं, जिनसे बचे रहें तो आपका जीवन अधिक उन्नत, अधिक आशाप्रद और अधिक श्रेष्ठ हो सकता है।

१. आत्मविश्वास रखिये, ज़रा-ज़रा सी बात पर घबरा जाना, या हीन भाव से ग्रस्त होना आपको शोभा नहीं देता।

२. जो भी कार्य प्रारम्भ करें, उसे पूरा करने का प्रयत्न करें। काम को बीच में ही या अधूरा छोड़ देना आपके व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं। जो भी विचार बनावें, उस पर दृढ़ता से जमे रहें।

३. प्रेम के मामले में सँभल-सँभल कर पाँव उठावें, क्योंकि उतावली में आप सब किया-कराया बिगाड़ देते हैं। समाज में बदनाम भी हो सकते हैं।

४. जल्दबाज़ी मत कीजिये। कैसा भी संकट आ जाय, आप स्थिर चित्त से उस पर मनन कीजिये, आप स्वयं देखेंगे कि कोई राह निकल रही है।

५. फालतू और चापलूस मित्रों की संख्या मत बढ़ाइये, ये आपके हितैषी नहीं।

६. स्त्रियों में न तो अधिक बैठें और न उनसे घनिष्ठता ही बढ़ायें, क्योंकि इससे आपके व्यक्तित्व में न्यूनता ही आती है, श्रेष्ठता नहीं।

७. पूर्णिमा के दिन कोई निर्णय मत लीजिये और न गहरे जल में ही जाइये। आपके लिये शुक्ल पक्ष की अपेक्षा कृष्ण पक्ष अधिक अनुकूल है।

८. आकाश में जब चन्द्रमा क्षीण हो या सूर्य के आसपास हो तब

आप किसी भी प्रकार का निर्णय न लें।

९. औरतों की तरह ठुमक कर चलना, चप्पल घसीटते हुए चलना या हल्की मुस्कराहट बिखेरते हुए बातें करना आपके व्यक्तित्व के लिए ठीक नहीं।

बीमारियाँ—भावुक तथा संवेदनाप्रधान व्यक्तित्व के कारण छोटी से छोटी घटना, परिस्थिति एवं वातावरण का भी आपके मन पर प्रभाव पड़ेगा, इसलिए हृदय से सम्बन्धित बीमारियाँ होने का भय बना रहेगा।

२. स्नायु-सम्बन्धी बीमारियाँ यदा-कदा बनी ही रहेंगी।

३. पेट (आमाशय) से सम्बन्धित बीमारियाँ लगातार बनी रहेंगी। अजीर्ण, उदर रोग, कोष्ठबद्धता, आँतों के रोग, 'गैस ट्रबल' आदि बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं।

४. जलोदर अथवा ऐसे ही किसी उदर रोग से आपकी मृत्यु सम्भव है।

५. आपको चाहिये कि आप छूआछूत का पूरा ध्यान रक्खें।

सावधानियाँ—१. ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे आपके स्नायु-संस्थान पर असर पड़ता हो।

२. न तो बीमार के सम्पर्क में आयें और न ही बीमारी के प्रति लापरवाही बरतें।

३. चेचक का टीका प्रति छः माह में एक बार अवश्य लगवा लिया करें।

४. यदि आप दुर्बल हों तो अधिक क्रोध न करें, क्योंकि इससे मूर्च्छा, बेहोशी, शून्यता आदि बीमारियों का भय हो सकता है।

५. जब-जब भी आकाश में चन्द्रमा दुर्बल होगा, आपको स्नायु, खाँसी, फेंफड़े के रोग आदि प्रबल होंगे, अतः ऐसी स्थिति में जागरूकता बरतें।

६. प्रतिदिन टहलें।

७. अधिक विचार न करें और न उन्मादपूर्ण स्थिति में ही रहें।

८. कोई कार्य, विचार या प्रयत्न ऐसा न करें, जिससे आपका

मानसिक बोझ बढ़े।

निर्बल समय—जब-जब भी चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्रों—कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा पर होगा या सिंह राशि में विचरण करेगा अथवा सूर्य के साथ होगा, वह समय आपकी अस्वस्थता और मानसिक परेशानी को बढ़ाने वाला होगा। जनवरी, फरवरी और दिसम्बर महीने भी आपके लिए श्रेष्ठ नहीं कहे जा सकते।

उन्नत समय—२० जून से २७ जुलाई तक गगनमण्डल में चन्द्रमा की स्थिति अधिक अनुकूल होती है, अतः इस समय में यात्रा, मुहूर्त शुभ कार्यों का प्रारम्भ आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा, यह समय सिद्धिदायक है।

शुभ तारीखें—किसी भी महीने की २, ११, २० और २९ तारीख अन्य तारीखों की अपेक्षा अधिक शुभ एवं सफलतापूर्ण हैं, इसके अतिरिक्त १, ४, ७, १०, १३, १६, १९, २२ और २५ तारीख भी मध्यमरूपेण ठीक कही जा सकती हैं। शुभ तारीखों तथा शुभ समय को विचार कर किया गया कार्य निश्चय ही सफलतापूर्ण होता है।

शुभ दिवस—सप्ताह के सात वारों में सोमवार आपके लिये सर्वाधिक शुभ है। पूर्णिमा तथा प्रदोष का व्रत आपकी चिंताओं को दूर करने वाला एवं कल्याणकारी है।

शुभ रंग—हल्के हरे रंग आपकी मानसिक शक्ति बढ़ाने वाले हैं। शुभ्र सफेद वस्त्र कांति तथा पराक्रमवर्धक हैं, अंगूरी रंग आपकी स्नायविक उन्नति एवं श्रेष्ठता के लिए उपयोगी है। सफेद रंग का रूमाल आपको सदैव ही अपने पास रखना चाहिये। काला, बैंगनी, नीला तथा हरा रंग अशुभ, कष्टदायक तथा पीड़ायुक्त कहे गये हैं।

शुभ रत्न—आपका प्रधान रत्न मोती है, जिसे संस्कृत में 'मुक्तक' अंग्रेजी में पर्ल (pearl) तथा फारसी में 'मोतिया कहते हैं। आपसे सम्बन्धित धातु चाँदी है, अतः चाँदी की अँगूठी में ही मोती को धारण करना आपके लिये उन्नतिकारक है। मोती हमेशा चिकना, निर्मल, कांतियुक्त, कोमल और सुडौल लेना चाहिए तथा जहाँ तक सम्भव हो

सके 'बसरे' की खाड़ी का शुद्ध मोती ही प्रयोग में लाना चाहिए। अनामिका उँगली में मोती की अँगूठी धारण करें। बीमारी की अवस्था में, रजत-पात्र में पानी पीने तथा उसका प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होगा।

देवता—आपका प्रधान देवता 'शंकर' है, अतः आप शिव अथवा शंकर का इष्ट रक्खें एवं नित्य उनका दर्शन कर फिर भोजन करें। यदि यह भी सम्भव न हो तो मुक्तक जड़ी अँगूठी के ही दर्शन कर नित्य कार्य प्रारम्भ करें। अपने घर में शिव की सुन्दर मूर्ति या शिव का चित्र अवश्य रक्खें।

ध्यान—प्रातःकाल उठकर आप शंकर का ध्यान करें। मन में शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित करें तथा फिर यह ध्यान पढ़ें—

शंख प्रभं वेणु प्रिय शशांक
मीशान मौलिस्थित मीड्य रूपम्।
तमीर्वति चातृत सिक्त गात्रं
ध्याययेद् हृदब्जे शशिभं ग्रहेन्दम्॥

मंत्र—आप जब भी चित्त में व्याकुलता अनुभव करें या विपरीत कार्य हो रहा हो अथवा अनिष्ट हो रहा तो तो आप निम्न मंत्र का जप करें, निश्चय ही आप अनुकूल स्थिति में अपने आप को देखेंगे।

॥ ॐ श्रीं क्रीं चं चन्द्राय नमः॥

मित्रता—जिन पुरुषों अथवा स्त्रियों का जन्म २, ११, २० तथा २९ तारीखों को हुआ है, अर्थात् जिनका मूलांक २ है, वे आपके अच्छे मित्र सिद्ध हो सकते हैं, इस प्रकार के लोगों से आप फायदा भी उठा सकते हैं। सम्बन्ध, परिणय, स्नेह, भागीदारी, रोजगार आदि में यदि ऐसे लोगों का सहयोग लिया जाय तो आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोमांस—जिन पुरुषों अथवा स्त्रियों का जन्म २० जून से २७ जुलाई के बीच हुआ है एवं उनका मूलांक भी दो है, वे आपके रहस्य एवं राज में भागीदार हो सकते हैं तथा उनसे आपका सम्बन्ध मधुर एवं सुखकर बना रह सकता है।

शुभ वर्ष—आपके जीवन का १०, १, १९. तथा २८वां वर्ष

श्रेयष्कर रहा होगा, इसी प्रकार ३७, ४६, ५५ तथा ६४वाँ वर्ष भी उन्नतिदायक होगा। ४, १३, २२, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ६२ तथा ७१वाँ वर्ष भी प्रगतिपूर्ण कहे जा सकते हैं।

७ का अंक भी दो मूलांक का मित्र कहा जाता है, अतः ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२ तथा ६१वाँ वर्ष भी श्रेष्ठ रहने चाहियें।

२, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ८३वाँ वर्ष आपके लिये सर्वोत्तम वर्ष सिद्ध होंगे।

अशुभ तारीखें—५, १४, २३।

अशुभ वर्ष—५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ तथा ७७ वाँ वर्ष सामान्य तथा कष्टकर होंगे।

उपर्युक्त तारीखों तथा वर्षों का गहराई से अध्ययन कर निष्कर्ष निकालें।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—संसार के वे प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति जिनका मूलांक २ रहा है।

१.	स्वीडनवर्ग	जन्म	२९ जनवरी	मूलांक	२
२.	मेरिया एन्टोनी	"	२ नवम्बर	"	२
३.	ग्लेडस्टन	"	२९ दिसम्बर	"	२
४.	सादी करनोट	"	११ अगस्त	"	२
५.	नेपोलियन III	"	२० अप्रैल	"	२
६.	एडिसन	"	११ फरवरी	"	२
७.	इब्सन	"	२० मार्च	"	२
८.	चार्ल्स II	"	२९ मई	"	२
९.	थोमस हार्डी	"	२ जून	"	२
१०.	आदम्स राष्ट्रपति	"	११ जुलाई	"	२
११.	प्रेसिडेंट हार्डिंग	"	२ नवम्बर	"	२
१२.	जोसेफ जेफरसन	"	२० फरवरी	"	२
१३.	दिलीपकुमार (अभिनेता)	"	११ दिसम्बर	"	२
१४.	सर आशुतोष मुकर्जी	"	२९ जून	"	२

१५.	मोरारजी देसाई	"	२६ फरवरी	"	२
१६.	सुमित्रानन्दन पन्त	"	२० मई	"	२
१७.	हेरॉल्ड विल्सन	"	११ मार्च	"	२
१८.	हर हिटलर	"	२० अप्रैल	"	२
१९.	महात्मा गांधी	"	२ अक्तूबर	"	२
२०.	मुसोलिनी	"	२६ जुलाई	"	२
२१.	लालबहादुर शास्त्री	"	२ अक्तूबर	"	२
२२.	जनरल बी. एम. कौल	"	२ मई	"	२
२३.	मुहम्मद साहब	"	२० अप्रैल	"	२
२४.	मथुरादास माथुर	"	२० सितम्बर	"	२
२५.	आशा पारीख	"	२ अक्तूबर	"	२
२६.	माला सिन्हा	"	११ नवम्बर	"	२
२७.	राम महेश्वरी (निर्माता)	"	२० फरवरी	"	२

मूलांक-३

अंग्रेजी तारीख—३, १२, २१, ३०

मूलांक ३ शक्ति, साहस और दृढ़ता का प्रतीक है। यह श्रम का ठोस प्रतिष्ठापक तथा संघर्ष का जीवन्त एवं मूर्तिमन्त रूप है। इसलिये जीवन-संघर्ष में जितना यह मूलांक सफल होता है, उतना अन्य नहीं।

प्रतिनिधि ग्रह—मूलांक ३ का प्रतिनिधि ग्रह बृहस्पति है, जो

कि साहस, श्रम और शक्ति के अतिरिक्त विद्या, ज्ञान एवं धर्म का भी सूचक है, अतः ऐसे व्यक्ति हृदय से धार्मिक प्रकृति प्रधान होते हैं परन्तु इनका धर्म रूढ़िवादिता से ग्रस्त नहीं होता, अपितु लचीला एवं सर्वसुखकर होता है।

हाथ में तर्जनी अंगुली के मूल में इसका निवास-स्थान है तथा एक राशि पर इसकी स्थिति १३ मास तक रहती है। गोचरावस्था में जब-जब भी बृहस्पति सूर्य के सम्पर्क में आता है अथवा उससे ग्रस्त एवं अस्त होता है तब-तब तीन मूलांक वाले व्यक्तियों के जीवन में कमजोरी एवं असफलताओं का प्रवेश होता है। आकाश में जब-जब बृहस्पति क्षीण होगा, इनका जीवन भी धूमिल होगा और व्यक्तित्व में क्षीणता आयेगी।

उन्नत समय—१६ फरवरी से २० मार्च तथा २१ नवम्बर से २० दिसम्बर तक के समय में बृहस्पति प्रबल एवं श्रेष्ठ होता है, अतः यह समय श्रेष्ठ, उन्नत एवं लाभयुक्त होता है। नया कार्य, व्यवसाय, नई यात्रा, नये सम्बन्ध तथा रोजगार आदि इसी समय में प्रारम्भ करें तो अधिक उपयुक्त एवं सही सिद्ध हो सकते हैं, अतः नई योजनाओं का श्रीगणेश इन्हीं दिनों में करें।

शुभ तारीखें—प्रत्येक महीने की ३, १२ एवं २१ तारीख आपके लिए श्रेयष्कर रहेंगी। इसी प्रकार मार्च, जून तथा दिसम्बर का महीना भी श्रेयष्कर रहेगा। अपने से उच्च अधिकारियों से इन्हीं तारीखों को मिलें, आप किसी को भी पत्र लिखें तो इस प्रकार से समय का खयाल करके पत्र लिखें कि इन्हीं तारीखों में से किसी तारीख को वह पत्र अधिकारी को मिले। अपने मित्र तथा सहयोगी भी ऐसे ही बनावें, जिनका मूलांक ३ हो।

शुभ तारीखें—१ तथा ७ का अंक आपके लिए दुःखदायी तथा अशुभ सूचक है। राज्य सम्बन्धी अशुभ सूचना ७, १६, २५ तारीखों को ही प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से जनवरी तथा जुलाई कष्टकर है।

शुभ दिवस—चन्द्रवार तथा गुरुवार आपके लिए शुभ हैं, अन्य

वारों का फल निम्न प्रकारेण है :

१. रविवार—असफलतासूचक, व्यर्थ वाद-विवाद, हानि, व्यर्थ का भ्रमण, अशुभ समाचार तथा राज्य कार्य के लिए हानिदायक।

२. सोमवार—धन लाभ, मित्रों की संगति, निरोगिता तथा शुभ समाचार, राज्य कार्य के लिए श्रेयष्कर।

३. मंगलवार—मनसन्ताप, मानसिक परेशानी, दिल में हूक उठना, उदासी।

४, बुधवार— धन लाभ, लेखन, कार्यसिद्धि तथा नूतन समाचार।

५. गुरुवार— शुभ समाचार, सम्बन्धियों के बारे में विशेष समाचार, पत्नी अथवा ससुराल से लाभ, राज्यकार्य में शुभ समाचारों से युक्त।

६. शुक्रवार—ऐश-आराम, भोग-विलास, नये वस्त्र-आभूषण खरीदना, प्रेमी अथवा प्रेमिका से मिलन, रतिसुख, लाभ।

७. शनिवार—श्रेष्ठ धन लाभ, भाग्योदय सूचक, विशेष हर्ष समाचार तथा सुखदायक।

शुभ रंग—पीला रंग आपके लिये सौभाग्यसूचक है। बैंगनी रंग, नीला तथा गुलाबी रंग भी आपके लिये अनुकूल तथा शुभ फलदायक है। जहाँ तक हो सके आप अपनी जेब में पीले रंग का रूमाल रक्खें। यदि ड्राइंगरूम में बैंगनी रंग के पर्दे तथा चादर रक्खें अथवा तकिये की खोली इस रंग की बनायें तो आपके लिये श्री एवं सम्पनता पूर्ण रहेगी।

शुभरत्न—आपके लिए प्रधान रत्न पुखराज है। इसे संस्कृत में पुष्पराग, हिन्दी में पुषराज या पुष्पराज अथवा पुखराज, फारसी में जर्द याकूत तथा अंग्रेजी में टोपे (Topay) कहते हैं। यह मुख्यतः पाँच रंगों में पाया जाता है—

(i) हल्दी के रंग के समान जर्द

(ii) केशर के समान केशरिया

(iii) नींबू के छिलके के समान

(iv) स्वर्ण के रंग के समान

(v) सफेद, पर पाली झाँई-सी लिये हुए।

परन्तु आपके लिये पीला पुखराज ही श्रेयस्कर है, जो स्वर्ण के समान कांतियुक्त तथा सुडौल है। यह तीन रत्ती से छोटा न हो। स्वर्ण अँगूठी में जड़वा कर अँगूठी को तर्जनी उँगली में धारण करना चाहिए। अँगूठी में पुखराज इस प्रकार से जड़ा हुआ हो कि वह अँगूठी को सदा स्पर्श करता रहे। ऐसी अँगूठी गुरु-पुष्य को ही बनवावें तथा उसी दिन इसे धारण कर लें।

देवता—आपका प्रधान ग्रह विष्णु है, अतः आप विष्णु की ही सतत् उपासना करें तथा सत्यनारायण का व्रत रक्खें। नित्य प्रातःकाल विष्णु के चित्र अथवा उनकी मूर्ति के दर्शन कर फिर अन्य कार्यों में लगें तो श्रेयस्कर रहेगा।

ध्यान—प्रातःकाल उठकर आप बृहस्पति का इस प्रकार ध्यान करें:

तेजोमयं शक्ति त्रिशूल हस्तं
सुरेन्द्र सं सेवित पद पद्मम्।
मेधानिधिं जानुगत द्वि बाहुं
गुरुं स्मरे मानस पंकजेऽहम्॥

मन्त्र—जब-जब भी आप परेशानी में हों अथवा किसी प्रकार का संकट आप पर मँडरा रहा हो या किसी दुर्घटना या अशुभ की शंका हो तो आप निम्न मंत्र का जप करें, निश्चय ही आप अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त करेंगे।

॥ ॐ बृ बृहस्पतये नमः ॥

शारीरिक स्वास्थ्य— बृहस्पति क्षीण एवं अशुभ होने पर चर्मरोग की वृद्धि करता है। स्नायविक शैथिल्य तथा चित्त में विकलता हरदम बनी रहेगी, गुप्तेन्द्रिय शिथिल होगी तथा कामवासना का प्राबल्य रहेगा। रक्त-सम्बन्धी बीमारियाँ तथा वायु के प्रकोप के प्रति जागरूकता बरतें।

हृदय रोग वृद्धावस्था में कष्ट देगा, स्वादिष्ट पदार्थों का सेवन

एवं उनके प्रति रुचि, हर समय कुछ-न-कुछ खाते रहने की प्रवृत्ति, चर्बी एवं स्थूलता में वृद्धि, प्रमेह, सैप्टिक, पित्तज्वर, पित्त प्रकोप, उदर शूल आदि बने रहेंगे। पेट सम्बन्धी परेशानी भी बनी रहेगी।

यदि आप असावधानी बरतेंगे तो कामला, खुजली, त्वचारोग, सन्निपात, कुकरखाँसी आदि तुरन्त हो जायेंगे, अतः आपको इनकी ओर से पूरी सावधानी बरतना चाहिए।

व्रतोपावस — आप पूर्णिमा का व्रत करें तथा यदि बीमार हों तो गुरुवार को भोजन न करें। गुरुवार को ही 'विष्णु सहस्रनाम' पाठ भी आपके लिए आनन्द रह सकता है।

मित्रता — आपका स्नेह सम्बन्ध ऐसे ही व्यक्ति या स्त्रियों से हो सकता है जिनका मूलांक ३ है, अतः आप भागीदारी, व्यवसाय, मित्रता, प्रेम आदि करते समय इस बात का ध्यान रक्खें। ३ मूलांक वाले व्यक्ति आपके लिए सहायक रहेंगे। ३ के अतिरिक्त जिन पुरुषों या स्त्रियों का जन्म ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को हुआ है, वे भी आपके लिए अच्छे मित्र सिद्ध हो सकते हैं।

रोमांस—जिनका जन्म १९ फरवरी से २१ मार्च तथा २१ नवम्बर से २१ दिसम्बर के बीच हुआ है, ऐसे व्यक्ति या स्त्रियाँ एवं जिनका मूलांक भी ३ हो, ये आपके राज में शीघ्र ही शरीक हो सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों से आप शीघ्र ही घनिष्टता बढ़ाने में सफल होंगे।

सावधानियाँ—१. आप भोजन करते समय पूरा-पूरा खयाल रक्खें तथा कभी भूलकर भी अधिक भोजन न करें।

२. चर्बीयुक्त पदार्थों के सेवन से बचें।

३. गरिष्ठ भोजन आपके स्वास्थ्य एवं प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है, अतः इस ओर ध्यान दें।

४. गन्धकयुक्त पदार्थ आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक है।

५. फलों का अधिकाधिक सेवन करें।

६. मिर्चों तथा जलनशील पदार्थों से यथासंभव बचें।

आपकी विशेषतायें—१. अपने विचार, अपनी भावनाएँ और

अपने आत्म को जितने सुन्दर तरीके से आप व्यक्त कर सकते हैं, उतना अन्य कोई नहीं। दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करना और उनसे काम निकालना आप खूब समझते हैं।

२. द्रव्य आपके पास आता अवश्य है, पर वह टिकता नहीं। जब आपके पास द्रव्य आता है, तब आप भविष्य की चिन्ता तो एक प्रकार से छोड़ ही देते हैं, परन्तु धनाभाव की स्थिति में आप निराश और हतोत्साह भी जल्दी हो जाते हैं।

३. स्वार्थ की भावना आप में कुछ विशेष है। काम होने पर आप विरोधी के भी तलवे सहलाने को तैयार हैं, परन्तु काम निकल जाने पर उसे छिटकाते भी देर नहीं लगाते।

४. व्यय विशेष रहेगा, विशेषतः ऐश-आराम, मौज-शौक आदि तथा सजावट की वस्तुओं पर आप अधिक व्यय करेंगे।

५. आपकी महत्वाकांक्षाएँ बढ़ी-चढ़ी रहती हैं। छोटा पद, छोटा कोष, छोटा कार्य आपको पसन्द नहीं। ज्यों-ज्यों आप उच्चपदस्थ व्यक्तित्व देखते हैं, आप भी उसके समान बनने का प्रयत्न करते हैं। महत्वाकांक्षा हर समय ऊँची से ऊँची बढ़ी-चढ़ी ही रहती है।

६. आप अधिकतर निराशा-सी ही अनुभव करेंगे, क्योंकि आप उच्च महत्वाकांक्षा के फलस्वरूप जिस पद या प्रतिष्ठा को पाना चाहते हैं, वह प्राप्त न होने पर निराश होना स्वाभाविक ही है।

७. आकस्मिक द्रव्य लाभ अथवा आकस्मिक उन्नति की आप कामना तो करेंगे, पर सतर्क न रहते पर वह संभव नहीं होगा। आप सामाजिक पद मर्यादा की ओर सदैव जागरूक रहेंगे।

८. भाइयों से विशेष लाभ नहीं होगा, यद्यपि आपके स्वभाव के कारण वैमनस्य तो नहीं बढ़ेगा, परन्तु फिर भी मनमुटाव-सा अवश्य बना रहेगा।

९. आप जरा-सा भी पद या पैसा प्राप्त हो जाने पर स्वेच्छाचारिता की ओर बढ़ने लग जाते हैं, यह ठीक नहीं हैं, क्योंकि स्वेच्छाचारिता ही आपके व्यक्तित्व को धूमिल बनाती है, इसी स्वेच्छाचारित

के कारण आपके शत्रु बनते हैं, मित्रों में परस्पर मनमुटाव बढ़ता है तथा एकान्तता बढ़ती है।

१०. आप किसीके कार्य संचालन में न तो बाधा डालते हैं और न यह चाहते ही हैं कि कोई आपके कार्यों में हस्तक्षेप अथवा किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित करे।

११. आप बुद्धिमान, ईमानदार एवं उदार हृदय है तथा सरल जीवन बिताने के इच्छुक हैं, परन्तु गलत तरीके से पैसा आता हो तो आप मना भी नहीं करते, परन्तु बाद में आप पश्चात्ताप भी करते हैं।

१२. क्रोध शीघ्र आ जाता है, परन्तु जितनी शीघ्रता से आता है, उतनी ही शीघ्रता से वह उतर भी जाता है, क्रोधातिरेक में भी आप विवेक को अपने हाथ से नहीं जाने देते।

१३. जल्दी बोलना, अखण्डित तर्क प्रस्तुत करना तथा अपनी वाणी से दूसरों को वश में कर लेना आपकी विशेषता कही जा सकती है।

१४. आप सदैव अर्थोत्पन्न के लिए एक से अधिक काम साथ में रखते हैं, परन्तु संतुलन नहीं कर पाते, इसलिए यंदाकदा अव्यवस्था संभव है।

१५. आपके मित्र तो कई होंगे, लेकिन मित्र आपसे विश्वासघात ही करेंगे, अतः इस ओर से पूरी सावधानी बरतें।

१६. प्रेम के क्षेत्र में अधिकांशतः आपको असफलता का ही सामना करना पड़ता है। यद्यपि आप इस ओर प्रयत्नशील रहते हैं, एवं कुछ लाभ उठा भी लेते हैं, परन्तु सफलता के ठीक पहले कुछ न कुछ ऐसा गड़बड़ा जाता है कि आप सफलता को छूते-छूते रह जाते हैं।

१७. आपकी पत्नी सुन्दर, सुशील एवं आज्ञाकारिणी होगी तथा पत्नी के कारण आप निश्चितता-सी अनुभव करेंगे।

१८. बाल्यावस्था सामान्य ढंग से ही व्यतीत होगी, लेकिन शिक्षा के लिए कई जगह भटकना पड़ा होगा।

१९. बाल्यावस्था में न तो आर्थिक सन्तुष्टि रही होगी और न

परिवार से कोई विशेष मदद ही मिली होगी।

२०. आपको घुड़सवारी, सुडौल शरीर, सरकारी नौकरी ही अधिक प्रिय हैं। उच्चाधिकारी होते हुए भी आप नपे-तुले जीवन से बंधे रहना चाहते हैं।

२१. यात्राएँ आपके जीवन में है तथा इन यात्राओं से आपको लाभ भी होगा। आप जब-जब भी थकावट अनुभव करें, यात्राएँ कर लिया करें, इससे आपका साहस द्विगुणित होगा तथा आप नये-नये अनुभव प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

२२. आप यदि उन्नति करना चाहते हैं तो सम्पर्क के द्वारा ही कर सकते हैं और आपका सम्पर्क ऊँचे-ऊँचे अधिकारियों तथा विशिष्ट व्यक्तियों से होगा भी।

२३. अनुशासन के क्षेत्र में आप कठोर रहेंगे। स्वयं अनुशासन-प्रिय होंगे तथा यह चाहेंगे कि आपके अधीनस्थ कर्मचारी एवं परिजन भी आपकी ही तरह अनुशासन के नियमों का पालन करें।

२४. आपकी आजीविका का साधन निम्न में से एक या एकाधिक होगा—तर्कप्रधान या कानून का कार्य, प्रोफेसर, लेक्चरार, शिक्षक, समाज सुधारक, वक्ता या ऐसा ही कोई कार्य जो बोलकर शिक्षा प्रदाता हो। प्रशासन से संबंधित कार्य, छापाखाना, पत्रिका निकालना, प्रकाशन अथवा लेखना कार्य, व्यापारिक कार्य, शेयरमार्केट संगठन, नेतृत्व या कर्मठ कार्य, अन्वेषण, अनुसंधान तथा शोध कार्य, पुरातत्व प्रेम, राजनीति, औद्योगिक केन्द्र, देव-मन्दिर से संबंधित पुजारी, मंत्र-वाहक अथवा धार्मिक कार्य आदि-आदि।

२५. बाल्यावस्था में यश की मात्रा कम ही रहेगी, परन्तु जीवन के प्रौढ़ावस्था में जाते-जाते आप पूर्णतः यशोभागी होंगे तथा कुछ ऐसा कार्य कर सकने में सक्षम होंगे, जिससे आपकी कीर्ति फैले तथा यशलाभ हो।

२६. गहरी निद्रा, स्वादिष्ट भोजनप्रियता, कठोर परिश्रम, सजावट सम्पन्न भवन, आराम आदि आपके जीवन की विशेषताएँ कही जा

सकती हैं।

२७. वाहन सुख छत्तीसवें वर्ष के पश्चात प्राप्त हो जाने की पूरी आशा है।

चेतावनी—१. आप हद से ज्यादा व्यय करने की ओर प्रवृत्त न हों, इससे आप अधिक असन्तुलन में उलझ जायेंगे;

२. दूसरों से न तो डाह करें और न उनका वैभव देखकर दुःखी हों, अत्यधिक शीघ्रता से न तो आप लखपति हो सकते हैं और न विद्वान।

३. आप कुछ न कुछ संचय करते रहिए, अन्यथा समय पड़ने पर आप अपने आपको अकेला ही महसूस करेंगे।

४. ईर्ष्या मत कीजिये, यह आपके व्यक्तित्व का घोर शत्रु है।

५. आप अपने रहन-सहन के स्तर को गिरने मत दीजिए, हल्की संगति भी मत कीजिये।

शुभवर्ष—आपके जीवन के ३; १२, २१, ३०, ३३, ३६, ४८, ५७, ६६, ७५ और ८४वें वर्ष अत्युत्तम जायेंगे। इसके अतिरिक्त वे सभी वर्ष आपके जीवन में श्रेष्ठ रहने चाहिए जो ३ के अंक से विभाजित होते हों। वे सन् भी आपके जीवन में उत्तम रहने चाहिए जो तीन से विभाजित होते हों।

विशेष—आपके टेलीफोन, मोटर, वाहन, मकान, आदि के नंबर भी ३ या ३ से विभाजित होने वाले हों तो ज्यादा श्रेष्ठ रहेंगे, भूलकर भी ७ से कटने वाले अंकों का वाहन न लें।

३ अंक के मित्र ६ तथा ९ भी हैं।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—संसार के वे सारे प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति, जिनका मूलांक ३ रहा है।

१. लार्ड रसेल	जन्म	१२ अगस्त	मूलांक	३
२. अब्राहम लिंकन	„	१२ फरवरी	„	३
३. विन्स्टन चर्चिल	„	३० नवम्बर	„	३
४. डार्विन	„	१२ फरवरी	„	३

५. जार्ज IV	जन्म	१२ अगस्त	मूलांक	३
६. डीन स्विफ्ट	"	३०नवम्बर	"	३
७. वाल्टेयर	"	२१ नवम्बर	"	३
८. मेक्डोनॉल्ड	"	१२ अक्तूबर	"	३
९. जगदीशचन्द्र वसु	"	३० नवम्बर	"	३
१०. डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	"	२१ अप्रैल	"	३
११. रूजवेल्ट	"	३० जनवरी	"	३
१२. नासिर (अरब)	"	२१ जनवरी	"	३
१३. जनरल साम मानेक शॉ	"	३ अप्रैल	"	३
१४ स्टालिन	"	२१ दिसम्बर	"	३
१५. हेनरी फोर्ड	"	३० जुलाई	"	३
१६. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद	"	३ दिसम्बर	"	३
१७. स्वामी विवेकानन्द	"	१२ जनवरी	"	३
१८. औरंगजेब	"	३ नवम्बर	"	३
१९. मेहतावचन्द गोलछा	"	१२ अक्तूबर	"	३
२० शम्मी कपूर	"	२१ अक्तूबर	"	३
२१. विम्मी (तारिका)	"	१२ नवम्बर	"	३
२२. हेलन	"	२१ नवम्बर	"	३
२३. वहीदा रहमान	"	३ फरवरी	"	३
२४. प्राण	"	१२ फरवरी	"	३
२५. डेविड	"	२१ जून	"	३
२६. ऋषिकेश मुकर्जी (निर्देशक)	"	३० सितम्बर	"	३

मूलांक-४

अंग्रेजी तारीख—४, १३, २२, ३१

आकाश मण्डल में सर्वाधिक विस्फोटकीय ग्रह यदि कोई है तो वह हर्षल ग्रह है, जो कि आपका प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह है। इसका सीधा सम्बन्ध सूर्य से है, सूर्य स्वयं ही प्रज्ज्वलनशील, ऊष्ण एवं तेज है, अतः हर्षल में भी इन्हीं गुणों की प्रचुरता खगोलविदों ने कही है।

हर्षल विशेषतः जीवन से उथल-पुथल करने वाला ग्रह है, अर्थात् जिसका मूलांक ४ होता है, उनके जीवन में अच्छी और बुरी घटनाएँ घटती रहती हैं, आकस्मिक घटनाओं की प्रचुरता रहती है, अर्थात् अच्छा, शुभ, प्रमोशन, धनागम, भाग्यवृद्धि आदि भी आकस्मिक एवं त्वरित रूप से होगी तथा बुरा, अशुभ, पतन, व्यय, संकट आदि भी आकस्मिक रूप से ही आयेंगे।

ये व्यक्ति बीच में कहीं नहीं हैं या तो सर्वोच्च शिखर पर हैं या फिर ये पतन के गर्त में हैं। कई बार ऐसा पढ़ने या देखने में आया है कि आज जो राष्ट्रपति है; देश के सर्वोच्च पद पर आसीन है, वही कल राजद्रोही करार कर जेल के सींखचों में बन्द कर दिया जाता है। ऐसा परिवर्तन हर्षल प्रधान व्यक्तियों के जीवन में ही घटित हो सकता है।

आपकी विशेषताएँ—१. आपका जीवन निरन्तर उथल-पुथल एवं संघर्ष-प्रधान जीवन है। कोई भी कार्य, चाहे वह छोटे से छोटा हो चाहे बड़े से बड़ा, उसके सम्पन्न होने में एक बार तो बाधा आयेगी ही,

बिना बाधा या अड़चन के आपका कोई कार्य सम्पन्न हो जाय, इसमें संदेह है।

२. हर्षल ग्रह जहाँ आपके जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, वहाँ आपकी आयु तथा भाग्य पर भी इसका पूर्ण नियंत्रण है, अतः भाग्योन्नति में भी लगातार बाधाएँ एवं परिवर्तन होते रहेंगे। यही नहीं, आपका स्वभाव मोम से भी मृदु और सूर्य से प्रचण्ड होगा। जब क्रोध आयेगा, तब आगा-पीछा कुछ भी दिखाई नहीं देगा, स्वयं की हानि भी कई बार इसी क्रोध के कारण हो जाती है, परन्तु उस समय आपको इसका भान नहीं होता। जितना जल्दी क्रोध चढ़ता है उतना ही तीव्रता से वह उतर भी जाता है। क्रोध उतर जाने पर पश्चात्ताप भी होता है और अपने हाथों की हुई हानि पर दुःख भी।

३. आकस्मिकता आपके जीवन की विशेषता है। यदि आप लखपति बनेंगे तो कुछ ऐसा ही संयोग होगा कि आप कुछ ही दिनों में लखपति बन जायेंगे और अगले कुछ ही दिनों में आप पुनः कर्जदार भी हो सकते हैं।

४. यद्यपि जीवन उथल-पुथल से भरा, संघर्षपूर्ण एवं श्रमसाध्य होगा, परन्तु बीच-बीच में उन्नति के अवसर भी आते रहेंगे। यह अलग बात है कि आप इनका उपयोग भी कर पाते हैं या नहीं अथवा उन्नति के मौकों को पहचान भी पाते हैं या नहीं।

५. आपके स्वभाव, आपके विचार, आपकी रीति-नीति और आपकी योजनाओं के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। प्रायः आप कुछ और योजना बना दें तो शाम को उसमें आमूल परिवर्तन भी कर सकते हैं। आपके विरोधी इसी बिन्दु पर परास्त होते हैं।

६. मन में बात को दबा कर रख सकते हैं, आपके पास गया हुआ रहस्य, रहस्य ही बना रहेगा, क्योंकि आपके मन में क्या योजना है तथा निकट भविष्य में आप क्या करने वाले हैं, इसका अनुमान विरोधी क्या आपके परिवार और आपकी पत्नी तक नहीं लगा सकते।

जीवन में शत्रुओं की कमी नहीं रहेगी, आप एक शत्रु को परास्त करेंगे तो दस नये शत्रु उत्पन्न होंगे। यद्यपि पीठ पीछे वे कुचक्र रचेंगे, परेशानियां खड़ी करेंगे, अफसरों के कान भरेंगे और अपने तरफ से कुछ भी बाकी नहीं रक्खेंगे, परन्तु इन सबसे होगा कुछ भी नहीं, वे आपके सामने आते ही श्रीहीन और परास्त से अनुभव होने लगेंगे। शत्रु आपको परेशान कर सकता है, बिगाड़ रत्ती-भर नहीं कर सकता।

८. यद्यपि मित्र बनाने की कला आपको आती है और आपके मित्र बनेंगे भी तुरन्त, परन्तु शीघ्र ही मित्रता का जोश ठंडा पड़ जाएगा और कुछ ही समय बाद आप अनुभव करेंगे कि जो आपका मित्र था वही आपका शत्रु बन गया है तथा आपके विरुद्ध कुचक्र रचने में अग्रणी है, अतः आपको चाहिए कि आप शत्रुओं से नहीं अपितु मित्रों की ओर से सावधान रहें।

९. आपके मित्र भी अधिकतर वही होंगे, जो किसी विशेष क्षेत्र में अगुआ हैं, जिनका दिमाग ऊँचा है, जिनको क्रोध तुरन्त आ जाता है तथा जो मंगल और सूर्य जैसे ऊष्ण ग्रहों से प्रभावित हैं और ऐसे ही व्यक्तियों से आपकी मित्रता निभेगी।

१०. यद्यपि आप फूंक-फूंककर, सँभल-सँभल कर काम करने वालों में से हैं, परन्तु फिर भी आपके द्वारा कुछ ऐसे कार्य हो जाते हैं, जो भविष्य में ठीक नहीं रहते तथा जिनसे आपको क्षति उठानी पड़ती है, परन्तु एक बात और है, ऐसे उल्टे-सीधे कार्य कभी-कभी आपको लाभ भी पहुँचा देते हैं।

११. आप त्वरित निर्णय नहीं ले पाते। किसी भी समस्या पर घण्टों सोचते रहते हैं, परन्तु फिर भी उसका परिणाम आपको दृष्टिगोचर नहीं होता। आप न तो यह निर्णय कर पाते हैं कि मुझे उक्त कार्य प्रारम्भ करना चाहिए या नहीं और न इसके बारे में अनुमान ही लगा सकते हैं कि इस प्रकार का कार्य प्रारम्भ करने से कितना लाभ या हानि हो सकती है।

१२. आप प्रत्येक समस्या को चाहे वह शैक्षणिक हो, चाहे सामा-

जिक, चाहे राजनैतिक हो, चाहे वैयक्तिक—दूसरों के सामने रख कर उनसे सलाह लेते हैं और वे जो कुछ भी कहते हैं, आप उनकी बात मान कर तदनुसार कार्य करते हैं। स्वतंत्र निर्णय लेना आपके लिए असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

१३. स्वभाव उग्र है और यह आपकी प्रगति का सबसे बड़ा रोड़ा है, क्योंकि इस उग्र स्वभाव के कारण ही आपके प्रशंसक भी आपके आलोचक बन जाते हैं। आप यदि किसी कार्यालय के प्रधान हैं तो निश्चय ही आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे भयभीत हैं। यह अलग बात है कि कुछ लोग झूठी चाटुकारिता से आपको प्रसन्न रख रहे हों, परन्तु मौका मिलने पर वे ही आपका तख्ता पलटने में अग्रणी होंगे।

१४. कानून और नियम आप जानते हैं, पर कानून तथा नियमों को तोड़ना आप अपना अधिकार समझते हैं, अतएव कभी-कभी इस प्रकार के कार्य करने से आप उलझ भी जाते हैं। हर समय चौकन्ने बने रहते हैं, लेकिन कभी-कभी यह चौकन्नापन इतना अधिक बढ़ जाता है कि वह सनकीपन में बदल जाता है। आपको चाहिए कि आप दूसरों पर विश्वास करें, दूसरों को विश्वास दें तथा कुछ ऐसे कार्य करें कि लोग आपके व्यवहार से भयभीत न हों अपितु श्रद्धालु बनें।

१५. आप अपने स्वार्थ को ही सर्वाधिक प्राथमिकता देते हैं। यदि आपके स्वार्थ साधन से दूसरों का भारी नुकसान भी हो रहा हो तो भी आप उस ओर विचार ही नहीं करते और दूसरों का अहित करके भी अपना स्वार्थ पूरा कर लेते हैं, परन्तु जीवन में कभी-कभी ऐसे भी क्षण आयेंगे, जब आप परिस्थितियों से झकझोरे जायेंगे तथा आप में यह भावना भी बनेगी कि मैं जो कुछ और जिस रूप में कह रहा हूँ, वह उचित और सर्वजनहितैषी नहीं है।

१६. आप कई बार अपने आपको अलग-अलग और उदास-सा भी अनुभव करेंगे। कुछ ऐसा महसूस होगा कि जैसे आप अकेले हैं, निपट अकेले, कोई भी आपका साथ देने को तैयार नहीं, सभी आपके विरुद्ध षड्यन्त्र में रत हैं।

१७. आप फिजूल खर्च न करें। जीवन में उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि आप धन का महत्त्व समझें और संचय की ओर ध्यान दें। आप उतना ही व्यय करें जितना आवश्यक है, आवश्यक ही नहीं. अत्यावश्यक है।

१८. आप एक श्रेष्ठ प्रदर्शनकारी भी हैं। प्रदर्शनकारी इस अर्थ में कि आप संचय कम करते हैं और उसका प्रदर्शन बढ़ा-चढ़ा कर करते हैं। लोग पूरी तरह से भ्रम में रहते हैं। आपके पास जितनी पूंजी है, उससे कई गुना ज्यादा पूंजी होने का अनुमान लोग लगाते हैं। आप सुनते हैं, पर उसका विरोध नहीं करते और इस प्रकार वह भ्रम बनता रहता है, पनपता रहता है।

१९. हो सकता है, आपके पास आकस्मिक रूप से धन आ जाय परन्तु यदि ऐसा संयोग नहीं बैठा, तो आपको वृद्धावस्था में कठोर परिश्रम करना पड़ेगा तथा धन प्राप्ति के लिए जरूरत से ज्यादा परेशान होना पड़ेगा।

२०. मित्रों की भीड़ में अवश्य ही दो-चार मित्र आपके प्रति पूरी हमदर्दी रखेंगे। वे आपके सच्चे विश्वासपात्र होंगे और इस प्रकार के मित्र यदि आपको प्राप्त हो जाते हैं, तो निश्चय ही आपका जीवन सुखी और सानन्द व्यतीत हो सकता है। आप यों तो त्याग करते नहीं, पर एक बार निश्चय कर लेते हैं, तो फिर पीछे भी नहीं हटते।

२१. सच कहा जाय तो आप हद से ज्यादा उतावले हैं, जरूरत से ज्यादा असहिष्णु हैं, जो कुछ भी कार्य होना चाहिए, तुरन्त होना चाहिए, उसमें देरी या रुकावट, विलम्ब और व्याघात आपको सह्य नहीं।

२२. ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ेगी आपकी स्मरणशक्ति कमजोर होती चली जायेगी। मस्तिष्क की यह शिथिलता आपके उग्र स्वभाव तथा क्रोध के कारण है, परन्तु यही नहीं, इससे एक और बात हो जायेगी, और वह है वंशपरम्परागत मस्तिष्क शिथिलता। यह मस्तिष्क शिथिलता आपकी संतान में भी आ सकती है, अतः आपको चाहिए कि आप

अपने पर नियंत्रण रक्खें, मस्तिष्क को भड़कने न दें।

२३. पत्नी का स्वास्थ्य कमजोर रहेगा, उसे पेट-संबंधी या आँतों संबंधी कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। प्रौढ़ावस्था में आंतों से संबंधित रोग का ऑपरेशन भी हो सकता है। पत्नी का स्वभाव चिड़-चिड़ा होगा।

२४. आप अपने हृदय पर नियंत्रण रखें। मूलांक चार वाले व्यक्ति अधिकतर वृद्धावस्था में हृदय रोगी देखे गये हैं अथवा कोई ऐसा गुप्त रोग होगा, जिसका निदान डॉक्टरों-वैद्यों से भी सम्भव नहीं।

२५. कला प्रेम नहीं है, पर इस प्रकार का आडम्बर रखेंगे, प्रद-र्शन कुछ ऐसा ही करेंगे कि जैसे आप ललित कलाओं के अच्छे पारखी हैं, समय-समय पर संगीत-सम्मेलनों, चित्रप्रदर्शनियों तथा ऐसे ही कुछ आयोजनों में जाते भी रहेंगे।

२६. पिता का सुख स्वल्प ही है। पिता की सम्पत्ति प्रथम तो प्राप्त होगी ही नहीं, यदि होगी भी तो उसमें कई प्रकार की बाधाएँ एवं परेशानियाँ आती रहेंगी। न तो आपको भाइयों तथा सम्बन्धियों का सुख है और न पुत्र का ही। पुत्र होंगे अवश्य, पर लेनदार ही होंगे देनदार नहीं।

२७. अपनी युवावस्था में आपको मनपसन्द कार्य या नौकरी अथवा व्यवसाय मिलने में काफी अड़चनें आयेंगी। विद्याध्ययन में भी बाधाएँ आती रहेंगी, परन्तु स्वजनों से नहीं, अपितु विजातीय लोगों की कृपा एवं हेतु से आप शिक्षा सम्पन्न कर सकेंगे तथा जीवन में ऊँचे उठ सकेंगे।

२८. किसी एक ही धारा में चलने वाले जीव आप नहीं। एक उद्यम शुरू किया और वह ज्योंही लाभ देना प्रारम्भ करेगा कि आप दूसरे व्यवसाय में उलझ जायेंगे। इस प्रकार जीवन में आप एक से अधिक व्यवसाय करेंगे तथा आय का हेतु बनायेंगे।

२९. मन से आप रईस हैं, लेकिन जिस समय आपके पास पैसा नहीं होता या विपरीत परिस्थितियाँ होती हैं, उस समय आपकी स्थिति

देखने लायक होती है परन्तु ज्योंही आकस्मिक रूप से या श्रम से चार पैसे आपके हाथ में आ जाते हैं तो फिर आप अपने आपको शहन्शाह से कम भी नहीं समझते और व्यय बढ़ जाता है।

३०. आप यदि जीवन में प्रगति करना चाहते हैं, समाज में प्रतिष्ठा कायम रखना चाहते हैं तो आपको चाहिए कि आप 'ना' करना सीखें। दृढ़ता से मना करना सीखें। दूसरों को भुलावे में रखना, झूठे आश्वासन देना, थोथे 'हाँ' भर देना ठीक नहीं, क्योंकि आप फिर वे कार्य पूरा नहीं कर सकते और इस प्रकार आपकी मर्यादा पर बट्टा लगता है और यही कारण है कि आपके मित्र आपके आलोचक और शत्रु बन जाते हैं।

सावधानियाँ—१. यथासंभव शान्त रहें, घर में हो-हल्ले की अपेक्षा शान्त वातावरण रक्खें, ऐसा कोई भी कार्य न करें, जिससे आपके रक्त में व्यर्थ का उबाल आ जाय।

२. दूसरों की निन्दा भूलकर भी न करें, हो सके तो उनकी प्रशंसा ही करें।

३. झूठे आश्वासन किसी को भी न दें, यदि आप काम कर सकें तो 'हाँ' कहें, अन्यथा स्पष्ट शब्दों में मना कर दें, इससे आपका व्यक्तित्व बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं।

४. झूठी शान-शौकत से दूर ही रहें, अपनी जैसी स्थिति है, उसके अनुसार ही रहन-सहन रक्खें। दूसरों के रहन-सहन, खान-पान से अपनी तुलना न करें और न बढ़कर उनके समान बनने का प्रयत्न ही करें।

५. व्यर्थ का व्यय न करें। संचय की ओर ध्यान दें तथा कुछ न कुछ बचाते रहें।

६. शरीर में रक्त की मात्रा कम रहेगी। वृद्धावस्था में रक्त-सम्बन्धी बीमारियाँ उठ सकती हैं, अतः समय रहते ही इस ओर साव-धानी बरतें तथा चिकित्सक से सलाह लेकर अपना खान-पान इस प्रकार का बनावें जिससे रक्त न्यूनता का शिकार न होना पड़े।

७. जुकाम व छूतछात से संबंधित बीमारियाँ आपको तुरन्त हो

सकती है, अतः इस ओर से सावधान रहें।

८. जानवर, विशेष कर सींग-नख वाले जानवरों से बच कर ही रहें, क्योंकि जीवन में इनसे घायल होने के मौके सहज ही आ सकते हैं।

९. यात्रा में सावधानी बरतें तथा आंख मींच कर किसी का विश्वास न करें।

१०. अपनी उन्नति के समय के प्रति जागरूक रहें।

११. मृदुभाषी एवं मितभाषी बनें।

निर्बल समय—आकाश-मण्डल में जब-जब भी सूर्य की स्थिति निर्बल होगी, वह समय आपके लिए अधिक अनुकूल नहीं कहा जा सकता। इस दृष्टि से लगभग अक्तूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर का समय आपके लिए साधारण कहा जा सकता है। इस अवधि में कार्य में रुकावट, स्वास्थ्य में क्षीणता, अनुत्साह, आलस्य, व्यर्थ की परेशानी तथा भागदौड़ बनी रहेगी।

उन्नत समय—आकाश-मण्डल में रवि की प्रबल स्थिति ही हर्षल की प्रबल स्थिति मानी गई है, अतः २१मार्च से २८ अप्रैल, तथा १० जुलाई से २० अगस्त तक का समय आपके लिए श्रेष्ठ, उन्नतिदायक एवं प्रभावशाली माना जाता है।

शुभ तारीखें—वे सभी व्यक्ति या महिलाएं, जिनका जन्म ४, १३, २२ और ३१ तारीखों को हुआ है, आपके लिए सहायक एवं सहयोगी हैं। ये तारीखें आपके जीवन में भी मोड़ देने वाली सिद्ध होंगी। यदि आप कोई शुभ कार्य, व्यवसाय आदि प्रारम्भ करना चाहें तो आपको चाहिए कि आप इन तारीखों में से किसी एक तारीख से ही कार्य प्रारंभ करें तो वह कार्य निस्सन्देह सिद्धिदाता बनेगा। अपने से उच्च अधिकारी से मिलने के लिए इन्हीं तारीखों का चुनाव करें।

शुभ दिवस—शनिवार, रविवार तथा सोमवार आपके लिये शुभ फलदायक हैं। यदि अनुकूल तारीखों को ही उपयुक्त वार भी आता हो तो आपके लिए प्रबल लाभदायक सिद्ध होगा।

शुभ रंग—सभी प्रकार के चमकदार रंग, नीला, खाकी या भूरा

रंग आपके लिए विशेष अनुकूल हैं। आप अपना ड्राइंगरूम इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का बनवावें या पर्दे आदि इन्हीं रंगों के लगावें तो आपके व्यक्तित्व को शुभ फल देने वाला साबित होगा।

शुभ रत्न—आपका प्रधान रत्न नीलम है, जिसे संस्कृत में इन्द्र नीलमणि, हिन्दी में नीलम, फारसी में नीलविल याकूत और अंग्रेजी में सेफायर टरग्यूज (Sapphire Tuirgouse) कहते हैं।

नीलम गहरे नीले रंग का, मोर पंख के रंग का चमकीला, चिकना तथा पारदर्शीवत् होना चाहिए। ऐसा नीलम लगभग छः रत्ती का हो तथा उसे पंचधातु की अँगूठी में जड़कर मध्यमा उँगली में शनिवार को धारण करना चाहिए। मेरे अनुभव में यह भी आया है कि कभी-कभी नीलम रत्न अधिक सहयोगी प्रतीत नहीं होता, तो मूलांक चार वाले व्यक्तियों को गोमेद रत्न रत्ती का शनिवार को मध्यमा उँगली में धारण करना चाहिए।

व्रतोपवास—आपको सोमवार तथा गणेश चतुर्थी का व्रत करना चाहिए। गणेश चतुर्थी का व्रत तो आपके लिए सभी प्रकार से सहायक एवं श्रेष्ठ फलदाता सिद्ध होगा। इस दिन आप गुड़, घी, आटे को मिलाकर लड्डू बनावें तथा गणेशजी को भोग लगाकर फिर भोजन करें। भोजन एक समय ही करें।

देवता—आपके प्रधान देवता गणपति हैं, जो कि सभी प्रकार के दुःख तथा अनिष्टों का नाश करने वाले हैं। आप अपने घर में गणेशजी की मूर्ति अथवा गणेशजी का चित्र रक्खें तथा नित्य प्रातःकाल उनके सामने दीपक जलाकर, आराधन कर, फिर नित्य कार्य आरम्भ करें।

ध्यान—गणपति के सामने सुगंधित अगरबत्ती और घी का दीपक जलाकर शुद्ध उच्चारण स्वर में निम्न गणपति ध्यान पढ़ें।

द्वि चतुर्दश वर्ग भूपिताङ्ग
शशि सूर्याग्नि विलोचनं सुरेशम्।
अहि भूषित कण्ठ मक्ष सूत्रं
भ्रमयेत्तं हृदये गणेशम् ॥

मंत्र—आप धनाभाव से पीड़ित हों या परेशानी में हों अथवा किसी भी प्रकार की विपत्ति में हों तो नित्य पाँच मालाएँ निम्न मंत्र की जपें, इससे आपके सभी दुःख दूर होकर कार्य सिद्ध होगी।

॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानाय स्वाहा ॥

मित्रता—जिन स्त्रियों या पुरुषों का मूलांक चार है अथवा जिनका जन्म ४, १३, २२, और ३१ तारीखों को हुआ है, उनसे यदि आप मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न करें तो तुरन्त सफल हो सकते हैं।

यदि आप विवाह करना चाहते हैं या चाहती हैं, अथवा प्रेम संबंध बढ़ाना चाहते हैं तो उन स्त्री-पुरुषों से आप विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं, जिनका जन्म २१ मार्च से २८ अप्रैल के बीच हुआ है अथवा १० जुलाई से २० अगस्त के बीच हुआ है एवं उनका मूलांक भी ४ है। ऐसे स्त्री-पुरुष आपके लिए वरदानदायक सिद्ध हो सकते हैं।

शुभ वर्ष—चार मूलांक वाले व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, १३, २२, ३१, ४०, ४६, ५८, ६७, ७६ और ८५वाँ वर्ष अत्युत्तम सिद्ध होंगे, साथ ही ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३ ६२, और ७१वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा। जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इन्हीं वर्षों में घटित होंगी।

कुछ पाश्चात्य विद्वानों की राय में चार मूलांक वाले व्यक्तियों के लिए १ का अंक भी शुभ फलदायक है, अतः १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ तथा ८२वाँ वर्ष भी सफल कहा जाता है, पर मेरे अनुभव पर यह शत-प्रतिशत सही नहीं उतरता। इसलिए चार मूलांक वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे ऊपर के वर्षों को भी जीवन में परख कर फिर निर्णय लें।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—संसार के वे प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति जिनका मूलांक चार रहा है।

१. जार्ज वाशिंगटन	जन्म	१३ अप्रैल	मूलांक ४
२. लार्ड बायरन	"	२२ जनवरी	" ४

३. जार्ज ईलियट	जन्म	२२ नवम्बर	मूलांक	४
४. लार्ड बेडन पॉविल	"	२२ फरवरी	"	४
५. फ़ेरेडे	"	२२ अक्तूबर	"	४
६. प्रिंस चार्ल्स	"	३१ दिसम्बर	"	४
७. फ्रांसिस बेकन	"	२२ जनवरी	"	४
८. थामस हक्सले	"	४ मई	"	४
९. आर्थर नान डायल	"	२२ मई	"	४
१०. सन्त आगस्टाइन	"	१३ नवम्बर	"	४
११. कान्ट	"	२२ अप्रैल	"	४
१२. सिकन्दर महान	"	२२ जुलाई	"	४
१३. राष्ट्रपति रदरफोर्ड	"	४ अक्तूबर	"	४
१४. श्री रामानुजाचार्य	"	४ अप्रैल	"	४
१५. जनरल फ्रेंको	"	४ दिसम्बर	"	४
१६. सेठ जमनालाल बजाज	"	४ नवम्बर	"	४
१७. मोहनलाल सुखाड़िया	"	३१ जुलाई	"	४
१८. वैजयन्तीमाला	"	१३ अगस्त	"	४
१९. नूतन	"	४ जून	"	४
२०. प्रेमधवन	"	१३ जून	"	४
२१. अशोककुमार	"	१३ अक्तूबर	"	४
२२. किशोर साहू	"	२२ अक्तूबर	"	४
२३. एस० डी० वर्मन	"	२२ अक्तूबर		४
२४. जयकिशन (संगीतकार)	"	४ नवम्बर		४

मूलांक ५

अंग्रेजी तारीख—५, १४, २३

पांच वह मूलांक है, जिसे हम पहला विचारपूर्ण मूलांक कह सकते हैं। नई से नई युक्तियों, नये से नये विचारों एवं सर्वथा अद्भुत दाव-पेचों, अकाट्य तर्कों एवं विलक्षण सूझ-बूझ से भरा यह मूलांक अपने आप में निराला है। इस मूलांक वाले व्यक्ति का मस्तिष्क सर्वाधिक क्रियाशील है, जो हर समय कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। स्वयं झुक सकता है, पर दूसरों के घुटने टिकवा सकता है। खुद विचारों को बदल सकता है, पर दूसरों को हतप्रभ करने के पश्चात् और खुद लुट सकता है, पर दूसरों को सर्वथा नंगा और फकीर बनाने के पश्चात्।

यह उन व्यक्तियों एवं स्त्रियों का मूलांक है, जिनका जन्म किसी भी महीने की ५, १४ या २३ तारीख को हुआ है। इस मूलांक का प्रतिनिधि ग्रह बुध है, जो सौम्य, विचारवान, पंडित, बुद्धिमान, विनोदी और भौतिक सुखों के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ग्रह है। फलस्वरूप बुध अपने अधीनस्थ स्त्री-पुरुषों को भी अपने विचारों के अनुकूल बना देता है, अतः वे सभी स्त्री-पुरुष, जिनका मूलांक ५ है स्वभाव से विनोदी, मस्तिष्क से उर्वर, विचारों से सुलझे हुए और जीवन में क्रियाशील होते हैं। ऐसे व्यक्ति हर समय कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। समय का मूल्य वे जानते हैं और उसका पूरी तरह से सदुपयोग करते हैं।

प्रतिनिधि ग्रह—आपका प्रतिनिधि ग्रह बुध है, जो सूर्य से

३६,०००,००० मील दूर है तथा जिसकी भ्रमणगति ८८ दिन है, इसकी परिधि का झुकाव ७°० है तथा विषुवतीय व्यास लगभग ३,१००मील है यह ग्रह ज्ञान-विज्ञान, तर्कशास्त्र, ज्योतिष तथा राज्य, व्यापार का कारक ग्रह है। विशेष कर ५ मूलांक वाले व्यक्ति बुध के प्रभाव के कारण व्यापारिक कार्यों में चतुर होते हैं। भले ही नौकरी या अन्य कार्य करते हों, परन्तु उनका हृदयगत भाव व्यापार प्रधान ही होता है। यदि ये व्यक्ति व्यापार सम्बन्धी कार्यों में लगें तो निस्सन्देह सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

निर्बल समय—बुध ग्रह सूर्य औरपृथ्वी का माध्यम होने के कारण वर्ष में कई बार अस्त हो जाता है। गगन मण्डल में जब-जब भी यह ग्रह अस्त या वक्री होगा, पाँच मूलांक वाले व्यक्तियों के लिए समय सुविधाजनक नहीं रहेगा। व्यापार में हानि, आर्थिक संकट, मानसिक चिन्ता, दुर्बलता, शारीरिक क्षीणता, व्यर्थ का वाद-विवाद आदि स्थितियाँ बनेंगी। चर्म रोग, रक्त विकार आदि बीमारियों से ग्रस्त होंगे तथा कार्यसम्पन्नता में बाधाएँ आएँगी, अतः आपको चाहिए कि वे ऐसे समय में सावधानी बरतें तथा कोई भी ऐसा व्यापारिक समझौता न करें, जिसका दूरगामी प्रभाव हो।

मई, दिसम्बर तथा सितम्बर मास आपके लिए निर्बल हैं, क्योंकि इस दिनों बुध की स्थिति क्षीण-सी रहती है, अतः इस समय में स्वास्थ्य पर नियंत्रण रखिये, व्यापारिक लेन-देन करते समय सावधानी बरतें तथा आर्थिक पक्ष की ओर जागरूकता रखें। शत्रु तथा मित्र दोनों ओर से ध्यान रखना आपके लिए जरूरी है।

उन्नत समय—प्रत्येक ऐसा कार्य, जो आपकी उन्नति के लिए है, उन्नत समय में ही प्रारम्भ कीजिये। नया व्यापार प्रारम्भ करना, आर्थिक लेन-देन करना, मकान खरीदना या बेचना आदि कोई भी कार्य आप श्रेष्ठ समय में ही प्रारम्भ करें। प्रत्येक वर्ष २१ मई से २० जून तथा २१ अगस्त से २० सितम्बर तक का समय आपके लिए अत्यधिक उपयोगी, महत्वपूर्ण एवं भाग्यसाधक है, अतः इस श्रेष्ठ समय का सदु-

पयोग करें।

शुभ तारीखें—आपको प्रत्येक मास की ५, १४ और २३वीं तारीख अनुकूल एवं श्रेष्ठ हैं, अतः कोई भी श्रेष्ठ कार्य इन्हीं तारीखों में से किसी एक तारीख को प्रारम्भ करें तो अधिक ठीक रहेगा। यदि २१ मई से २० जून तथा २१ अगस्त से २० सितम्बर के बीच की तारीखों में किसी तारीख को कार्य प्रारम्भ करें तो वह निश्चय ही सफलतासूचक एवं भाग्यवर्धक होगा। अपने से उच्चाधिकारियों से मिलते समय भी इन तारीखों को स्मरण रक्खें तथा अनुकूल कार्य कराने के लिए पत्र भी इस प्रकार या उस तारीख को लिखें कि वह ५, १४ और २३ तारीख को ही सम्बन्धित अधिकारी को मिले।

शुभ दिवस—बुधवार, चन्द्रवार तथा शुक्रवार ये तीनों वार आप के लिए अनुकूल हैं। यदि सम्बन्धित तारीखों को ही ये वार पड़ते हों तो वह दिन विशेष अनुकूल मानना चाहिए। यात्रा वगैरह भी ऐसे ही शुभ दिन प्रारम्भ करनी चाहिए।

शुभ रंग—आपके लिए हल्का हरा रंग सौभाग्यवर्धक है। श्वेत तथा भूरा रंग भी अनुकूल है, अतः आपको चाहिए कि आप अपने साथ हर समय हल्के हरे रंग का रूमाल रक्खें तथा कमरे के पर्दे, सोफा-सैट के कवर, कुशन ड्रा आदि भी इन्हीं रंगों के हों तो आपके लिए अधिक अनुकूल, सुखवर्धक तथा श्रेष्ठ रहेंगे।

शुभ रत्न—आपका प्रधान रत्न पन्ना है, जो पाँच रंगों में पाया जाता है।

(१) तोते के पंख के समान रंग वाला।
(२) हरे पानी के रंग जैसा
(३) सरेष के पुष्प के रंग के समान
(४) मयूर पंख जैसा, और
(५) हल्के सेंडुल पुष्प के समान।

आप इनमें से किसी भी रंग का पन्ना धारण कर सकते हैं, परन्तु वह निर्दोष, चमकीला, पारदर्शी, तेजस्वी तथा अखण्ड होना जरूरी है

तथा कम से कम ६ रत्ती का हो, जिसे सबसे छोटी अँगुली कनिष्ठिका में शुभ दिन धारण करना चाहिए। पन्ने के साथ प्लेटिनम की या सोने की अँगूठी हो, जिसमें पन्ना इस प्रकार से जड़ा हुआ हो कि वह अँगुली को स्पर्श करता हो। ऐसी मुद्रिका धारण करने से व्यक्ति तीव्र बुद्धि सम्पन्न तथा अपने प्रत्येक कार्य में सफल होता दिखाई देता है। व्यापारियों, विद्यार्थियों तथा नौकरी करने वाले व्यक्तियों को तो अवश्य ही धारण करना चाहिए।

देवता—आपका प्रधान देवता लक्ष्मी है। आपको चाहिए कि आप घर में लक्ष्मी की मूर्ति प्रतिष्ठापित करें या लक्ष्मी का कोई सुन्दर चित्र घर में रक्खें। प्रातःकाल स्नान आदि कर सुगंधित अगरबत्ती व दीपक जलाकर निम्नरूपेण ध्यान करें।

ध्यान

त्रैलोक्य पूजिते देवी कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया॥
पद्मा पद्मालया संपदुच्चैः श्री पद्मधारिणी॥
द्वादशैतानी नामानि लक्ष्मी संपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सहः॥

उपर्युक्त ध्यान को शान्त, स्थिरचित्त, सरल हृदय एवं भक्ति भाव से हृदय में लक्ष्मी की मूर्ति धारण कर करें तथा फिर नित्य १०८ बार निम्न मन्त्र का जप करें।

मंत्र—॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ॐ महा लक्ष्म्यै नमः।

इस प्रकार करने से व्यक्ति के समस्त दुःखों का मोचन हो जाता है तथा वह शीघ्र ही धनाधीश बनकर समस्त प्रकार के ऐश्वर्यों का भोग करता है, यह मेरा अनुभूत है।

शारीरिक स्वास्थ्य—बुध से प्रभावित व्यक्तियों को फ्लू, जुकाम आदि रोग तत्काल हो जाते हैं तथा कुछ न कुछ बीमारी बनी ही रहती

है, क्योंकि इनकी त्वचा कोमल, सप्राण एवं नरम होती है, जिसके कारण कीटाणु तुरन्त प्रभाव में आ जाते हैं। बाल्यावस्था में भी ये कई बार बीमार पड़ते हैं तथा एक-दो बार तो भयानक कष्ट भोगते हैं। ये व्यक्ति शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक कर पाते है या करते हैं, फलस्वरूप स्नायुओं पर विशेष दबाव रहता है। प्रौढ़ावस्था में ऐसे व्यक्ति अधिकतर स्नायु रोगों से पीड़ित देखे गए हैं। लगभग ६० प्रतिशत लोग मस्तिष्क रोगों से भी पीड़ित होते हैं। सिर दुखना, आधाशीश तथा कुछ ऐसे ही रोग बने ही रहते हैं, स्मरण-शक्ति कमजोर होती है तथा भूलने का स्वभाव प्रबल बनता जाता है। जीवन की प्रौढ़ावस्था में ही इन्हें रक्तचाप, हृदय-दौर्बल्य आदि का खतरा बना रहता है। रक्त संबंधी तथा चर्म रोग तो इन्हें घेरे ही रहते हैं, अतः इन्हें चाहिए कि वे अपने रक्त की शुद्धता पर विशेष ध्यान दें तथा कोई भी ऐसा कार्य न करें, जिससे रक्तोष्णता बने। यदि प्रारंभ में ही इस ओर ध्यान नहीं दिया तो पक्षाघात की भी संभावना बराबर बनी रहती है।

सावधानियां—१. आपको चाहिए कि आप उदासीनतापूर्ण वातावरण में न रहें और न ऐसा कोई कार्य करें जिससे पश्चात्ताप या दुःख हो अथवा दिमाग पर विशेष भार पड़ता हो।

२. हर समय प्रसन्नतापूर्ण वातावरण में रहें तथा बच्चों के साथ घुलने-मिलने का प्रयत्न करें, उनके साथ हँसें, खेलें, कूदें तथा आमोद-प्रमोद करें।

३. नित्य प्रातः-सायं टहलिए तथा जहाँ तक हो सके ऐसा टहलना मील-भर से कम न हो।

४. शरीर में रक्त की शुद्धता पर पूरा ध्यान दें, कैलशियम तथा विटामिन की कमी न होने दें तथा समय-समय पर चिकित्सक से सलाह लेते रहें।

५. सर्दी, जुकाम, फ्लू की ओर से सावधान रहें। अक्सर ऐसा देखा गया है कि आपको कोई रोग हो जाने के बाद वह जल्दी पिंड नहीं

छोड़ता।

६. रात को न पढ़ें तथा हृदय-दुर्बलता को यथासंभव भुला देने का प्रयत्न करें।

७. नमक का प्रयोग कम से कम करें।

व्रतोपवास—आप पूर्णिमा का व्रत करें तथा लक्ष्मीनारायण का पूजन करें। सत्यनारायण की कथा करें या करावें तथा उस दिन एक समय भोजन करें। यदि संभव हो सके तो रविवार को आप नमक का त्याग ही रक्खें। अलोना भोजन करे तथा सूर्यार्घ्य देकर फिर एक समय भोजन करें।

मित्रता—वे सभी व्यक्ति या स्त्रियाँ, जिनका मूलांक ५ हैं, आपके लिए श्रेष्ठ मित्र रहेंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आप शीघ्र ही घुल-मिल जायेंगे तथा किसी भी प्रकार का पर्दा बीच में नहीं रहेगा। व्यापार में साझेदारी, भागीदारी, विवाह, प्रेम या अन्य किसी भी मामले में आप ऐसे ही स्त्री-पुरुष चुनें, जिनका जन्म ५, १४ या २३ तारीख को हुआ हो। यदि आप विवाह करें तो यथासंभव इस बात का भी ध्यान रक्खें कि आप जिससे शादी करने के इच्छुक हैं, उसका जन्म २१ मई से २० जून अथवा २१ अगस्त से २० सितम्बर के बीच हुआ हो एवं उसका मूलांक भी ५ रहा हो। यदि ऐसा सहयोग आपको मिल गया तो वस्तुतः संसार क्षेत्र में आप सौभाग्यशाली हैं।

रोमांस—प्रेम के संबंध में भी आप उपर्युक्त रीति पर ही ध्यान रक्खें। पाँच के मूलांक को प्रधानता दें। जिनका मूलांक एक या तीन हैं, वे भी आपके राज में राजदार हो सकते हैं।

आपकी विशेषताएँ—१. आपके जीवन का सबसे बड़ा गुण है, दूसरों को सम्मोहित करने की कला। कुछ ही क्षणों की बातचीत में आप दूसरों को अपने विचारों के अनुकूल बना लेते हैं। यही नहीं, उसे अपना स्थाई मित्र बना लेते हैं, और इसी एक श्रेष्ठ गुण के कारण आप कभी भी कहीं पर भी अकेलापन महसूस नहीं करेंगे।

२. यात्राएँ करना आपका स्वभाव होगा तथा यात्राओं से आप

को आनन्द की प्राप्ति होगी, यह अलग बात हैकि आप अपने कामकाज में इतने अधिक व्यस्त होंगे कि यात्रा करने का समय ही न निकाल सकें, परन्तु किसी भी यात्रा से आप लाभ में ही रहेंगे, यह आप निश्चय ही समझिये।

३. आप प्रखर बुद्धि के हैं, आपका मस्तिष्क उर्वर है, बुध से प्रभावित रहने के कारण आप तुरन्त निर्णय लेने में सिद्धहस्त हैं। आप किसी भी आगन्तुक को देखते ही भाँप जाते हैं कि वह क्यों आया है? आपसे क्या कहना चाहता है? यही नहीं, अपितु आपका उर्वर मस्तिष्क तो यहाँ तक सोच बैठता है कि जब आगन्तुक यह बात कहेगा तो आप को तुरन्त क्या उत्तर देना है? इतना तुरन्त और पूर्व निर्णय ले लेना आपके ही मस्तिष्क की विशेषता कही जा सकती है।

४. आपमें सबसे बड़ा गुण है अपने आपको स्थिति स्थापकत्व बना लेना। जैसी परिस्थिति है, उसी के अनुसार अपने आपको ढाल लेना। बच्चों में आप नासमझ बच्चे हैं तो युवकों में क्रान्तिकारी युवक एवं प्रौढ़ों तथा वृद्धों में विवेकशील वृद्ध। इसीलिए हर जगह समाज के हर वर्ग में आपका सम्मान है तथा आपकी राय को महत्वपूर्ण समझा जाता है।

५. यद्यपि आप व्ययशील हैं तथा समय पड़ने पर जरूरत से ज्यादा भी खर्च कर डालते हैं तथापि आप तुरन्त ही अपने आपको सँभाल भी लेते हैं।

६. आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करते हैं, उस पर तन-मन-धन से लग जाते हैं। कोई नया विचार, कोई नयी योजना आपके दिमाग में आनी चाहिए, फिर तो उसके कार्यान्वयन में आप प्राणपण से लग जाते हैं। उस समय न आप व्यय की चिन्ता करते हैं, न श्रम की ओर यही वह गुण है जिससे कि आप अपने ही श्रम के कारण इस स्थिति तक पहुँच सके हैं, जिस स्थिति पर इस समय आप हैं।

७. आप एक ही प्रकार की आजीविका से सन्तुष्ट नहीं होंगे, एक साथ एक से अधिक कार्य चालू रखेंगे। आय के स्रोत भी एक से

अधिक बने रहेंगे तथा सभी पर आप कम-ज्यादा समय देते रहेंगे, श्रम करते रहेंगे। निकम्मा बैठना आपके वश की बात नहीं।

८. आप चाहे कोई भी व्यवसाय, व्यापार या नौकरी करते हों, परन्तु आपका मस्तिष्क मुख्यतः व्यापार प्रधान होगा। बालू के भी पैसे बना लेना आपके ही मस्तिष्क की विशेषता कही जा सकती है। हतोत्साहित होना तो आपने सीखा ही नहीं। यद्यपि बीच-बीच में आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा, असफलताओं का मुंह ताकना पड़ेगा परन्तु इससे आपके कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, आप उसी गति से कार्य करते रहेंगे।

९. आपको चाहिए कि जब भी संभव और सुविधा हो, आप व्यापारिक क्षेत्र में प्रविष्ट हों। या तो स्वतंत्र व्यापार प्रारंभ करें या किसीके साथ भागीदारी में कार्य करें, आपको निश्चय ही लाभ होगा। यही नहीं बल्कि आपके साथ जो भागीदार होगा, उसका भी आपके कारण भाग्योदय हो जायेगा।

१०. आपके जीवन में आकस्मिक धन प्राप्ति का योग है, अतः आप लॉटरी या सट्टा या ऐसे ही किसी कार्य में भी रत रहते हैं, जिससे एकमुश्त आकस्मिक लाभ हो सके। जीवन में दो-तीन अवसर ऐसे अवश्य हैं, जब कि भारी धन लाभ आकस्मिक रूप से होगा। यद्यपि बीच-बीच में आप गाँठ का गँवायेंगे भी, परन्तु इससे आप हतोत्साहित नहीं होंगे। आप अपनी हानि को अन्य तरीके से पूरी कर लेते हैं।

११. जीवन में वही व्यक्ति सफल होता है, जो जोखिम उठा सके, जोखिम उठावे ही नहीं, जोखिम उठाने के लिये हर समय तैयार भी रहे। आपके व्यक्तित्व में यह गुण पूर्ण रूप से मूर्तिमन्त है। जब भी चाहें, चाहे जिस क्षेत्र में हों, आप जोखिम उठाने को तैयार हैं, क्योंकि आप नये से नया प्रयोग करने को प्रस्तुत हैं। आपमें परिस्थितियों को भाँपने की शक्ति है तो परिस्थितियों के अनुसार बनने की विचित्र लोच भी है। समय, व्यक्ति और देश-परिस्थिति के अनुसार अपने आप को बना लेने की भी महत्त्वपूर्ण विशेषता है और यही गुण आपको

ऊँचा उठाने में समर्थ है।

१२. जीवन में कार्य की प्रधानता है और वही मुख्य भी है, परन्तु आप मूलतः भाग्यवादी व्यक्ति हैं, भाग्य को कर्म से भी अधिक महत्व देते हैं। वाह्य रूप में आप भले ही कर्म-सिद्धान्त की प्रशंसा करें, परन्तु आन्तरिक रूप में आप भाग्य का ही महत्व स्वीकार करते हैं और इसी भाग्यवादिता के कारण आप हानि-लाभ में समशीतोष्ण बने रहते हैं।

१३. यह आपका सौभाग्य है कि आपको सहायक मिलते ही रहे हैं। यदि एक सहायक या मित्र विमुख हुआ है तो दूसरा अपने आप उस स्थान पर आ गया है। तात्पर्य यह कि आपकी योजनाओं को सम्पन्न बनाने में हर समय सहायक, मददगार और मित्र मिलते ही रहे हैं। चाहे अनुकूल परिस्थितियों में, चाहे प्रतिकूल परिस्थितियों में, चाहे सुख में हैं, चाहे दुःख में, मित्रों एवं सच्चे हमदर्दियों की कमी नहीं रही। जीवन में संभवतः मित्रों का अभाव रहेगा भी नहीं।

१४. सीखने और समझने का आपमें विशेष माद्दा है। आप नौकरों के ही भरोसे नहीं रहते, अपितु किसी भी नये कार्य को, जटिल से जटिल मशीनरी को, पेचीदा व्यापारिक दाव-पेचों को आप स्वयं समझने का प्रयत्न करते हैं, उसे सीखने की कोशिश करते हैं और शीघ्र ही उसमें पारंगत हो जाते हैं, परन्तु शीघ्र ही इस सीखने-सिखाने के कार्य में शिथिलता आ जाती है और आप एक लाइन को छोड़ दूसरी लाइन में बढ़ जाते हैं।

१५. भाग्य जीवन के २३वें साल के साथ देगा तथा ३४वें वर्ष से यह अधिक अनुकूल अवसर उपस्थित करेगा। जीवन के मध्य काल में आकस्मिक लाभ होगा और आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं की पूर्ति कर सकेंगे।

१६. शरीर को सँभाल रखने से ही आप प्रौढ़ावस्था में भी जवान नजर आते हैं। आपके शरीर की काठी कुछ इस प्रकार है कि आप उससे भारी से भारी काम ले सकते हैं, जरूरत से ज्यादा समय तक काम में ले सकते हैं। शरीर जर्जर, ढीला और कमजोर मरते दम तक

नहीं बनेगा।

१७. आप मित्रों से सम्पर्क बनाते हैं तो जीवन-भर उसे निभाइये बीच में छोड़िये मत, क्योंकि ये मित्र ही आपके जीवन की सम्पत्ति हैं, सुख-दुःख के भागी हैं और उन्नति के सोपान हैं।

१८. ऊंचे लोगों से मिलते-जुलते रहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे आपके बारे में गलत धारणा बना लें। कभी-कभी बिना स्वार्थ के भी मिलते चले जाना आपके व्यक्तित्व का निखार है।

१९. यह माना कि आपको एक से अधिक कलाओं का ज्ञान है तथा किसी भी विषय पर अधिकारपूर्ण ढंग से बोल सकते हैं, यहां तक कि आप दूसरों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा उनके हृदय में अपने प्रति सम्मानपूर्ण स्थान भी बना सकते हैं, परन्तु इसके साथ ही साथ आप उन पर हावी होने का प्रयत्न मत कीजिये, बेरहमी से उनके तर्कों को मत काटिये।

२०. आप स्वभाव से कुछ ज़ददबाज हैं, जल्दी ही अप्रसन्न हो जाते हैं और जल्दी ही प्रसन्न भी हो जाते, यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं। किसी भी व्यक्ति के बारे में राय बनाने से पूर्व उसके पक्ष और विपक्ष दोनों पर गम्भीरतापूर्वक चिंतन कर फिर निर्णय लीजिये और ऐसा ही निर्णय आपकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक होगा।

२१. केवल अपने ही विचारों को सर्वोपरि मान्यता देना ठीक नहीं। दूसरों के विचारों को भी धैर्यपूर्वक सुनिये तथा अपने से अनुभवी लोगों के अनुभवों से लाभ उठाने का प्रयत्न कीजिए।

परिवर्तनकारी वर्ष—पांच मूलांक वाले व्यक्तियों के लिए जीवन का ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ तथा ८६वां वर्ष श्रेष्ठ, भाग्यवर्धक तथा परिवर्तनकारी वर्ष होंगे। इसके अतिरिक्त १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३, ८२वां तथा ९१वां वर्ष भी श्रेष्ठ रहेंगे। इन वर्षों में जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं घटित होंगी तथा आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—संसार के वे प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति,

जिनका मूलांक ५ रहा है।

१. ड्यूक ऑफ विंडसर	जन्म २३ जून	मूलांक	५
२. लार्ड लिस्टर	" ५ अप्रैल	"	५
३. शेक्सपियर	" २३ अप्रैल	"	५
३. थामस हुड	" २३ मई	"	५
५. फेरेनहाइट	" १४ मई	"	५
६. जोसेफिन	" २३ जून	"	५
७. कार्ल मार्क्स	" ५ मई	"	५
८. सुभाषचन्द्र बोस	" २३ जनवरी	"	४
९. रानी विक्टोरिया	" २३ मई	"	५
१०. एल्बर्ट आइन्स्टीन	" १४ मार्च	"	५
११. जुगलकिशोर बिड़ला	" २३ मई	"	५
१२. लोकमान्य तिलक	" १४ जनवरी	"	५
१३ सी० डी० देशमुख	" २३ जुलाई	"	५
१४. चितरंजनदास	" ५ नवम्बर	"	५
१५. आइजन हॉवर	" १४ अक्तूबर	"	५
१६. राजकपूर (अभिनेता)	" १४ दिसम्बर	"	५
१७. प्रेम चोपड़ा	" २३ दिसम्बर	"	५
१८. कामिनी कौशल	" १४ फरवरी	"	५
१९. सायराबानू	" २३ अगस्त	"	५
२०. तनूजा	" २३ दिसम्बर	"	५
२१. गीतादत्त	" २३ नवम्बर	"	५
२२. कृशन चन्दर	" २३ नवम्बर	"	५
२२. शक्ति सामन्त	" १४ जनवरी	"	५
२४. के० आसिफ	" १४ जून	"	५

मूलांक-६

अंग्रेजी तारीख—६, १५, २४

वस्तुतः आप सौभाग्यशाली हैं कि आपका मूलांक ६ है। उन सभी स्त्रियों एवं पुरुषों का मूलांक ६ ही है, जिनका जन्म किसी भी महीने की ६, १५ या २४ तारीख को हुआ है और सौभाग्यशाली इस दृष्टि से कि आपका मूलांक ६ है और उसका प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है।

शुक्र ग्रह आकाश मण्डल में सर्वाधिक चमकीला और देदीप्यमान ग्रह है, जिसे हम नंगी आँखों से भी देख सकते हैं। यह पृथ्वी के समस्त प्राणियों की कामवासना पर नियंत्रण रखता है और शरीर में वीर्य, ऊर्जा, शक्ति और कामशक्ति को उत्थित, उद्वेलित और गतिशील करने में योग देता है।

संसार की सर्वाधिक सुन्दर नारियाँ इन्हीं अंकों के नियंत्रण में रही हैं। वस्तुतः छः मूलांक का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्रियाँ सुन्दर, सुघड़ और सुरुचिपूर्ण होती ही हैं। यही नहीं, अपितु छः मूलांक से प्रभावित पुरुष भी यौवन-ज्वार से पूर्ण एवं रतिक्रीड़ा में चतुर होते हैं। स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने एवं मनोनुकूल बनाने में ये दक्ष होते हैं तथा स्वभाव से हँसमुख, मिलनसार, शीघ्र ही घुलमिल जाने वाले और चतुर होते हैं।

कलाकार की-सी निपुणता आप में इसीलिए तो है कि आपका मूलांक छः है। ऐसे व्यक्तियों की सौन्दर्यवृत्ति सर्वाधिक जागरूक होती

है, ज्यादा से ज्यादा सुन्दर बने रहना इनका स्वभाव होता है, सुरुचि-पूर्ण एवं सलीकेदार कपड़े पहनना, बन-ठनकर रहना, अपने रहने के स्थान को सजाकर रखना आदि गुण शुक्र के ही कारण हैं, इसलिए अव्यवस्था, गन्दगी, कुरूपता, फूहड़पन और बदइंतजामी से आपको घृणा है। ऐसे व्यक्ति पक्के सांसारिक होते हैं। संसार में अधिक से अधिक सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करना इनका लक्ष्य होता है। स्त्री जाति के प्रति इनका सहज ही झुकाव होता है तथा कला, संगीत, काव्य, चित्रकला आदि के पारखी और मर्मज्ञ होते हैं। ये स्वयं अपनी हॉबी के अन्तर्गत कोई न कोई कला का आश्रय लिए हुए होते हैं तथा इस कलाप्रेम के पीछे कई बार व्यर्थ का व्यय भी कर डालते हैं।

धन का अभाव रहते हुए भी ये मुक्तहस्त से व्यय करते रहते हैं। जनता में ये शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाते हैं और दूसरों से गंभीर से गंभीर रहस्य भी बातों ही बातों में निकाल लाते हैं। सांसारिक और सांसारिक होते हुए भी चतुर तथा नीतिज्ञ होते हैं, कोई भी कार्य करने से पूर्व भली प्रकार सोच-विचार लेते हैं, उसके गुणावगुणों की परीक्षा कर डालते हैं तथा योजनाबद्ध रूप से कार्य करने का लक्ष्य रखते हैं।

ऐसे व्यक्ति दीर्घायु, स्वस्थ, सबल, हँसमुख और कामी होते हैं। आकाश में जब-जब भी शुक्र की स्थिति प्रबल बनती है, इनमें काम-वासना की तीव्रता आ जाती है और कला के प्रति झुकाव बढ़ जाता है। समझदार और चतुर प्रेमी ऐसे ही समय में कम प्रयत्न से ही प्रेमिका प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं।

छः अंक से प्रभावित व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सामान्य-सा ही रहता है। यद्यपि ऐसे व्यक्ति दूसरे की भावनाओं का खयाल रखते हैं, उन्हें आदर देते हैं, परन्तु अन्दर ही अन्दर कुछ ऐसी कमी महसूस होती रहती है जो इन्हें पूर्णता प्रदान नहीं करती। संभवतः इसका कारण यह भी हो कि विपरीत रति के प्रति अत्यधिक झुकाव के कारण भी दूसरे के मन में संशय बना रहता है। फिर भी ऊपर से देखने पर इनके गार्हस्थ जीवन में कोई कमी परिलक्षित नहीं होती। अपनी सामर्थ्य के

अनुसार ये गृहस्थी में सुख-सुविधा के सभी उपकरण जुटाते हैं तथा गृहस्थी को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

ऐसे व्यक्ति स्वभावतः ईर्ष्यालु होते हैं, दूसरों की प्रगति देख ये भले ही जलें-भुनें नहीं, परन्तु उनसे भी आगे बढ़ने की स्पर्धा इनमें बढ़ जाती है और यह स्पर्धा कभी-कभी तो हठ का रूप धारण कर लेती है जिससे व्यर्थ का व्यय एवं श्रम भी होता है। यदि ये ईर्ष्या और हठ छोड़ दें तो अपेक्षाकृत अधिक सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

दूसरों को प्रभावित करने की इनमें अद्भुत क्षमता होती है। अपरिचित व्यक्ति या अधिकारी से मिलने में ये हिचकिचाते नहीं और अपनी बात कुछ इस ढंग से कहते हैं कि सामने वाला 'हाँ' भर ही देता है। यों सुडौल और आकर्षक शरीर, नम्र वाणी, मोहक व्यक्तित्व और चेहरे की सौम्यता इन्हें जरूरत से ज्यादा सहायता देते हैं।

झगड़ना इनके स्वभाव में नहीं है, अपनी तरफ से ये कोई भी आप मौका उपस्थित नहीं करते, जिससे वाद-विवाद हो। यदि झगड़े की स्थिति आ ही जाती है, तो ये हट जाते हैं समझौतावादी प्रवृत्ति इनमें शुरू से ही रहती है।

आपकी विशेषताएं उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त भी आप में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो केवल आप में ही हैं और जिनके कारण आपका व्यक्तित्व कुछ अलग-सा ही निरखता दिखाई देता है।

१. आप चचल हैं। एक विषय पर आप ज्यादा देर तक चिन्तन नहीं कर सकते और न अधिक देर एक जगह बैठे ही रह सकते हैं। सीटिंग वर्क की अपेक्षा भ्रमणयुक्त कार्य आपको अधिक प्रिय रहता है और ऐसे कार्यों में आप सफल भी अपेक्षाकृत अधिक ही होते हैं।

२. बनना-सँवरना आप में कुछ विशेष मात्रा में ही पाया जाता है। बाहर भले ही कोई इंतजार करता रहे, ऑफिस जाने में देर हो रही हो या कोई जरूरी कार्य विगड़ रहा हो, आप तब तक घर से बाहर नहीं निकलेंगे, जब तक कि पूरी तरह से सज-सँवर न जाएँ। जब आप अपने प्रति पूर्णतः आश्वस्त हो जायेंगे, तभी अन्य काम में हाथ डालेंगे।

३. एक प्रकार से यदि कहा जाय कि कपड़ों में आधुनिकता आप से ही प्रारम्भ होती है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। जिन स्त्रियों का मूलांक ६ है, उन पर तो यह बात पूर्णतः सही उतरती दिखाई पड़ती है। नये से नया परिधान, नये से नया फैशन, नई से नई सजावट और नये से नये प्रकार को अपनाने में ये दूसरों से हमेशा आगे रहती हैं। फैशन में अग्रणी होने के साथ-साथ घर में भी विलासिता के उपकरण जुटाने में आप अग्रणी रहेंगे। हो सकता है, आर्थिक तंगी का आपको सामना करना पड़े परन्तु फिर भी आपकी सजावट, वेशभूषा और परिधान से कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता कि आप तंगी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

४. आपकी बैठक सुन्दर तथा यथासंभव आधुनिक सुख-सुविधाओं से पूर्ण होगी। सुन्दर सोफासैट, आधुनिक प्रयोगवादी चित्र, रेडियो, टेलीफोन, खाने-पीने के आधुनिक बर्तन और आधुनिक रहन-सहन आप के स्वभाव में होगा और आप चाहते हुए ही इनसे दूर न रह सकेंगे।

५. श्वेत वस्त्र आप पर भली प्रकार फबेंगे। यों भी सफेद वस्त्र आप अधिक चाहेंगे। मुस्कराहट आपकी अनमोल निधि होगी और इस मुस्कराहट की अदा में ही कुछ ऐसा गुण, कुछ ऐसा आकर्षण होगा जो दूसरों में नहीं होगा और इसी के फलस्वरूप आप शत्रु को भी मित्र बनाने में समर्थ हो सकते हैं।

६. इतना होने पर भी, दूसरों से अधिक घुल-मिल कर रहने पर भी, कोई आपके मन का भेद सहज ही प्राप्त नहीं कर सकता। आप अगले क्षण क्या करने जा रहे हैं इसका अनुमान सहज ही आपकी पत्नी भी नहीं लगा सकती, फिर किसी अन्य की तो बिसात ही क्या है? हां, आप दूसरों के मन का भेद प्राप्त करने में चतुर हैं।

७. आप अधिक समय तक अकेले नहीं रह सकते, यह आपकी कमजोरी है। हर समय आप मित्र-मण्डली के साथ या दोस्तों के साथ ही रहना चाहेंगे, अकेलापन आपको काटने को दौड़ेगा, मित्र पर विश्वास अन्य की अपेक्षा अधिक ही करेंगे।

८. निराशा की भावना आप में तुरन्त उग्र हो जाती है। थोड़ा सा भी काम आपके मन के विपरीत होते ही आप निराश हो जायेंगे, जल्दी ही घबरा जायेंगे और शीघ्रातिशीघ्र उससे मुक्ति पाने का प्रयास करेंगे।

९. परिवार की दृष्टि से आप एक श्रेष्ठ पारिवारिक व्यक्ति कहे जा सकते हैं। पत्नी के सुख-दुःख को समझना, उसे धैर्य बँधाते रहना, धीरे-धीरे अपने मनोनुकूल बनाना आदि गुण आपमें स्वाभाविक रूप से हैं।

१०. माता-पिता के प्रति उपेक्षा भाव रखते हुए भी आप उनके प्रति हमदर्दी बने रहेंगे, उनके दुःख में आप तुरन्त दयार्द्र हो उठेंगे, तथा सभी प्रकार से उनकी सेवा-सुश्रुषा में लग जायेंगे।

११. आपके सम्पर्क में अधिकतर सुन्दर स्त्रियाँ अथवा सुन्दर पुरुष ही आयेंगे, कुरूपता को सहन करना आपके वश की बात नहीं है।

१२. मिलनसारिता में आप अपने संबंधियों, स्वजनों, मित्रों एवं परिचितों से कहीं बढ़े-चढ़े होंगे।

सावधानियाँ—यद्यपि आप श्रेष्ठ, सभ्य, सज्जन एवं सद्व्यवहार-शील व्यक्ति हैं, फिर भी आपमें कुछ कमियाँ हैं, जिन्हें यदि दूर किया जा सके तो आप पूर्वापेक्षा अधिक सफल जीवन बिता सकते हैं।

१. आप जिन लोगों के सम्पर्क में भी आते हैं उन्हें मित्र समझ लेते हैं और सहज ही उन पर विश्वास करने लग जाते हैं, यह ठीक नहीं है, क्योंकि इस प्रकार की प्रवृत्ति के कारण आप कई बार परेशानियों में उलझे हैं और हानि भी उठाई है, अतः आपको चाहिए कि आप मनुष्य को गुणावगुणों के आधार पर परखना सीखें और तदनुकूल ही उससे व्यवहार करें।

२. दूसरों की बात भी आप जल्दी नहीं मान लेते, बल्कि तर्क-वितर्क करने लग जाते हैं। कोशिश यह रहती है कि इस तर्क-वितर्क में आपका पलड़ा भारी रहे और सामने वाले को तर्क की कसौटी पर हरा दें। यद्यपि यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, परन्तु इस नियम को सर्वत्र लागू

नहीं करना चाहिए, जहाँ मानने की बात हो, वहाँ मान भी लेना चाहिए अन्यथा कई बार आपकी उन्नति में यह विचारधारा रोड़ा-सी बनी प्रतीत होती है।

३. किसी भी कार्य में उतावली करना आप जैसे व्यक्तित्व वालों के लिए शोभा नहीं देता। धीरे-धीरे, सँभल-सँभलकर बात को समझते हुए आगे पग बढ़ाना चाहिए। मित्रों की सलाह को भी आँख मूंद कर मत मान लीजिए, अपितु तर्क-वितर्क की कसौटी पर कस कर उसके हानि-लाभ दोनों ही पक्ष सोचकर फिर निर्णय लीजिए।

४. जीवन में स्त्री जाति को अधिक महत्व मत दीजिये, आपने अपने अनुभव से ही यह समझ लिया होगा कि स्त्री जाति के सम्पर्क करने पर आपको समय, श्रम व धन की हानि ही उठानी पड़ी है। स्त्री सौन्दर्य है, आपके जीवन में इसका महत्व भी है, परन्तु हद से ज्यादा स्त्री-प्रेम को मत बढ़ने दीजिये, इससे आपकी उन्नति में बाधा ही पड़ती है।

५. यदि आप सोच लें या निश्चय कर लें तो लगातार श्रम कर सकते हैं। तात्पर्य यह कि आप में अधिक श्रम करने की क्षमता है, परन्तु इसके साथ ही साथ आलस्य और विलासिता भी अधिक है, जिस के नीचे श्रम अपना दम तोड़ देता है; फलस्वरूप उन्नति की गति शिथिल-सी दिखाई पड़ती है।

६. आप प्रेम करेंगे या दूसरी प्रेमिका के चक्कर में रहेंगे अथवा उसमें अनुरक्त रहेंगे, परन्तु आपको चाहिए कि इस कारण आपके पारिवारिक जीवन में बाधा न पड़े, क्योंकि यह छोटी-सी चिनगारी पूरे गार्हस्थ जीवन को नष्ट कर सकती है। कभी भूलकर भी किसी दूसरी स्त्री से अपनी पत्नी की तुलना मत कीजिये।

७. यदाकदा आपके गार्हस्थ्य जीवन में जो भूचाल-सा आ जाता है उसका कारण आपकी उदासीनता ही है। दूसरे के चक्कर में पत्नी की उपेक्षा करना आपके व्यक्तित्व की शालीनता नहीं कही जा सकती।

८. सभा-संस्थाओं, क्लबों आदि में आप लोकप्रिय होंगे तथा उन

प्रति झुकाव होना भी स्वाभाविक ही है, परन्तु ऐसा न हो कि आपका अधिकांश समय इनमें ही बीत जाय। जीवन में इनका जितना स्थान है उतना ही महत्व इन्हें दीजिए।

९. शौक से किया गया नशा भी आगे जाकर आपके जी का जंजाल हो जायेगा, अतः बुद्धिमानी इसी में है कि आप किसी भी प्रकार का नशा मत कीजिये, यदि हो तो इससे जल्दी-से-जल्दी छुटकारा पा लीजिये।

१०. मीठे और विशेषकर चटपटे व्यंजनों की ओर आपका रुझान ज्यादा रहेगा, कभी-कभी यह रुझान हद से ज्यादा बढ़ता नजर आयेगा अपने पर संयम रखिये। स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक चटपटे व्यंजन आपके लिए श्रेयष्कर नहीं।

११. आप क्रोध कम करते हैं यह ठीक है और यह भी ठीक है कि आपके क्रोध को कोई भांप नहीं सकता, पर बदले की आग से आप मन-ही-मन जलते रहते हैं और तब तक विश्राम नहीं लेते, जब तक कि आप बदला न ले लें पर इस प्रकार से आप कभी-कभी हानि भी उठा लेते हैं, अतः आप इस ईर्ष्या के अतिरेक की ओर से सावधान रहें।

स्वास्थ्य—१. स्वास्थ्य की ओर से शिकायत आपको लगभग नहीं के बराबर होगी, स्वास्थ्य लगभग ठीक ही रहेगा। यों तो आप इतने तो सहनशील हैं ही कि छोटी-मोटी बीमारी की तो आप परवाह ही नहीं करते, लोगों को यह भान ही नहीं होने देते कि आप किसी व्याधि से पीड़ित हैं।

२. आपको अधिकतर बीमारियाँ ऐसी होंगी जो शुक्र से संबंधित होंगी। जब-जब भी शुक्र की स्थिति कमजोर पड़ेगी आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, स्नायविक दुर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्ररोग, कफ-व्याधि, वीर्य दोष, कब्ज तथा कोष्ठबद्धता आदि बीमारियाँ ही होंगी। शीघ्र ही जुकाम से पीड़ित हो सकते हैं। वृद्धावस्था है तो कफ खांसी आदि से पीड़ित रह सकते हैं। इसे मौसम का परिवर्तन कहा जा सकता है।

३. आकाश मण्डल में शुक्र की श्रेष्ठ स्थिति प्रतिवर्ष २० अप्रैल से २१ मई तथा २३ सितम्बर से २० अक्तूबर तक रहती है। यह समय आपके लिए श्रेष्ठतम समय है। जबकि आपको किसी भी प्रकार की व्याधि से पीड़ित नहीं होना पड़ेगा, चेहरे का रंग लालिमा लिए हुए बना रहेगा तथा शरीर गुलाब-गुच्छ की तरह खिला हुआ-सा प्रतीत होगा।

४. यथासंभव आप नशे से अपने आपको दूर ही रक्खें। यौवनावस्था में आप भाँग, शराब या चरस के शौकीन हो सकते हैं, पर यह शौक ही आदत बन जायेगा और वृद्धावस्था में आपको पीड़ित करेगा। अतः यदि आपने नशे के प्रति संयम बरता तो निश्चित ही आपका पूर्ण जीवन श्रेष्ठ, सुखमय और सानन्द व्यतीत होगा।

५. भारी चीजें आप पचा नहीं पाते, अतः यथासंभव गरिष्ठ भोजन से बचें। भैंस की दूध की अपेक्षा यदि आप बकरी के दूध का सेवन करें तो आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा।

६. प्रातःकाल टहलिये, यह नियम मूलाङ्क ६ वालों के लिये उचित रहेगा, क्योंकि इससे कब्ज आदि की शिकायत नहीं रहेगी। श्वास-प्राणायाम भी आपके लिए श्रेष्ठ है।

७. आपका जीवन प्रमुखतः भोगमय है। 'भोग ही जीवन है' आप में से अधिकतर लोगों का यह मूलमंत्र होगा, परन्तु फिर भी मेरी सलाह है कि आप भोग के अतिरेक से यथासंभव बचें। आपको स्वस्थ, सुन्दर, दृढ़ एवं आकर्षक बने रहने के लिये इतना संयम आवश्यक ही नहीं, अत्यावश्यक है।

८. बहुत अधिक गरम चीजें, गरम मसाले, मिर्च, तेल, खटाई और अधिक नमक सेवन से भी यथासंभव बचें।

९. जीवन को व्यवस्थित कीजिये। कलाकार कलाकार की जगह ही ठीक दिखाई देता है। हर समय कलाकार बने रहना उचित नहीं, अतः जीवन में आदर्शात्मकता और कोरी भावुकता के स्थान पर कुछ यथार्थता लाने का प्रयत्न कीजिए, तभी आपका जीवन सुखी, आनन्दित

और श्रेष्ठ हो सकता है।

सावधानियाँ—यद्यपि आप जागरूक हैं, जरूरत से ज्यादा सावधान बने रहते हैं, फिर भी कुछ और बातों का भी ध्यान रखिये और अपने जीवन में लागू करने का प्रयत्न कीजिए।

१. आपको यह तो मान लेना चाहिए कि शारीरिक श्रम आपके बल-बूते की बात नहीं, अतः आप ऐसी कोई योजना प्रारम्भ मत कीजिए जिसमें शारीरिक श्रम अपेक्षा रखता हो। इसकी अपेक्षा आप मानसिक श्रम अधिक कर सकते हैं तथा इसमें उन्नति की आशाएँ भी अधिक हैं।

२. आप चाहे नौकरी करते हों या व्यापार, आपका ध्यान विलासकता की ओर न्यूनाधिक रूप से रहेगा ही। इसका कारण शुक्र है, अतः आपको निम्न कार्य सम्पन्न और लखपती बना सकते हैं।

(१) शृंगारिक प्रसाधनों का व्यापार। (२) दैनिक जीवन में व्यवहार में आने योग्य वस्तुओं की दुकान। (३) साझेदारी।(४) कमीशन एजेण्ट। (५) विलासिता प्रधान वस्तुएं, आभूषण आदि की दुकान। (६) पुस्तक प्रकाशन, फिल्मी पत्रिका का सम्पादन आदि। (७) सफेद वस्तुओं का व्यापार।

३. खनिज कार्य, निर्माण कार्य, ठेकेदारी, पेंटिंग, चित्रकला, काव्य, संगीत-सम्बन्धी साज-सामान आदि भी आपके रोजगार के साधन बन सकते हैं।

निर्बल समय—प्रत्येक वर्ष का अप्रैल, अक्तूबर तथा नवम्बर मास ठीक नहीं है। इन महीनों में मानसिक परेशानी, झंझट तथा कुछ न कुछ अप्रिय सुनने को मिल सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह दिन अनुकूल नहीं कहे जा सकते।

उन्नत समय—प्रति वर्ष अंग्रेजी पद्धति के अनुसार २० अप्रैल से १८ मई तथा २१ सितम्बर से १९ अक्तूबर तक का समय आशावेद कहा जा सकता है, परन्तु इसके साथ ही २० अप्रैल से ३० अप्रैल तथा १ अक्तूबर से १९ अक्तूबर तक का समय सर्वश्रेष्ठ मानना चाहिए,

जबकि गोचर की स्थिति श्रेष्ठ और अनुकूल हो। उन्नत समय में प्रत्येक शुभ कार्य का प्रारम्भ ठीक रहता है तथा उसका परिणाम अनुकूल एवं उन्नतिप्रद होता है।

शुभ तारीखें—जिन व्यक्तियों का मूलाङ्क ६ है, उनके लिए प्रत्येक मास की ६, १५ तथा २४वीं तारीख अनुकूल एवं सिद्धप्रद होती हैं, परन्तु इसके साथ ही ३ से कटने वाली तारीखें यथा ३, ६, ९, १२ १५, १८, २१, २४, २७ तथा ३०वीं तारीख भी अनुकूल कही जा सकती हैं। इन तारीखों को ही कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहिए तथा यदि किसी बड़े अधिकारी से मिलना हो तो इन्हीं तारीखों को मिलें तो अधिक अनुकूल रहेगा।

शुभ दिवस—आपके लिए बुधवार तथा शुक्रवार सर्वाधिक श्रेष्ठ और अनुकूल हैं। शुभ तारीखों के साथ यदि बुध या शुक्रवार का भी संयोग हो तो वह अधिक अनुकूल कहा जा सकता है।

शुभ रंग—हल्का नीला रंग, गुलाबी, सामान्य पीत रंग तथा चमकदार सफेद आपके लिए वरदानसूचक है। आप अपने बैडकवर, सोफा कवर, पर्दे आदि इसी रंग के बनवावें तो अधिक प्रभावशाली रहेंगे। हो सके तो आप अधिकतर सफेद कपड़े ही पहनें। सफेद वस्त्रों में निश्चय ही आपका व्यक्तित्व कई गुना बढ़ जाता है।

शुभ रत्न—आप शुक्रप्रधान प्राणी हैं, अतः आपका रत्न रत्नराज हीरा है, जिसे संस्कृत में वज्रमणि या इन्द्रमणि, हिन्दी में हीरा, फारसी में अलिमास तथा अंग्रेजी डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा या हीरकखण्ड जितना ही बड़ा होगा, उतना ही आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा। सोने की अंगूठी में इसे जड़वाकर कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें, वस्तुतः यह रत्न शीघ्र ही प्रभाव उत्पन्न करने वाला, आकर्षण बढ़ाने वाला तथा छः मूलांक वाले व्यक्तियों के लिए सर्वतो-मुखी उन्नति करने वाला है।

व्रतोपवास—स्त्रियों को 'सन्तोषी' माता का व्रत करना चाहिए। शुक्रवार को एक समय बिना नमक का भोजन करें तथा किसी भी

प्रकार की खट्टी वस्तु का सेवन न करें। पुरुष यदि शुक्रवार का व्रत करें तो ठीक ही है, अन्यथा उन्हें सोमवार का व्रत करते रहना चाहिए।

देवता—आपके प्रधान देवता कीर्तवीर्यार्जुन हैं, जो कि देवताओं में श्रेष्ठ, प्रधान आकर्षण रखने वाले तथा सभी प्रकार की बाधाओं को दूर कर सब कार्य निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण करने वाले हैं। इनकी मूर्ति पूजागृह में स्थापित करें तथा प्राण-प्रतिष्ठा कर षोडषोप्रकार पूजा करें।

ध्यान—सुगन्धित अगरवत्ती एवं शुद्ध घी का दीपक जलाकर निम्न ध्यान पढ़ें।

> सहस्र भुजमंडली जिततमी चेरणाधिपं
> हिमांशु सदृशाननं धृत सहस्र तूर्णीकरम्।
> सिताम्वरधरं सदा तुरगराज मध्यस्थितं
> स्मरामि भुवनाधिपं हृदि तु कार्तवीयर्यार्जुनम्॥

मंत्र—यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह, छोड़ कर सात्विक वस्त्र धारण कर, दूर्वाभिमुख होकर निम्न मंत्र की रोज एक माला (१०८ मंत्र) फेरें तो निश्चय ही यह मंत्र सभी प्रकार की सम्पत्ति, ऐश्वर्य, वाहन, सुखोपयोग सामाग्री एवं मंगल देने वाला है।

॥ ॐ भ्रां भ्रां ह्रां ह्रां ह्रां हें हें स्वाहा॥

मित्रता—जिन स्त्रियों या पुरुषों का मूलांक ३ या ६ है, वे आपके पक्के मित्र हो सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मित्रता लाभप्रद भी रहती है। व्यापार में, साझेदारी में, सहयोगी बनाने के लिए, पति-पत्नि का चुनाव करते समय या नौकर रखते समय आप इन मूलांकों का ध्यान रक्खें। इसके साथ ही वे स्त्री-पुरुष जिनका जन्म २१ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक या २० अप्रैल से १८ मई के बीच हुआ हो, आपके लिए विश्वासपात्र तथा अधिक अनुकूल कहे जा सकते हैं।

शुभ वर्ष—आपका मूलांक छः है, अतः जीवन का ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६६ और ७८वाँ वर्ष अधिक श्रेष्ठ, उन्नत एवं जीवन में शुभ मोड़ देने वाले साबित होंगे। यदि आप विचार करके देखें

तो आपके जीवन का ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३४, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२ और ७५वें वर्ष भी उन्नतिसूचक एवं श्रेष्ठ रहे होंगे अथवा रहेंगे। वे सभी सन् जो ६ के अंक से पूरे-पूरे विभाजित होते हैं—आपके लिए सौभाग्यसूचक कहे जा सकते हैं, उदाहरणार्थ सन् १९७४ में ६ का पूरा-पूरा भाग लगता है, अतः यह वर्ष आपके लिए श्रेष्ठ उन्नतिसूचक एवं सौभाग्यवर्धक रहेगा ही। इस दृष्टि से १९७४, १९८०, १९८६, १९९२ और १९९८वाँ सन् भी श्रेष्ठ कहा जा सकता है।

वस्तुतः आप सौभाग्यशाली हैं, जीवन में साधारण घराने में भी जन्म लेकर ऊंचे उठने वालों में से हैं, जो अपना ही नहीं, पूरे कुल का नाम उजागर कर स्थायी कीर्ति का आधार बनते है तथा अपने कार्यों से विश्व में चकाचौंध उत्पन्न कर सकते हैं।

उल्लखनीय व्यक्तित्व—वे सभी प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्तित्व जिनका मूलांक छः रहा है—

१.	रानी विक्टोरिया	जन्म	२४ मई	मूलांक	६
२.	नेपोलियन I	"	१५ अगस्त	"	६
३.	ऑलिवर क्राम्वेल	जन्म	२४ अप्रैल	मूलांक	६
४.	राष्ट्रपति ट्रापट	"	१५ सितम्बर	"	६
५.	सर वाल्टर स्कॉट	"	६ दिसम्बर	"	६
६.	सर विलियम हर्सल	"	१५ नवम्बर	"	६
७.	वारेन हेस्टिंग्ज	"	६ दिसम्बर	"	६
८.	मेक्समूलर	"	६ दिसम्बर	"	६
९.	एडमिरल पेरी	"	६ मई	"	६
१०.	टेनीसन	"	६ अगस्त	"	६
११.	दलाई लामा	"	६ जून	"	६
१२.	चंगेज खाँ	"	१५ सितम्बर	"	६
१३.	योगिराज अरविन्द	"	१५ जुलाई	"	६
१४.	अकबर महान	"	२४ नवम्बर	"	६

१५. जॉय मुकर्जी	"	२४ फरवरी "	६
१६. जयन्त	"	१५ अक्तूबर "	६
१७. मनोजकुमार	"	२४ जुलाई "	६
१८. पृथ्वीराज कपूर	"	६ नवम्बर "	६
१९. शेख मुख्त्यार	"	२४ दिसम्बर "	६
२०. सज्जन	"	१५ जनवरी "	६
२१. इन्दिरा	"	६ मार्च "	६
२२. सईदाखान	"	२४ अक्तूबर "	६
२३. मोहम्मद रफी	"	२४ नवम्बर "	६
२४. तलत महमूद	"	२४ फरवरी "	६
२५. एस०डी० बर्मन	"	६ अक्तूबर "	६
२६. प्रदीप (गीतकार)	"	६ फरवरी "	६

मूलांक-७

अँग्रेजी तारीख—७, १६, २५

आपका मूलांक जलीय मूलांक है जो सहार्द्र, सहिष्णु और सहयोगी भावना प्रधान है। आपके जीवन को नियंत्रित रखने वाला तथा उस पर अधिकार रखने वाला ग्रह 'वरुण' या नेपच्यून है, जो ब्रह्माण्ड में तैंतीस हजार मील के व्यास में फैला हुआ है तथा शनि के बाद जिसका सर्वाधिक प्रभाव पृथ्वीतल पर पड़ता है। सूर्य से दूर होने के कारण वह मंद गति प्रधान है और एक राशि के परिवर्तन में ही कई वर्ष लग

जाते हैं, इसलिये इसका फल भी गहरा, व्यापक और दीर्घकाल तक रहने वाला होता है।

हिन्दू शास्त्रों में 'वरुण' को जल का प्रधान देवता माना है, इसीलिये मैंने ऊपर इसे जलीय ग्रह कहा है। अपने स्वभाव के अनुसार यह आपको ठंडे मिजाज वाला, सन्तोषी, सहिष्णु, सौम्य, सरल और कल्पनाप्रिय व्यक्ति बनाने में सहायक हुआ है। कल्पना इसका प्रधान गुण है, अतः संसार के वे सभी कवि, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक जिन्होंने अपने कार्यों से संसार को अधिक सभ्य, अधिक उन्नत और अधिक जीने योग्य बनाया है, न्यूनाधिक रूप से इस ग्रह से प्रभावित अवश्य रहे हैं। आपका सौभाग्य है कि आप इस ग्रह से प्रभावित और संचालित हैं।

निश्चय ही यह ग्रह आपको जलप्रिय बनाने में सहायक होगा, साथ ही जीवन में ऐसे अवसर भी उपस्थित करेगा कि जिससे आप जल-यात्रा कर सकें। समुद्र यात्रा तथा वायुयान यात्रा भी जीवन में एकाधिक बार होती रहेगी। आपका मस्तिष्क इतना मौलिक और उर्वर है कि आप हर क्षण कुछ न कुछ नया सोचते ही रहते हैं। घर में भी कुछ अनुपयोगी वस्तु है तो उसे तोड़-मरोड़ कर नई वस्तु बनाने की ओर लगेंगे। किसी वस्तु को व्यर्थ समझना आपके स्वभाव में नहीं है और प्रत्येक वस्तु का सदुपयोग करना आपको भली प्रकार आता है।

यदि आप लेखक या कवि हैं तो निश्चय ही नेपच्यून की अनुकूल स्थिति आते ही आपके द्वारा ऐसा ग्रंथ लिखा जायेगा, जो आपके व्यक्तित्व और ख्याति को कई गुना बढ़ा देगा और उस ग्रंथ में भी कुछ ऐसी मौलिक विशेषताएँ होंगी, जिनसे बरबस दूसरे लोग आपकी ओर आकृष्ट होंगे। यदि आपकी आध्यात्मिक शक्ति प्रबल है तो आप एक श्रेष्ठ चिन्तक, योगी और दार्शनिक होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

एक बात और जो मैंने अपने अनुभव से देखी है, वह है वरुण प्रधान व्यक्तियों का अति भाग्यशाली होना। हो सकता है आप इस समय सम्पन्न न हों या विभिन्न परेशानियों के बीच में झूल रहे हों या कुछ

ऐसा प्रतीत हो रहा हो कि आपकी उन्नति उस गति से न हो रही हो जिस गति से होनी चाहिए, पर मूल रूप में आप देखें तो आप पायेंगे कि आप वास्तव में भाग्यशाली हैं। घर के वातावरण और परिस्थितियों को ध्यान में लाकर देखें तो प्रतीत होगा कि आपने कई मंजिलें पार कर ली हैं, जो एक औसत व्यक्ति नहीं कर सकता था। इसके साथ ही आप भाग्य से उसे अधिक सहायता देते हैं, जिसके साथ आप होते हैं। आप जिसके भी दोस्त होते हैं, वह सरलता से आगे बढ़ता जाता है और आप उससे दोस्ती तोड़कर देख लें, उसकी प्रगति मंद और कुंठित पड़ गई होगी। वह व्यर्थ ही कई परेशानियों में उलझ जायेगा। इसी प्रकार आप किसी के नौकर हैं तो आपके फलस्वरूप आपके मालिक की भी उन्नति होगी।

मूलत: आप में तीन गुण हैं। पहला — मौलिकता। प्रत्येक वस्तु जो आपकी नजर में चढ़ गई, वह ठीक नहीं है, उसमें कुछ न कुछ सुधार होना ही चाहिए और यदि आप पीछे ही पड़ जायें तो कुछ ही समय में उसमें सुधार करके भी दिखा देंगे। इसी प्रकार जिन वस्तुओं को लोग व्यर्थ और बेकार समझते हैं, उनमें भी कुछ न कुछ उपयोगिता आप ढूंढ़ ही निकलेंगे। दूसरा गुण है—स्वतन्त्र विचार शक्ति। प्रतिक्षण कुछ न कुछ आप सोचते ही रहते हैं। आपका मस्तिष्क खाली या निष्क्रिय नहीं रह सकता और वह सोचना कुछ न कुछ सार रखता है। इसके साथ ही आप व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अधिक हिमायती हैं, आप के ऑफिस में भी यदि किसी के साथ अन्याय हो रहा होगा तो आप सबसे पहले उसके हिमायती बनकर कूदेंगे, उसके लिए अधिकारियों से तकरार भी करेंगे, परन्तु किसीकी स्वतन्त्रता का हनन नहीं देख सकते। आप एक सफल वक्ता भले ही न हों, परन्तु आप सफल युक्तिकर्ता अवश्य हैं। अपनी बात को इस प्रकार से प्रस्तुत करते हैं कि सामने वाला उसे मान जाता है। आपका तीसरा प्रमुख गुण है—विशाल व्यक्तित्व। आपका परिचय-क्षेत्र विस्तृत होगा और अपने स्तर से ऊँचे अधिकारी भी आपसे परिचित होंगे। यद्यपि आप नम्र होंगे, परन्तु

आप किसी की धौंस में न रह सकेंगे। उच्चाधिकारियों से भी परिचय मित्रतावत् ही होगा, मालिक-नौकर की तरह नहीं। छोटी-छोटी गलतियों की ओर आप ध्यान नहीं देंगे। यदि आप कहीं प्रशासकीय अधिकारी हैं तो निश्चय ही आपका व्यवहार अपने मातहतों के साथ मधुर होगा। ऊपर से कितने ही कठोर हों, परन्तु अन्दर से मोमवत् मृदुल होंगे और यही आपका विशाल व्यक्तित्व है।

समाज में आपको सम्मान की दृष्टि से देखा जायेगा। यद्यपि आप व्यस्त अधिक ही रहेंगे, परन्तु फिर भी जो कुछ समय आपको मिलेगा, वह सामाजिक कार्यों में व्यय करेंगे, इसलिए समाज की नजरों में आपकी महत्ता बनी ही रहेगी। छोटे-मोटे व्यक्ति अपनी समस्याएँ लेकर आपके सामने आयेंगे तथा आप कुछ इस प्रकार से निर्णय कर सकने में समर्थ होंगे कि जिसे दोनों पक्ष उचित समझेंगे और सन्तुष्ट होंगे। आप स्थिर मति नहीं कहे जा सकते। यह स्वभाव की अस्थिरता ही आपको गतिशील बनाये रखेगी और आपको जड़ नहीं बनने देगी। आप बालकों में बालक, युवकों में युवक तथा प्रौढ़ों में विचारशील व्यक्ति गिने जायेंगे, समय और वातावरण को देखकर तदनुकूल अपने आपको ढाल लेने की आप में अद्भुत क्षमता होगी और इसीके फलस्वरूप सभी वर्गों में आप लोकप्रिय बने रहेंगे।

जिनका मूलाङ्क सात होता है, उनमें यह अद्भुत प्रतिभा होती है कि वे अतीन्द्रिय ज्ञान के फलस्वरूप सामने वाले के मन का भेद पा लेते हैं। किसी में यह प्रतिभा कम होती है, किसी में ज्यादा, पर होती सब में है। आप अपने कार्यालय या घर में बैठे हैं और कोई व्यक्ति आपके सामने आ जाता है तो आप यह तुरन्त भाँप लेते हैं कि आगन्तुक किस कार्य से या मुझे क्या कहने के लिए आया है तथा यह क्या प्रश्न पूछेगा वह कोई प्रश्न पूछे इससे पूर्व ही आप उस प्रश्न से संबंधित मनोनुकूल उत्तर सोचकर तैयार रहते हैं, इससे सहज ही कोई आपको धोखा नहीं दे पाता।

यदि सच कहा जाय तो आप अपने ही निर्देशन में चलते है। हाँ,

किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न होने पर आप राय कई लोगों से लेते हैं, विचार-विमर्श अनेक व्यक्तियों से करते हैं, परन्तु काम आप वही करते हैं, जो आप सोचते हैं या मन में ठान लेते हैं। इस प्रकार सलाह लेने से आपको फायदा यह होता है कि आप सभी की धारणाएँ जान लेते हैं, कौन व्यक्ति किस सीमा तक आपके लिए सहायक हो सकता है, इसका ज्ञान आप कर लेते हैं और इससे किये जाने वाले कार्य का संभावित परिणाम आप निश्चित कर लेते हैं और इसी कारण आपकी कोई योजना निष्क्रिय नहीं होती।

आप दूसरों को कम से कम हुक्म देंगे या कार्य करने के लिए कहेंगे परन्तु यदि एक बार किसीको कोई काम कह दिया तो आप यह चाहेंगे भी कि वह काम निश्चित अवधि में ही पूरा हो। साथ ही वह कार्य उसी रूप में सम्पन्न हो जिस रूप में आप चाहते हैं। इससे आपके हुक्म की अवहेलना कम से कम होती है।

जो भी एक बार आप से मिल लेता है वह सहज ही आपको भूल नहीं पाता। साथ ही आपकी स्मरण शक्ति भी श्रेष्ठ कही जा सकती है। इसका कारण है आपका व्यक्तित्व। आपका व्यक्तित्व ही कुछ इस प्रकार का है कि सहज ही कोई आपको भुला नहीं पाता। आपका व्यक्तित्व लोगों के दिल में काफी समय तक अक्षुण्ण बना रहता है।

मित्रों से आपको सहयोग मिलता रहा है और उनसे आपको लाभ भी मिला है। बाल्यावस्था में अपने शिक्षण काल में आपका जरूर कोई एक ऐसा मित्र रहा होगा, जो आप पर तन-मन-धन से न्यौछावर रहा होगा। वह बाल्यावस्था में ही नहीं, अपितु युवावस्था में भी आपके काम आयेगा तथा संकट के क्षणों में आप उसकी अवहेलना न कर सकेंगे। यद्यपि यह भी सही है कि कई मित्र ऐसे भी रहे होंगे जो स्वार्थी और अवसरवादी होंगे, फिर भी इन कोयलों के बीच जरूर कुछ न कुछ हीरक खण्ड हाथ लगे होंगे, जो आपके लिए अमूल्य रहे होंगे और रहेंगे।

साहसिक कार्यों में आपकी रुचि होगी। इस प्रकार का साहित्य,

जिसमें रोमांचक घटनाएँ हों आपको प्रिय हैं। जासूसी, मौत को हथेली पर नचाने वाले गुप्तचर तथा जान जोखिम में ही डालकर कुछ कर गुजरने वाले देशभक्तों के साहित्य से आप अनुप्राणित रहेंगे तथा इस प्रकार का साहित्य पढ़ने की ओर आपकी सहज ही रुचि होगी, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि दूसरे प्रकार के साहित्य से आप विमुख रहेंगे। अपितु सत्य बात तो यह है कि थोड़ा-बहुत आपको साहित्य की सभी धाराओं का ज्ञान होगा तथा किसी भी विषय पर अधिकारपूर्ण स्वर से बोलने में आप समर्थ होंगे।

आपकी बचपन से ही यह प्रबल इच्छा रहेगी कि आप काफी यात्राएँ करें, साथ ही विदेश यात्रा की भी ललक आपके मन में बनी रहेगी। दूसरे देशों के बारे में अधिकाधिक जानकारी के लिए उस देश से संबंधित सामग्री आप पढ़ते रहेंगे तथा पर्वतीय स्थल, प्राकृतिक दृश्य आदि को देखकर आप सहज ही पुलकित हो उठते होंगे, परन्तु आपको चाहिए कि आप पानी में—गहरे पानी में जाने का प्रयत्न न करें और न ही जल में स्नान करते समय आपस में छेड़खानी करें। आपको इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि किसीसे होड़ न करें और इस होड़ में गहरे पानी की ओर जाने का प्रयत्न तो कभी भी न करें।

आपकीविशेषताएँ—१. आप साहसी हैं, बड़े से बड़ा खतरा उठा ने को भी हर समय तैयार रहते हैं, परन्तु आप अपने अन्दर छिपे साहस से अपरिचित हैं, अतः आपको चाहिए कि आप अपने आपको पहचानें।

२. यदि आप व्यापारी हैं तो समुद्र पार देशों के साथ संबंध स्थापित कीजिए और अपने व्यापार को वहाँ तक फैलाने का प्रयत्न कीजिए यही आपके भाग्योदय का मार्ग है। इस पर बेखटके बढ़ने का प्रयत्न कीजिए।

३. यद्यपि आप परिश्रमी हैं, परन्तु आपका परिश्रम कई बार व्यर्थ-सा हो जाता है। इसका कारण यह है कि सही दिशा में किया गया परिश्रम ही लाभदायक होता है। आपको यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि आपका भाग्योदय व्यापार से ही है और ऐसे

व्यापार से जिसमें लोहे तथा विद्युत का समावेश हो अर्थात् बिजली के उपकरण बनाना या बिजली के सामान की दुकान खोलना या मोटर पार्ट्स की दुकान खोलना आपके भाग्य के लिए श्रेष्ठ कही जा सकती है।

सावधानियां—जहाँ आप में कुछ विशेष और दुर्लभ गुण हैं वहाँ कुछ कमजोरियाँ भी हैं, यदि आप इन कमजोरियों पर विजय पा लें निस्सन्देह आप मार्ग को सहज ही उन्नत कर सकते हैं।

१. दूसरों का हित-सम्पादन अच्छी बात है और यह भी अच्छी बात है कि यथासंभव दूसरों का भलाई की जाय, पर अधिक भावुकता में उलझ जाना आप जैसे व्यक्ति के लिए उचित नहीं, अतः अपना भला-बुरा सोच लेना आपके लिए ठीक ही रहेगा।

२. नदी, तलाब या पोखर आदि के गहरे जल में न तो घुसे और न होड़ में गहरे पानी की ओर ही जायें।

३. यह ठीक है कि आपका मस्तिष्क उर्वर है और नई से नई मौलिक कल्पनाएँ करने के लिए सचेष्ट रहता है, परन्तु यह ठीक नहीं कि आप जल्दी-जल्दी विचार बदल लें। विचारों का इस प्रकार जल्दी-जल्दी परिवर्तन योग्य व्यक्ति की शालीनता के अनुरूप नहीं।

५. आप मानसिक श्रम के साथ-साथ शारीरिक श्रम भी करें जब तक आप शारीरिक श्रम से बचते रहेंगे, तब तक आपकी प्रगति की गति मंद ही कही जायेगी, इसलिए छपने जीवन मेंव्यर्थ समय खोना आपके लिए उचित नहीं।

६: समय की अवहेलना करना या समय को न पहचानना आपके जीवन की सबसे बड़ी रिक्तता है। इस प्रकार मात्र आमोद-प्रमोद या गप्पबाजी में समय बिताकर आप अपनी ही हानि करते हैं, अन्य की नहीं। इसलिए समय को पहचानिए और इसका पूरा-पूरा लाभ उठाइए।

७. दूसरों पर आश्रित रहना आपके लिए ठीक नहीं है। जहाँ तक हो सके आत्मनिर्भर बनने का प्रयत्न कीजिए। यदि आप साझेदार या भागीदार हैं तो भी स्वतन्त्र बनने का प्रयत्न कीजिए तभी आप उच्च

स्तर पर पहुँच सकेंगे, दुनिया को कुछ करके दिखा सकेंगे।

८. यह बात तो लगभग निश्चित ही है कि आप चौंतीसवें वर्ष के बाद से आर्थिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर होंगे तथा ज्यों-ज्यों समय बीतता जायेगा आप एक श्रेष्ठ, धनी एवं सम्पन्न व्यक्ति बन सकेंगे, परन्तु धन-मद बढ़ न जाय, इस ओर से सदा जागरूक रहें।

६. आप किसी भी कार्य में तत्पर, जागरूक और सचेष्ट रहते हैं तो काफी लाभ उठा लेते हैं, परन्तु इसके साथ ही आप इस बात का भी ध्यान करें कि यदि आप ज़रा भी असाधान रहे या शिथिलता की तो इससे कई गुना अधिक हानि के ज़िम्मेदार भी आप ही होंगे।

८. आपका जीवन स्थिर न होकर गतिशील है। जीवन में कई बार धन-प्राप्ति के अवसर आयेंगे तो कई बार धन-हानि के भी। अतः इस पल-पल परिवर्तित जीवन के प्रत्येक क्षण से चौंकन्ने और सदैव जागरूक रहें। ऐसा न हो कि आपकी असावधानी से आप अपने लाभ को हानि में परिवर्तित करने के ज़िम्मेदार बनें।

१०. यह ठीक है कि आप गतिशील हैं और ज़माने के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं, अन्धभक्ति और अन्धविश्वास और मिथ्या ढकोसलों से भी ग्रस्त नहीं, परन्तु हर समय पूर्वजों की खिल्ली उड़ाना या धार्मिक कार्यों की कटु आलोचना करना आपके लिए उचित नहीं। आपको अधिकाधिक सहिष्णु बनना चाहिए।

११. अपनी स्त्री से मित्रवत व्यवहार करें, न तो उसे क्रीत दासी समझें और न उसके विचारों की अवहेलना ही करें। आप अन्य स्त्रियों से अपनी पत्नी की तुलना भी न करें जहाँ तक हो सके पत्नी को धीरे-धीरे अपने मन के अनुकूल बनाइये, इससे आपका जीवन ज्यादा सुखी एवं श्रेष्ठ बन सकेगा।

१२. घर में टिककर बैठना आपके वश की बात नहीं और न आप घरेलू कामों में अधिक दिलचस्पी ही लेंगे, क्योंकि आपका मन तो यात्रा में ही रमता है, परन्तु आपका यह सौभाग्य ही कहा जाना चाहिए कि आपको सुशील पत्नी मिली है जो आपको यथासंभव घरेलू समस्याओं

से मुक्त ही रखती है, फिर ऐसी स्त्री की अवहेलना करना क्या आपके लिए उचित है, काफी रात गये घर लौटना क्या आपके अनुरूप है ? अपने आपको बदलने की ओर कोशिश कीजिये।

१३. हो सकता है कि बीच-बीच में अधिक यात्रा के कारण यात्राओं में आपका आकर्षण न रहे, परन्तु यह भी निश्चित समझिए कि आपका भाग्योदय यात्राओं से ही है। ऐसा कोई भी व्यापार या नौकरी अथवा आजीविका, जिसका संबंध यात्राओं से है आपके लिए भाग्योदयकारक रहेगी तथा उससे ही आप लाभ उठा सकेंगे।

१४. उतावली में किसी भी कार्य में हाथ न डालें। आप जो भी कार्य प्रारंभ करना चाहें, पहले उसका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लें। उसके बारे में पक्ष-विपक्ष की गहराई से समझ लें, तभी उस कार्य को प्रारंभ करें, अपने उतावलेपन के स्वभाव को संयत कीजिये।

१५. कमीशन पर काम करने में आपका हित नहीं है, आप अपना स्वतंत्र व्यापार प्रारम्भ कीजिए। यदि नौकरी भी करें तो किसी प्राइवेट फर्म में करें। इस प्रकार से आप शीघ्र ही उन्नति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

१६. यथासंभव घर में कुछ ऐसे गमले रखें जो हरे हों। प्रातः-काल उठते ही इस ओर ध्यान दें। प्रातः प्रकृति के सम्पर्क में आने से आप प्रफुल्लित रहेंगे तथा आपका दिन सुखमय व्यतीत होगा।

१७. आपका चेहरा सौम्य है, आपकी आँखें बड़ी-बड़ी और जल-मय हैं, जो सहज ही दूसरों को अपना बना सकती हैं, अतः प्रथम भेंट में ही आप दूसरे किसी भी अपरिचित को अपना बनाने में समर्थ हैं। जिन स्त्रियों का मूलांक सात है, वे निश्चय ही सुन्दर, सलज्ज, मधुर एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व से सम्पन्न होंगी, इसमें सन्देह नहीं।

१८. एक बात आप और समझ लें, यद्यपि आप अनेक स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, परन्तु प्यार के मामले में आप सौभाग्यशाली नहीं। प्यार का फल पकते-पकते बीच में ही चू पड़ता है और आप निराश होकर फिर शुरू से प्रयत्न प्रारंभ कर देते हैं।

१६. आप कोई भी ऐसा कार्य प्रारंभ न करें या हाथ में न लें जो आपकी सामर्थ्य से बाहर है, क्योंकि इससे आपके विशाल व्यक्तित्व के खंडित होने का भय रहता है। आप उतने ही पाँव पसारिये, जितनी लम्बी चादर देखें। जरूरत से ज्यादा आपाधापी आपके लिए शोभनीय नहीं।

स्वास्थ्य—१. छूत की बीमारियाँ यदाकदा आपको होती रहेंगी। जरा भी आप किसी छूत के सम्पर्क में आये कि आप उन कीटाणुओं से सहज ही ग्रस्त हो जाएंगे, अतः जहाँ तक हो सके आप इस प्रकार के रोगियों से अपने आपको दूर ही रखें।

२. आपकी त्वचा कोमल है और शारीरिक ढांचा जलीय होने के कारण पसीना भी आपको ज्यादा ही आयेगा, अतः आप ऐसा बनियान पहनें, जो पानी को सोखने वाला हो। प्रातः स्नान करते समय साबुन का प्रयोग अवश्य कीजिये, अन्यथा शारीरिक दुर्गन्ध का भार अन्य लोगों के साथ-साथ आपको भी वहन करना पड़ेगा।

३. आपके आमाशय का ढांचा कुछ इस प्रकार का होगा कि अधिकतर मंदाग्नि की शिकायत बनी रहेगी। गरिष्ठ भोजन आपकी प्रकृति के अनुकूल नहीं, अतः आप साधारण भोजन ही लें, कब्ज न होने दें। पेट से संबंधित रोगों से आप लगभग व्यथित ही रहेंगे।

४. गुप्त स्थानों का रोग, वृद्धावस्था में गठिया तथा वात संबंधी रोगों का आक्रमण यदाकदा आप पर होता रहेगा, अतः जहाँ तक हो सके, आप रोग को बढ़ने न दें। रोग की प्रथम अवस्था में ही उसे काट दें।

५. भोग-विलास में शनैः-शनै आप दुर्बलता का अनुभव करेंगे, अतः अपने जीवन को प्रारंभ से ही संयत रक्खें, न तो अधिक भोग की ओर प्रवृत्त हों और न शारीरिक क्षीणता की ओर से लापरवाह ही रहें।

६. रक्त-संबंधी कठिनाइयाँ भी यदाकदा आपको परेशान करेंगी अतः जिन दिनों मौसम में परिवर्तन हो रहा हो, पेट को एक बार पूरी

तौर से साफ कर लें। त्रिफला चूर्ण नियमित रूप से लेते रहें।

७. ज्यों-ज्यों आप बड़े होते जायेंगे अर्थात् चालीस वर्ष से आगे ढलने पर आपकी स्मरणशक्ति धीरे-धीरे कमजोर पड़ती जायेगी। साथ ही कफ, खांसी, रुधिर विकार, पसीना, घबराहट आदि आशंकाएं बढ़ती जायेंगी। पचास वर्ष की उम्र के बाद आपको चाहिये कि रक्तचाप की ओर से लापरवाही न बरतें।

८. ऐसी खाद्य वस्तुएँ, जिनमें विटामिन ए०, डी० और ई० ज्यादा हों, निरन्तर सेवन करते रहना चाहिए, जिससे प्रकृति आपकी रोगों से सफलतापूर्वक मुकाबला कर सके और आपको स्वस्थ रख सके।

९. फलों के रसों का अधिकाधिक सेवन करें। पानी से उत्पन्न फलों, यथा सिंघाड़ा आदि आपके लिए परमप्रिय खाद्य पदार्थ होने चाहिएँ।

१०. धूम्रपान से यथासंभव अपने आपको बचायें, क्योंकि आप हृदय रोग तथा फेफड़ों की दुर्बलताओं से पीड़ित हो सकते हैं, ऐसी स्थिति में तम्बाकू, धूम्रपान या नशीली वस्तुओं का सेवन आपके लिए ठीक नहीं।

११. मूलांक सात वालों में यह विशेषता होती है कि वे सहज ही किसी एक बिन्दु पर ध्यान एकाग्र कर सकते हैं। आपको चाहिए कि आप नित्य इस प्रकार का अभ्यास करें। धीरे-धीरे जब मन एकाग्र करने में परिपक्वता आ जायेगी तब आप कई विचित्र अनुभव प्राप्त करेंगे। आप देखेंगे कि कई संभावित घटनाओं का चित्र पहले ही आपके दृष्टि-पथ पर आ जाता है। किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका भविष्य अनायास ही जान सकेंगे, अतः इस प्रकार का अभ्यास जहाँ आपके स्वास्थ्य के लिए हितकर है वहाँ लौकिक जीवन के लिए उन्नतिकारक भी है।

१२. जब भी आप परेशानी अनुभव करें या झंझटों से दुखी हो जायें अथवा किसी चिन्ता से अपने आपको ग्रस्त पायें तो आपको चाहिए कि आप कहीं दूर, किसी नदी या झरने के किनारे प्रकृति की

गोद में चले जायें, इससे एक ओर जहाँ आपके मन को शांति मिलेगी, वहाँ आप अपने आपको प्रफुल्लित भी पायेंगे।

निर्बल समय—आकाश में जब-जब भी वरुण ग्रह निर्बल होगा, आपकी सफलताओं के लिए वह समय साधारण होगा, अतः आपको चाहिए कि आप जनवरी, फरवरी, जुलाई तथा अगस्त महीनों में सावधानी से काम लें तथा यथासंभव खतरे के कार्यों से बचें। साथ ही इन दिनों आप अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान दें।

उन्नत समय—ब्रह्माण्ड में जब-जब भी वरुण अपनी सुदृढ़ स्थिति में होगा, आपके लिए सफलतासूचक एवं उन्नतिदायक समय होगा। इस दिनों आप कोई भी नया व्यापार, लेन-देन या खरीद-बिक्री करें तो लाभप्रद स्थिति में रहेंगे। जून का महीना आपके लिए उन्नतिदायक कहा जा सकता है।

शुभ तारीखें—आपका मूलांक ७ है, इसलिए प्रत्येक महीने की ७, १६ तथा २५ तारीखें श्रेष्ठ एवं उन्नतिदायक रहेंगी। साथ ही सात मूलांक वालों के लिए १ का अंक भी मित्र है, अतः १, १०, १९ तथा २८ तारीखें भी अनुकूल एवं शुभ कही जा सकती हैं।

शुभ दिवस—रविवार, सोमवार तथा बुधवार आपके लिए अनुकूल वार है। यदि कोई शुभ कार्य करते समय शुभ समय, शुभ तारीख तथा शुभ वार का संयोग हो जाय तो वह दिन अत्युत्तम कहा जा सकता है।

शुभ रंग—सफेद रंग आपके अनुकूल है, पर इससे भी बढ़कर हल्का नीला रंग आपके लिए अधिक अनुकूल एवं उन्नतिदायक है, अतः आप अधिकतर सफेद कपड़े ही पहनें, घर में हल्के नीले रंग के पर्दे, कुशन तथा बैडकवर हों तो अधिक प्रभावशाली सिद्ध होंगे।

शुभ रत्न—आपका प्रधान रत्न लहसनिया है, जिसे संस्कृत में सूत्रमणि अथवा वैदूर्य, फारसी में बैडूर तथा अंग्रेजी में 'कैट्स आई स्टोन' (cat's eye stone) कहा जाता है। इस मणि में पतली-पतली सफेद धारियाँ पाई जाती हैं। उत्तमकोटि के लहसनिये की यह पहचान

होती है, कि उस पर न तो डाई धारियों से अधिक हों और न कम। यह मुख्यतः चार रंगों में पाया जाता है : (१) पीला, सूखे पत्ते-सा रंग, (२) काला, (३) हरा और (४) सफेद। हरा, सफेद और पीला लहसनिया आपके लिए शुभ है।

सोने की अँगूठी में जड़वाकर नाप कनिष्ठिका अँगुली में इसे धारण करें तो आपके लिए समस्त सुखोपभोग आसानी से प्राप्त हो सकेंगे।

व्रतोपवास—जिस समय भी आप निराश हों या आपकी असफलता का सामना करना पड़े या परेशानी-सी अनुभव करें तो आप मंगलवार का व्रत करें। इस दिन एक समय भोजन करें तथा सायं हनुमान जी के दर्शन कर लें।

देवता—आपके प्रधान देवता नृसिंह हैं, जो कि अतुलित बलशाली एवं भक्तों के कष्ट दूर करने में समर्थ हैं। यथासंभव इनकी रजतमूर्ति पूजागृह में स्थापित कर लें तथा नित्य प्रातःकाल स्नान कर उज्ज्वल, पवित्र कपड़े पहन कर, सुगंधित अगरबत्ती जलाकर, प्रथम निम्न ध्यान पढ़ें एवं फिर नृसिंह मंत्र की माला (१०८ बार) फेर लें।

ध्यान

एणांकांशु परेश भाल फलकां
बालार्क कोटि प्रभां।
ज्वालाबद्ध महार्घ रत्न निचयां
कंदर्प दर्पोज्वलाम् ॥

मंत्र

॥ ॐ नृं नृं नृं नृसिंहाय नमः ॥

यह मंत्र अपने आपमें अद्भुत चमत्कार रखने वाला है, सब प्रकार की विघ्न-बाधाओं को दूर करके सुख-सम्पदा देने में यह मंत्र अमोघ तथा परीक्षित है।

मित्रता—जिन स्त्रियों या पुरुषों का मूलांक ७ या १ है, वे सभी आपके सच्चे मित्र साबित हो सकते हैं। १, १०, १९, २८, ७, १६, २५ तारीखों में जन्म लेने वाले स्त्री-पुरुष आपके जीवन में सहायक होंगे

तथा मित्रता की दृष्टि से ये परम विश्वसनीय सिद्ध होंगे। इसके साथ ही जिन व्यक्तियों का जन्म जनवरी-फरवरी महीनों में उपर्युक्त तारीखों में हुआ है, वे तो निस्सन्देह आपके लिए अनुकूल ही नहीं, सहायक भी सिद्ध होंगे।

शुभ वर्ष— आपका मूलांक ७ है अतः ७, १६, २५, ३४, ४२, ५२, ६१, ७०, ७८, ८८ तथा ९७ वर्ष भाग्यकारक एवं उन्नतिदायक होंगे। विचार करके देखें तो आपके जीवन में १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३, ८२ तथा ९१वें वर्ष भी उन्नतिदायक एवं श्रेष्ठ ही रहेंगे। साथ ही वे वर्ष या सन् जिनमें ७ का पूरा-पूरा भाग लगता है। आपके लिए उन्नतिसूचक एवं जीवन में मोड़ देने वाले सिद्ध होंगे, इस दृष्टि से आगे सन् १९७४, १९८१, १९८८, १९९५ तथा २००२ सन् भी श्रेष्ठ एवं भाग्यवर्धक रहेंगे।

वास्तव में आपका साहस धन्य है कि अनेक विपत्तियों, विपरीत परिस्थितियों एवं संघर्षों के बीच भी अपनी नैया खे रहे हैं तथा आगे बढ़ रहे हैं।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—वे सभी प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति जिनका मूलांक ७ रहा है।

१.	रानी एलिजाबेथ	जन्म	७ सितम्बर	मूलांक	७
२.	सर जॉन फेंक्लिन	"	१६ अप्रैल	"	७
३.	कवि ब्राउनिंग	"	७ मई	"	७
४.	विलियम वर्डसवर्थ	"	७ अप्रैल	"	७
५.	श्यामाप्रसाद मुकर्जी	"	७ जुलाई	"	७
६.	रामकृष्ण डालमियाँ	"	७ अप्रैल	"	७
७.	विलियम मार्कोनी	"	२५ अप्रैल	"	७
८.	आई० एस० जौहर	"	१६ मार्च	"	७
९.	चन्द्रशेखर	"	७ जुलाई	"	७
१०.	जितेन्द्र	"	७ अप्रैल	"	७
११.	हेमामालिनी	"	१३ अक्तूबर	"	७

१२. लीला नायडू	जन्म	७ फरवरी	मूलांक	७
१३. रागिनी	"	२५ मार्च	"	७
१४. ऊषा खन्ना	"	७ अक्तूबर	"	७
१५. मदन मोहन	"	२५ जून	"	७
१६. ओ० पी० नय्यर	"	१६ जनवरी	"	७
१७. अटलबिहारी वाजपेयी	"	२५ दिसम्बर	"	७
१८. प्रो० बलराज मधोक	"	२५ फरवरी	"	७

मूलांक-८

अंग्रेजी तारीख—८, १७, २६

आठ का अंक ज्योतिष जगत में 'विश्वास का अंक' गिना जाता है। यह अत्यन्त प्रबल नियंत्रक अंक है, क्योंकि इसका अधिष्ठाता ग्रह 'शनि' है। यह प्रत्येक राशि पर ढाई वर्ष रहकर तीस वर्षों में समस्त ग्रहों का पूरा चक्कर लगा लेता है। नौ ग्रहों में शनि ही एक ऐसा ग्रह है, जिसके एक चक्कर में समस्त ग्रहों के चक्कर समाहित हो जाते हैं।

यह आपका सौभाग्य है कि आपका अमूल्य जीवन ग्रहराज शनि के नियंत्रण में है और वह आपके अन्तःकरण का स्वामी है। शनि अपने आप में इतनी अधिक जटिलताएँ लिए हुए है कि इसे समझना खगोल विशारदों के लिए भी एक समस्या है, ठीक इसी प्रकार आपका जीवन भी भयंकर संघर्षों एवं उथल-पुथल से भरा हुआ होगा और किस क्षण कौन-सी घटना घट जायेगी, इसका आभास सहज ही नहीं

हो सकेगा। आपके जीवन में इतने अधिक परिवर्तन रहेंगे कि आप को भली प्रकार समझ लेना दूसरों के लिए कठिन ही होगा। हां, दूसरे यह कह सकते हैं कि हमने इन्हें समझ लिया है, परन्तु ऐसा कह कर वास्तव में वे भ्रम में ही हैं। आपके चेहरे को देखकर आपके मन की थाह प्राप्त कर लेना अत्यन्त कठिन है और अगले ही क्षण आप क्या करने जा रहे हैं, इसका अनुमान तो दूसरे क्या, आपके निकटम मित्र और आपकी पत्नी भी नहीं लगा सकती।

आपकी वृत्ति अन्तर्मुखी अधिक है। बिना शोर किये, बिना आत्मप्रचार किये और बिना ढोल पीटे आप अपना कार्य करते रहते हैं, परन्तु ऐसा कार्य अन्दर से खोखला नहीं, ठोस होता है। जब भी वह कार्य जनता की नजरों में आता है तो जनता आश्चर्यचकित हो उठती है और आपकी दाद दिए बिना नहीं रहती।

आप स्वभावतः गंभीर प्रकृति के हैं। बचपना आपके जीवन में नहीं रहा और छिछोरापन ही आपके व्यक्तित्व में पनप सकता है। आप जो भी कहेंगे, ठोस प्रमाणों के आधार पर होगा, जो भी बात कहेंगे, वह अनुभव की भित्ति पर आधारित होगी। लोगों में यह साहस नहीं होगा कि आपकी बात को मजाक में उड़ा दें, क्योंकि वे यह जानते हैं कि आपका कथन पूर्ण विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होता है। इस गंभीरता से जहाँ आपको लाभ है, वहाँ कुछ हानियां भी हैं लाभ तो यह है कि इस प्रकार से आप अपने लिए काफी समय बचा लेते हैं, जिसमें आप ठोस एवं महत्वपूर्ण कार्य कर सकें, परन्तु हानि यह होती कि इस प्रकार से आप सामाजिक जीवन से अलग-थलग हो जाते हैं और आपका जीवन एक प्रकार से एकान्ती बन जाता है। यह भी शनि ग्रह का प्रभाव है और इस ग्रह के प्रभाव के फलस्वरूप आप अपनी प्रकृति को बदल नहीं सकते।

ज्योतिष जगत में शनि वायु तत्व प्रधान है और इसी कारण आपके जीवन और व्यक्तित्व पर भी वायु तत्व का सर्वाधिक प्रभाव समझना चाहिए। वायु भी जब मंद-मंद चलती है तो लोगों को सुखदायक

रहती है, परन्तु जब वही वायु प्रचण्ड प्रभंजन का रूप धारण कर लेती है तो ऐसी विकराल हो जाती है कि उससे अच्छे-अच्छे थर्रा उठते हैं। ठीक इसी प्रकार आपका व्यक्तित्व भी ऐसा है कि जब तक आप किसी के मित्र और सहायक हैं तो प्रत्येक रूप से आप उसे सहायता पहुँचाते रहते हैं और विशाल वट वृक्ष की तरह अपनी शीतल छाया से उसे सुख पहुंचाते रहते हैं, परन्तु जब आप किसी पर क्रोधित हो जाते हैं या किसी से शत्रुता कर लेते हैं तब आपका रूप प्रचण्ड प्रभंजन की तरह हो जाता है और सभी प्रकार से आप उसे नष्ट करने पर तुल जाते हैं। मन में इस प्रकार से वैर बाँध लेते हैं कि उसे परास्त करके ही दम लेते हैं। अतः आपके रौद्र रूप का सामना कम ही कर पायेंगे, यद्यपि यह रौद्र रूप कभी-कभी ही देखने को मिलेगा।

आपके जीवन में बीच की स्थिति नहीं के बराबर है। लाभ भी होगा तो अत्यन्त उच्च स्तर का होगा, परन्तु जब-जब भी गगनमंडल में शनि अस्त, वक्री या दूषित होगा आपको ऐसी हानि का सामना करना पड़ेगा, जो दूसरा तो सहन ही न कर सके, पर आप ऐसे झटके भी झेल लेंगे और थोड़े ही दिनों के बाद स्थिति को नियंत्रण में ले आयेंगे।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ आप शान्त, सौम्य एवं एकान्तप्रिय होंगे। बहुत अधिक हँसी-मजाक करना या गप्पें उड़ाना या व्यर्थ में समय व्यतीत करना आपके लिए सहनीय नहीं। इसलिए आप दिखावा भी नहीं के बराबर ही करेंगे। प्रचार-प्रसार से कोसों दूर यदि आपको मौन साधक या मौन चिन्तक कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

ऊपर से रूखे दीखने पर भी आप अन्दर से कोमल हैं। ऊपर से वज्रवत् प्रतीत होते हुए भी आपका हृदय कोमल कुसुमवत् है। आपका हृदय नवनीतवत् कोमल है जो प्रेम पाने के लिए लालायित है और जिस पर आप प्रिय हैं, वही आपका ऐसा हृदय देख सकता है, सभी नहीं।

मित्रों के आप अच्छे मित्र हैं। यद्यपि लोग आपको समझ नहीं

पायेंगे और यों भी जीवन में आपके इने-गिने ही मित्र होंगे, पर जिसे आपने मित्र मान लिया उसके लिए सब कुछ बलिदान करने को आप तैयार रहते हैं। आप स्वयं हानि उठा लेंगे, खुद परेशानी भोग लेंगे, पर मित्र को आंच नहीं आने देंगे, यही आपके व्यक्तित्व की खूबी है।

आपको न तो फूहड़पन प्रिय है और न घटिया स्तर की बात ही। जीवन में छोटे और तुच्छ कार्य से आप कभी भी सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। आपकी हरदम यही आकांक्षा रहेगी कि ऊंचा पद मिले, पूरा सम्मान मिले, कारोबार भी हो तो बड़ा कारोबार हो, ऊंचा पद, ऊंचा व्यक्तित्व, ऊंचा व्यापार, ऊंचा कार्य, सभी कुछ उच्चस्तरीय हो निम्न, छोटा और तुच्छ कार्य न तो कभी पसन्द आयेगा और कभी न आप उससे सामंजस्य ही कर पायेंगे।

यह आपका ही सबल और सजग व्यक्तित्व है कि आप जीवन के इतने उतार-चढ़ाव देखकर भी टूटे नहीं हैं। यदि आपकी जगह कोई दूसरा होता तो कभी का मर-खप गया होता, परन्तु आपका व्यक्तित्व सही शब्दों में लचीला है और इसीलिए इतने झटके झेल सका है। सुख-दुःख की अनुभूति अन्य किसी की अपेक्षा आपको ज्यादा ही हुई है, इसीलिए जीवन को सही तरीके से आप ही व्यक्त कर सकते हैं, अन्य दूसरा नहीं।

शनि का अर्थ है सेवा। शनि प्रधान व्यक्ति सेवाभावी होते हैं। दुःखी, आतंकित, परेशान एवं रोगी व्यक्तियों की सेवा आप निश्छल भाव से करेंगे। उसमें न तो कृत्रिमता होगी और न दिखावा ही। आप इस संबंध में जो भी करेंगे, वह केवल सेवा-भाव के कारण। दूसरे लोगों को यथासम्भव प्रसन्न बनाए रखना या दूसरों की सेवा करना आपका स्वभाव बन गया है; उसमें कोई दिखावा या स्वार्थ नहीं है और न ढोल पीट कर प्रचार करने का उद्देश्य।

नौकरी से आपको घृणा नहीं है और समय तथा परिस्थिति यदि निम्न से निम्न सेवा या नौकरी करने को भी बाध्य करे तो भी आप उसमें झिझकेंगे नहीं। हां, उसमें यह मूलभूत संकेत अवश्य होना

चाहिए कि उससे आपको पैसा मिलेगा। पैसे के लिए शनि-प्रधान व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। पैसे का जितना सदुपयोग आप जानते हैं, दूसरा नहीं जानता।

यह ठीक है कि जीवन में पैसे का मूल्य है और आज के इस अर्थ-प्रधान युग में धन-संचय एक अच्छी आदत है और इसके लिए कठोर से कठोर श्रम किया जाय तो भी करना चाहिए, परन्तु ज्योतिष की सार्थकता तो तभी है जब कि आपको सही रास्ते से परिचित कराये। आप नौकरी कर रहे हैं तो आपको यह जान लेना चाहिए कि आपका भाग्योदय सरकारी नौकरी की अपेक्षा प्राइवेट फर्म में नौकरी करने से है और प्राइवेट फर्म भी यदि लोहे से संबंधित हो या लोहे का सामान तैयार करती हो तो उसमें कार्य करने से शीघ्र एवं श्रेष्ठ भाग्योदय की गुंजाइश रहती है। यदि आप व्यापारी हैं तो आपको चाहिए कि आप लोहे से संबंधित व्यापार करें। लोहे का सामान बनाना या लेन-देन करना या कुछ ऐसा कार्य करना, जो मूलतः लोहे से संबंधित हो तो उसमें आपका भाग्योदय तीव्रगति से हो सकता है। यदि ऐसा संभव न हो तो द्वितीय वरिष्ठता आप काली वस्तुओं को दीजिये तथा काली वस्तुओं का व्यापार कीजिये। उदाहरणार्थ, तेल-तिलहन के सौदे, तेल का व्यापार, तिलों की खरीद-बिक्री, लोहे के सामान की एजेंसी आदि कार्य प्रारंभ कीजिये। शनि का अधिकार तेल तथा लोहे पर है। यह क्रूर ग्रह है। यदि प्रतिकूल हो तो दिवाला पिटवा सकता है, परन्तु यदि अनुकूल हो तो लाखों-करोड़ों का स्वामी भी बना सकता है।

आठ का मूलांक भाग्याधिष्ठाता अंक भी है, अतः आकस्मिक द्रव्य प्राप्ति के मौके जितने आपके जीवन में होंगे उतने किसी अन्य के जीवन में नहीं। यों शनि स्वयं चार भाग्यस्वामी है, अत कभी को, किसी भी क्षण भाग्योदय कर सकता है। यह शनि की प्रकृति है कि वह क्षणों में ही अमीर को दिवालिया और दिवालिये को अमीर बनाता है, अतः मैं आपको सट्टे की सलाह तो नहीं देता, परन्तु आपको यह सलाह अवश्य दूंगा कि आप विभिन्न प्रान्तों के लॉटरी-टिकट नियमित रूप से खरीदते

रहें। खरीदते समय दो बातों का ध्यान रक्खें। लॉटरी-टिकट आप उसी दिन खरीदें, जो दिन आपके लिये अनुकूल हो, साथ ही यह भी ध्यान रक्खें कि ऐसे नम्बरों का टिकट खरीदें जिनका कुल योग आठ होता हो। दूसरी बात यह भी है कि आप यथासंभव ऐसे ही प्रान्त की लॉटरी का टिकट खरीदें जो ८, १७ या २६ तारीख को खुलती हों। यदि आप इन सबका ख्याल रख कर टिकट खरीदें तो अनुकूल ग्रहस्थिति आने पर आप निस्सन्देह भाग्यशाली बनेंगे, इसमें सन्देह नहीं।

यह आपका स्वभाव ही कहना चाहिये कि आप जिस किसी भी कार्य में लग जाते हैं, भूत की तरह लग जाते हैं। उस समय न खाना-पीना सूझता है और न आमोद-प्रमोद ही। जब तक वह कार्य पूरा नहीं हो जाता आपको चैन नहीं पड़ता और उसे पूरा करके ही आप दम लेते हैं।

धार्मिक कार्यों में आपकी गहरी रुचि नहीं परन्तु फिर भी यदि उत्सव या अन्य कार्य आ पड़ता है तो आप हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जाते हैं और इस प्रकार के प्रत्येक उत्सव को सफल बनाकर ही दम लेते हैं। यही कारण है कि सभा-सम्मेलनों, उत्सवों, पार्टियों आदि की जिम्मेवारी आप पर सौंपकर अधिकारी निश्चित हो जाते हैं और वे यह मान लेते हैं कि यह कार्य तो सफल होगा ही और वस्तुतः आप उसे सफल करके दिखा भी देते हैं, परन्तु इतनी तीव्रता और वेग भी ठीक नहीं। आपने स्वयं जीवन के अनुभव से यह सीखा होगा कि इस प्रकार भूत की तरह काम के पीछे लग जाने से आप अपनी हानि भी कर लेते हैं। असावधानी और गफलत की वजह से कष्ट भी उठाते हैं। कार्य की सफलता की धुन में आप अपनी जेब से व्यय कर डालते हैं और इस कारण से आगे चलकर आर्थिक संकट भी उठाना पड़ता है, अतः आपको चाहिए कि आप सोच-समझकर कार्य करें, सावधानी से अपने आपको बचाते हुए पग उठायें।

आपके जीवन में आमोद-प्रमोद के क्षण अत्यन्त कम होंगे, क्योंकि मैं ऊपर ही कह आया हूँ कि आपका जीवन निरन्तर गतिशील और

परिवर्तनमय है, अतः कभी आप अपने को सफलता के शिखर पर देखेंगे तो कभी पतन के गर्त में, अतः आपका अधिकांश समय इस विपरीतता के सामंजस्य में ही व्यतीत हो जायेगा और मनोरंजन के बहुत ही कम क्षण आपके जीवन को प्राप्त हो सकेंगे, परन्तु यह मनोरंजन की कमी आपको खलेगी नहीं, क्योंकि आपके विचारानुसार तो 'कार्य ही मनोरंजन' है। अतः कार्यव्यस्तता में ही आप एक प्रकार से मनोरंजन ढूंढ लेंगे और अपने आपको समय तथा स्थिति के अनुकूल बनाये रखेंगे।

निराशा की भावना आपमें कुछ अधिक ही होगी, क्योंकि एकान्तप्रियता ऊब और निराशा को ही जन्म देती है, साथ ही अन्तर्मुखी प्रधान व्यक्ति न तो शीघ्र घुलमिल सकते हैं और न ही अधिक बतिया सकते हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि मुंह पर भले ही आपको 'चुप्पा' कहें, पर पीठ पीछे आपके कार्यों की प्रशंसा होगी, आपका सम्मान होगा और आपके बारे में श्रेष्ठ विचार उनके दिलों में स्थापित होंगे।

एक बात और वह यह कि कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जब आप हर क्षण आशंकित रहते हैं कि कहीं किसी से व्यर्थ की तकरार न हो जाए, कहीं एक्सीडेंट न हो जाय, किसीसे लड़ाई-झगड़ा न हो जाय या कुछ ऐसा न हो जाय जिससे आप खतरे में पड़ जायें। इन दिनों आप हर समय चौकन्ने, कुछ-कुछ डरे हुए और परेशान से रहते हैं। यही वह समय है जबकि आपका ग्रह शनि आपके अनुकूल नहीं है और ऐसे समय में आपको चाहिए भी कि आप जागरूक एवं सावधान रहें, व्यर्थ की तकरार मोल न लें और ऐसा कुछ भी न कर बैठें जिससे कि आपके व्यक्तित्व को किसी भी प्रकार की ठेस पहुँचे।

आप मूलतः भौतिक तत्व प्रधान व्यक्ति हैं, जो काम को ही भगवान मानता है, पत्थरों के देवताओं को ईश्वर और आराध्य नहीं। इसलिये आपको ढोंग और पाखण्ड से घृणा है। आंख बन्द कर, पवित्र कपड़े पहन कर आप पूजा और ध्यान नहीं कर पा सकेंगे, परन्तु जब भी आप पर संकट आयेगा या परेशानी में उलझेंगे तो अचानक ही आपका रुझान ईश्वर की ओर चला आयेगा, कुछ अधिक समय

पूजा-पाठ व्यतीत होने लगेगा और आप आस्तिक-से बनने लगेंगे, परन्तु यह होगा कुछ ही समय तक, बाद में तो फिर आप उसी राह पर आ जायेंगे।

जैसाकि ऊपर कह चुका हूँ आप भौतिक तत्व प्रधान व्यक्ति हैं, अतः अर्थ को ही जीवन का सर्वस्व भी समझेंगे, येन्-केन-प्रकारेण धन का संचय और संग्रह आपके जीवन की हॉबी होगी। जीवन का जो भी प्रयत्न होगा, जो भी परिश्रम होगा, उसका मूल यही अर्थ होगा। जिस उत्साह और सावधानी से आप अर्थ संचय करेंगे, उतनी ही कंजूसी भी बरतेंगे। व्यय आप नहीं कर सकेंगे। 'एक्सपेन्स पॉवर' आपकी अत्यन्त कमजोरी होगी।

शनि मूल रूप से व्यसनी है, अतः यदि आपका जीवन पर थोड़ा-सा भी नियन्त्रण फिसला कि आप व्यसन की ओर उन्मुख हो उठेंगे। शराब, भाँग, अफीम, चरस, तम्बाकू की ओर शौक बढ़ जाना कोई बड़ी बात नहीं, अतः आप इस ओर से जागरूकता बरतें। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि एक बार व्यसन में उलझने के बाद पिण्ड छुड़ाना आपके वश की बात नहीं। आलस्य, अकर्मण्यता, शिथिलता जैसे दुर्गुण भी आपमें पुंजीभूत हो सकते हैं।

आप शनिसे संचालित हैं, अतः आपका शरीर कुछ स्थूलता के लिए हुए हल्के या गेहुएं रंग का होगा, आँखों में ललाई हर समय दिखाई देगी। काले बाल कुछ पड़े होंगे तथा स्वभाव में रूखापन एवं बोली में कठोरता सहज ही देखी जा सकती है, परन्तु आप धन्यवाद दें शनि को कि उसने आपको अल्पायु में ही चतुर और अनुभवी बना दिया है तथा मनुष्य को पहचानने की शक्ति कुछ विशेष ही दे दी है!

सावधानियां—यह ठीक है कि आप चतुर हैं, व्यवहारकुशल हैं और दूसरों को अपने विचारों से सहज ही प्रभावित कर सकते हैं, परन्तु इसके साथ ही आप में कुछ दुर्गुण भी हैं जिन पर काबू पाना चाहिए।

२. अपनी स्त्री से असत्य व्यवहार मत कीजिए और न उसे धोखे में रखने का प्रयत्न करें, क्योंकि हो सकता है कि कभी आपकी कलई

खुल जाय और तब आपको नीचा देखना पड़े।

२. अपने आप पर नियंत्रण रखिए, भूल से भी इधर की बात उधर कहने की कोशिश मत कीजिए, इससे आपकी सच्चाई में व्यवधान पड़ता है।

३. संकोची स्वभाव को जहाँ तक हो सके जल्दी ही त्याग दीजिए। आपकी कुछ ऐसी प्रवृत्ति है कि किसी भी अधिकारी से मिलते वक्त हिचकिचाते हैं, अपनी बात स्पष्ट नहीं कह पाते, कुछ-कुछ घबरा से जाते हैं। 'इन्टरव्यू' आदि में भी आपकी इसी प्रवृत्ति के कारण आपको हानि उठानी पड़ती है।

४. एक जगह स्थिर और जड़ होकर मत बैठ जाइए, इसके विपरीत जहाँ तक हो सके यात्राएँ कीजिए, क्योंकि यात्राओं से आप ज्यादा लाभदायक स्थिति में रहते हैं। जहाँ तक हो सके, लोगों से सम्पर्क बढ़ाइये, उनके घर जाइए, समय-समय उन्हें अपने घर पर निमंत्रित कीजिये, इससे आपका सामाजिक क्षेत्र बनेगा।

५. हो सकता है, पत्नी का स्वभाव ठीक न हो या उससे निरन्तर नाड़ी संबंधी या पेट संबंधी बीमारियों से ग्रस्त रहना पड़े, पर इतने से ही अपने स्वभाव को चिड़चिड़ा मत बना दीजिए। जहाँ तक हो सके, उसे तसल्ली दीजिए, मानसिक और वैज्ञानिक रूप से उसे उसका इलाज कीजिए।

६. दूसरों के भरोसे अपने कार्य को मत छोड़ दीजिए, क्योंकि इससे आप स्वयं जान चुके हैं कि हानि ही होती है, अतः आप स्वयं सक्रिय रूप से उसमें हाथ बँटाइयें, बढ़-चढ़कर भाग लीजिए।

७. यदि आप यह मान बैठे हैं कि आपके भाई या आपका समाज आपको किसी प्रकार की सहायता देंगे तो यह आपका कोरा भ्रम ही है। न तो आपके भाई और न आपके संबंधी ही आपकी सहायता कर सकते हैं। जो कुछ भी होगा आपके स्वयं के प्रयत्नों से ही होगा। आप 'सैल्फ मेड मैन' हैं, अपने आपको उठाने के लिए किसी की प्रतीक्षा मत कीजिए, बल्कि उठ जाइये।

८. दुश्मनों से घबराइये मत। हो सकता है वे न्यायालय में जाएँ, यह भी हो सकता है कि वे आपको धमकी दें, पर इन सबसे आपको विचलित नहीं होना है। वे आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकते। निश्चितता से आप आगे बढ़ते रहें, अपने कार्य में सक्रिय बने रहें।

९. यथासंभव ऊँचे पर्वतों की यात्रा तथा गहरे जल में तैराकी से बचे रहें, क्योंकि ये दोनों ही स्थितियाँ आपके लिए ठीक नहीं हैं, इस, लिए यदि कभी ऐसा समय आ भी जाय तो आप सावधानी ही बरतें।

१०. प्रेम-प्रेम के चक्कर में आप मत उलझिए, क्योंकि यह आप का क्षेत्र नहीं है, इस प्रकार से तो आप अपनी ही हानि कर लेंगे। स्त्रियों से आपको लाभ नहीं है, बल्कि हानि ही है, अतः जहाँ तक हो सके आप इस क्षेत्र को छोड़ ही दें। हो सकता है क्षीण ग्रहस्थिति में आपको अपमान के कड़वे घूँट भी पीने पड़ें।

११. अधिक भौतिकवादी होना ठीक नहीं, जीवन में कुछ-न-कुछ समय ईश्वराधना में भी व्यतीत करना चाहिए, तभी आपको सच्ची शांति एवं पूर्ण सन्तोष प्राप्त हो सकेगा।

१२. जीवन में आप अधिक हठ को प्रश्रय न दें, जहाँ तक हो सके सहिष्णु बनने का प्रयत्न करें, जहाँ दूसरों को सीख देने का विचार रखते हैं, वहाँ आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि दूसरों की बातों को भी मानना ठीक रहता है। अतः दूसरे व्यक्तियों की सलाह पर भी गौर करें और उचित हो तो उस पर अमल करने का भी प्रयत्न करें।

१३. अत्यधिक सावधानी और जागरूकता रखते हुए भी आप कभी-कभी चिन्ता, परेशानी या दुःख में पड़ जाते हैं और आपको यह भान ही नहीं होता, अपितु उल्टे आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं, ऐसा क्यों हुआ? आपको चाहिए कि आप अपने अशुभ समय का ध्यान रखें और अशुभ समय या दुर्बल ग्रहस्थिति में लेन-देन या किसी भी प्रकार का कोई नया व्यापारिक समझौता न करें।

१४. आपकी प्रकृति कुछ शंकालु है, परन्तु आपको यह ध्यान में रखना चाहिए कि आप अपने जीवन में अधिक संशय को स्थान न दें।

पत्नी पर इतनी अधिक शंका या संशय करना ठीक नहीं।

१५. ठीक है कि जीवन में धन का महत्व है और पैसा ही इस युग का आधार है, परन्तु पैसे के लिए कोई भी गर्हित कार्य करने की ओर उन्मुख न हों। आप कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे आपका व्यक्तित्व खण्डित हो या उसमें बाधा पहुँचे।

१६. अपने भविष्य के लिए दुःखी न हों और हर समय दूसरों के आगे भाग्य का रोना-गाना आपके लिए उचित भी नहीं है। होने दो, जो कुछ भी होता है। अपने आप सब कुछ ठीक हो जाएगा और भविष्य की अँधेरी घाटियों में भी अपने आप रोशनी की किरण दिखाई देने लग जायेगी। आप मात्र एक बात का ध्यान रखें—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन' और बाकी सब ईश्वर या प्रकृति के भरोसे छोड़ दें।

१७. जीवन में एकांतता और एकांगिता ठीक नहीं, इनमें आप धीरे-धीरे ऊब जाएँगे और अपने आपको अकेला-सा अनुभव करेंगे इसलिए इष्ट-मित्रों में बैठिए, कुछ समय मित्रों को भी दीजिए।

१८. हो सकता है आपका अधिकांश जीवन कंटकाकीर्ण रहा हो परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि भविष्य-पथ पर भी काँटे ही मिलेंगे, उस पर निश्चित रूप से फूल बिखरे हैं, आवश्यकता है आगे बढ़ने की, सही राह चुनने की।

१९. आप निष्क्रिय न रहें। यों भी आप खाली हाथ पर हाथ धरे तो बैठे रहेंगे नहीं, पर फिर भी जब निराश हो जाएँगे तो [illegible] आप पर झुंझला उठेंगे और हाथ का काम भी छिटक कर दूर जा खड़े होंगे, परन्तु यह ठीक नहीं है। अपने आप पर नियंत्रण रखना ही आपके व्यक्तित्व की विशेषता है।

२०. व्यर्थ की चिन्ताओं से अपने आपको मुक्त ही रखिये, सभी अपनी-अपनी समस्याओं में निबटते रहेंगे, आप कहाँ तक किसी की समस्याओं से जूझते रहेंगे, अतः जहाँ तक हो सके सीमित रहिये।

२१. आप जिस रूप में और जिस प्रकार से प्रगति करते जा रहे

हैं, वह ठीक है। एकदम से बड़ी छलांग लगाने का प्रयत्न मत कीजिए, क्योंकि इससे न तो ऊपर का किनारा ही हाथ लगेगा और न आधार ही पुनः प्राप्त होगा।

२२. घर की स्त्री को छोड़कर दूसरी प्रेमिका के चक्कर में मत पड़िये, इससे जहां आपको धन-हानि है, वहां हाथ भी कुछ नहीं आने का, अतः व्यर्थ समय बरबाद करना बुद्धिमानी नहीं।

२३. जहां तक हो सके नशे से दूर ही रहिए, क्योंकि एक बार नशे की गिरफ्त में आने के बाद आप सहज ही उससे छूट न सकेंगे और यह एक प्रकार से आपके पतन का ही चिह्न होगा।

२४. भुंझलाहट, खीझ, परेशानी की अपेक्षा आप अपने आपको हलका-फुलका बनाइये, जीवन में मुस्कराहट और प्रसन्नता को स्थान दीजिए, तभी आपके जीवन की सार्थकता है।

स्वास्थ्य—१. ऊपर ही कहा जा चुका है कि आपका ग्रह वायु तत्त्व प्रधान है। अतः जीवन में वात रोग से आप यदा-कदा पीड़ित रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य में क्षीणता रहेगी तथा आंतों से संबंधित रोग, मलबद्धता, कोष्ठबद्धता आदि अड़चनें यदा-कदा आपको सताती रहेंगी।

२. वृद्धावस्था में गठिया का रोग, रक्तचाप, हृदय रोग, रक्त-न्यूनता, रक्त-दूषिता, सिर में चक्कर आना तथा हाथ-पैरों का टूटना आदि बीमारियां बनी रहेंगी, इसलिए समय रहते ही आपको इस ओर से सावधानी बरतनी है।

३. विटामिन ए०, बी० तथा ई० की ओर ध्यान दें, क्योंकि यदा-कदा इस प्रकार के विटामिन की न्यूनता के फलस्वरूप आप कष्ट भी पायेंगे। अतएव समय-समय पर डाक्टरों से सलाह लेते रहें।

४. कुष्ठ रोग, श्वास नलिका, रक्त विकार, जूड़ी, गंजापन, मूत्राशय की कमजोरी, पेशाब में जलन होना, कान-नाक का दर्द, अत-एव इनकी ओर से सावधानी बरतना ही आपके लिए उचित है।

५. जहां तक हो सके आप हरे साग का सेवन करते रहें, पालक,

पुदीना, हरा धनिया, बथुआ आदि साग कच्चे व पक्के दोनों ही रूपों में आपके लिये उपयोगी हैं। अतः इनका भरपूर सेवन करते रहें।

६. फलों का सेवन आपके लिए परमोपयोगी एवं आवश्यक है।

निर्बल समय—मूलांक आठ वाले व्यक्तियों को निर्बल समय का पूरा ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि इनका ग्रह शनि 'क्षणे तुष्टा क्षणे रुष्टा' है, जो लखपति एवं ऐश्वर्यशाली बना देता है जो जरा सी असावधानी से पतन के गर्त में भी गिरा देता है। दिसम्बर, जनवरी, मार्च तथा अप्रैल आपके लिए शुभ नहीं हैं। इसके साथ ही साथ जब-जब भी शनि ग्रह दुर्बल, वक्री या अस्त होता है, वह समय भी आपके लिये श्रेष्ठ नहीं, इसलिए उपर्युक्त समय में शारीरिक स्वस्थता का पूरा खयाल रखिए, साथ ही मोटे सौदे या नया व्यापार भी प्रारम्भ मत कीजिये।

उन्नत समय—उन्नत समय के प्रति आप सदैव जागरूक रहें, क्योंकि आपका उन्नत समय अत्युत्तम होता है जो कि लाखों के वारे-न्यारे करने में समर्थ है। इस दृष्टि से २० सितम्बर से २५ अक्तूबर तथा २० जनवरी से २० फरवरी तक का समय आपके जीवन में उन्नत एवं श्रेष्ठ समय कहा जा सकता है।

शुभ तारीखें—आपका मूलांक आठ है, अतः प्रत्येक महीने की ८, १७ तथा २६ तारीख श्रेष्ठ तारीखें कही जा सकती हैं। श्रेष्ठ समय में श्रेष्ठ तारीख का संयोग कर यदि कार्य प्रारम्भ किया जाय तो प्रत्येक दृष्टि से लाभप्रद स्थिति में रह सकते हैं।

शुभ दिवस—शनिवार आपके लिए सर्वोत्कृष्ट वार है। कोई भी कार्य यदि शनिवार से प्रारम्भ करें तो शुभ एवं श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ रंग—काला, नीला, भूरा तथा बैंगनी रंग आपके लिए सौभाग्यसूचक है, अतः यदि हो सके तो अपनी जेब में काले रंग का रूमाल अवश्य रखें, जोकि आपके लिए परेशानियाँ एवं बाधाएं मिटाने वाला होगा।

शुभ रत्न—आपका शुभ रत्न नीलम है जिसे संस्कृत में नील-

मणी, फारसी में नीलविल याकूत तथा अंग्रेजी भाषा में Sapphire Turquoise (सफायर टरग्यूज) कहते हैं। इसके मुख्यतः पाँच गुण हैं।

१. इसका रंग नीला होता है।

२. यह चमकीला होता है, तथा इसमें से पतली-पतली नीली किरणें निकलती-सी दिखाई देती हैं।

३. यह चिकना होता है

४. यह पारदर्शी होता है, तथा

५. इसके कोण सुडौल होते हैं।

शुभ समय में पंचधातु की अंगूठी में पाँच रत्ती का नीलम जड़वा कर मध्यमा अँगुली में पहनने से सभी बाधाएँ दूर होती है, यह निश्चित है।

व्रतोपवास—यदि साढ़ शती चल रही हो या नीलम पहनने की क्षमता न हो तो शनिवार को एक समय भोजन करना चाहिये तथा उस भोजन में गुड़ तथा काले तिल का लड्डू अवश्य होना चाहिए। इसी प्रकार यथासंभव तिल, चर्मपादुका आदि का दान भी करना चाहिए।

देवता—आपके प्रधान देवता शनि हैं, अतः शनि की पंचधातु की मूर्ति बनाकर उसके सामने गुग्गुल धूप जलावें तथा शुद्ध घी का दीपक जलाकर निम्न ध्यान पढ़ें।

ध्यान—नीलांजनाभं मिहिरेष्ट पुत्रं
ग्रहेश्वरं पाश भुजंग पाणिम्।
सुरा सुराणां भयदं द्विबाहु
स्मरे शनि मानस पंकजेऽहम्॥

इसके पश्चात् नित्य १०८ मंत्र जप कर एक माला निम्न मंत्र की अवश्य फेरें।

मंत्र—

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्री शनैश्चराय नमः॥

मित्रता—वे सभी स्त्री या पुरुष आपके अच्छे मित्र साबित होंगे,

जिनका मूलांक ८ है या जिनका जन्म ८, १७ तथा २६ तारीख का हुआ है। इसके अतिरिक्त आप गौर करें तो १, ४, ८, १२, १६, २०, २४ तथा २६ तारीखों को जन्मे स्त्री-पुरुष भी आपके लिए सहायक तथा मददगार हो सकते हैं। अतः यदि नौकर रखते समय, साझेदारी या व्यापार करते समय इन मूलांकों का ध्यान रखें तो आप निश्चय ही लाभप्रद स्थिति में रहेंगे।

शुभ वर्ष—आपका मूलांक ८ है, अतः जीवन के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० तथा ८९वां वर्ष श्रेष्ठ एवं उन्नत रहेंगे, इसके साथ ही २ तथा ४ मूलांक के लिए जो वर्ष श्रेष्ठ तथा उन्नतिदायक बताये हैं वे वर्ष भी आपके लिए सौभाग्यसूचक रहेंगे। इसके साथ ही वे सन् भी जीवन में महत्त्वपूर्ण माने जायेंगे, जिनमें आठ का पूरा-पूरा भाग जायगा, उदाहरणार्थ, भविष्य के लिए सन् १९७६, १९८४, १९९२, २०००, २००८, २०१६, २०२४ तथा सन् २०३२ भी आपके लिए उन्नतिसूचक एवं भाग्योदयकारक रहेंगे।

वास्तव में आप साहसी हैं। विपत्तियों के सामने खम ठोककर खड़े होने वालों में से हैं तथा एक ऐसे दीपक हैं जो आंधियों को चिढ़ाकर भी प्रबल प्रभंजन में जलते रहने वाले हैं, पुनः जीवन में उच्च स्तर पर आप पहुंचेंगे ही, इसमें सन्देह नहीं।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—वे सभी प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति जिनका मूलांक आठ रहा है :

१.	क्वीन मेरी	जन्म	२६ मई	मूलांक	८
२.	जोसेफ चेम्बरलेन	"	८ जुलाई	"	८
३.	जार्ज बर्नार्ड शॉ	"	२६ जुलाई	"	८
४.	प्रिंस एल्बर्ट	"	२६ अगस्त	"	८
५.	एडमिरल डेवे	"	२६ दिसम्बर	"	८
६.	सर हम्फी डेवे	"	१७ दिसम्बर	"	८
७.	जे० डी० राकफेलर	"	८ जुलाई	"	८
८.	डॉ० जाकिर हुसैन	"	८ फरवरी	"	८

९. स्वामी शिवानंद	जन्म	८ सितम्बर	मूलांक ८
१०. कैलाश नाथ काटजू	"	१७ जून	" ८
११. गुरु नानक देव	"	८ नवम्बर	" ८
१२. हेरी० एस० ट्रूमेन	"	८ मई	" ८
१३. हैदर अली	"	८ दिसम्बर	" ८
१४. सी० राजगोपालाचारी	"	८ दिसम्बर	" ८
१५. माओ त्से तुंग	"	२६ दिसम्बर	" ८
१६. देवानन्द (अभिनेता)	"	२६ सितम्बर	" ८
१७. धर्मेन्द्र	"	८ दिसम्बर	" ८
१८. राजकुमार	"	८ अक्तूबर	" ८
१९. राजेन्द्रनाथ	"	८ जून	" ८
२०. अनिता गुहा	"	१७ जनवरी	" ८
२१. बी० सरोजादेवी	"	८ जनवरी	" ८
२२. ललिता पावर	"	१७ अप्रैल	" ८
२३. नन्दा	"	७ जनवरी	" ८
२४. सिम्मी	"	१७ अक्तूबर	" ८

मूलांक—९

अंग्रेजी तारीख—९, १८, २७

मूलांक नौ सर्वाधिक जाज्वल्यमान, चमकीला, प्रकाशयुक्त एवं तीक्ष्ण रश्मियों से युक्त है, क्योंकि इसका प्रतिनिधि ग्रह मंगल है, जो

आकाश में सबसे अधिक एवं लाल अंगारे की तरह दहकने तथा चमकने वाला है। स्वभाव से क्रोधी, धुन का पक्का, आन पर मर-मिटने वाला ऐसा मूलांक अपनी अलग ही विशेषता लिए हुए है, जो अन्य सभी व्यक्तियों से अलग पहचाना जा सकता है।

मंगल युद्ध का देवता है, जो मरने और मिटने में विश्वास रखता है। हार कर, परास्त होकर और नीचा देखकर यह जीने वाला ग्रह नहीं। धीरे-धीरे धुंआ छोड़ती हुई लकड़ी की तरह यह जिन्दगी व्यतीत नहीं करना चाहता, अपितु बारूद की तरह भभककर जलना और जीना चाहता है, जो क्षण-भर के लिए ही सही, पर उस एक क्षण में ही दुनिया को चकाचौंध कर देने में विश्वास रखता है।

यह अत्यन्त शक्तिशाली ग्रह है और शक्ति पर ही जीवित रहने वाला है, इसलिए नौ मूलांक वाले व्यक्ति किसी के भी आश्रित रहकर जीवनयापन को श्रेष्ठ नहीं मानते। वे दांत दिखाकर जीवन जीने में विश्वास कम करते हैं, इसके विपरीत वे स्वतन्त्र चेता बन कर ही जीवित रहते हैं, और अपने कार्यों से विश्व को चकाचौंध कर देने में विश्वास रखते हैं।

नौ मूलांक वाले व्यक्ति साहसी होते हैं, शारीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी, परन्तु उनका साहस कभी-कभी इतना अधिक बढ़ जाता है कि वह दुस्साहस का रूप धारण कर लेता है और कभी-कभी तो यह दुस्साहस अनर्थ भी करवा डालता है, परन्तु इस प्रकार से न तो ये पथच्युत होते हैं और न ही भयभीत। ये अतुल साहसी, दृढ़ निश्चयी एवं वीर होते हैं।

ये ही वे वीर होते हैं, जो विश्व में अदभुत एवं आश्चर्यजनक काम दिखाकर अक्षय कीर्ति-पताका फहराते हैं। सीने पर हाथी चढ़ा देना, दुर्गम पर्वत शिखरों की खोज में मौत की घाटियों में से गुजरना, अत्यंत ठंडे उत्तरी एवं दक्षिणी हिम प्रदेशों की खोज करना, जीते जी अग्नि में कूद पड़ना, दक्षिणी अफ्रीका जैसे बीहड़ एवं भयानक इलाकों में शिकार कर अपनी ख्याति फैलाना आदि ऐसे कार्य हैं जो अत्यधिक

साहस के श्रेष्ठ उदाहरण हैं और ऐसे उदाहरण इन्हीं व्यक्तियों के द्वारा स्थापित होते हैं।

यद्यपि ये व्यक्ति ऊपर से प्रचण्ड और विस्फोटकीय प्रतीत होते हैं परन्तु अन्दर से कोमल नवनीतवत् होते हैं। ऊपर से कठोर एवं अनुशासन प्रिय होते हुए भी भीतर से सहृदय एवं सरस होते हैं। इसीलिए जहाँ ये अनुशासन का मानदण्ड स्थापित कर सकने में समर्थ हैं वहाँ ये अपने कर्मचारियों में लोकप्रिय भी होते हैं। किसी भी दुर्द्धर्ष से दुर्द्धर्ष व्यक्ति को अपनी बात मनवाने का जिम्मा ये ले लेते हैं तो उसे मनवाकर ही दम लेते हैं, लेकिन कभी-कभी ये अपने नकली स्वाभिमान में इतने डूबे जाते हैं कि अपना अहित भी इन्हें दिखाई नहीं देता। बाहर रौब गांठने के लिए तड़क-भड़क से रहना पसंद करेंगे, परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत होगी। ये अधिक से अधिक दिखावे में विश्वास करते हैं।

हाँ, यह ठीक है कि आकाशमण्डल में जब मंगल की स्थिति श्रेष्ठ हो तब ये अपने मिशन में, कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए द्रुतगति से चल पड़ते हैं और जो भी, जैसा भी काम हो ये पूरा कर लेते हैं, परन्तु निर्बल ग्रह की स्थिति में इतने उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं कि ये भीतर ही भीतर टूट जाते हैं।

सावधानियाँ—आपको अत्यधिक जागरूक, चौकन्ना एवं मृदु रहने की आवश्यकता है, जिस समय आकाशमण्डल में निर्बल ग्रह स्थित होगी, उन दिनों आपके जीवन में निम्न घटनाएँ कभी भी घट सकती हैं।

१. निर्बल ग्रह की स्थिति में आपमें लड़ने की भावना प्रबल हो जायेगी। दिमाग एक अजीब यंत्रणा से ग्रस्त होगा यथा मिजाज गर्म रहेगा। न मालूम किस समय, किसकी बात पर आप भड़क उठेंगे, इसका कोई नियम नहीं है।

२. यद्यपि आप शान्त बने रहने की कोशिश करेंगे, परन्तु यह आपके हाथ में नहीं है। सबल ग्रह स्थिति में जिस परिस्थिति को देख कर आप उपेक्षा कर लेंगे, निर्बल ग्रह स्थिति में आप उसी परिस्थिति

में उलझ पड़ेंगे।

३. अधिकारियों को यों भी आप महत्त्व कम ही देते हैं, परन्तु इन दिनों तो आप उन्हें तिनके से ज्यादा मानेंगे ही नहीं। वे जो भी कार्य सौंपेंगे, उसमें शिथिलता, उपेक्षा, उदासीनता बरतेंगे और बात-चीत होने पर ऊटपटांग उत्तर देंगे। आप स्वयं देखेंगे कि कई बार ऐसा हो जाता है और आप स्वयं आश्चर्य करेंगे कि कल तक तो मैं ठीक था, आज अचानक मुझे यह हो क्या गया है ?

४. आपनी पत्नी से आपकी खटपट चलती ही रहेगी। दोनों के विचार तो मिल ही नहीं सकते, यह ध्रुव सत्य है, पर इन दिनों कुछ चिड़चिड़े हो जाने के कारण बात-बात पर झल्ला उठेंगे, फटकार देंगे और कभी-कभी तो आप सबके सामने उसका अपमान तक कर बैठेंगे। दाम्पत्य जीवन में पूर्णता रहने की संभावना कम ही दिखाई देती है।

५. इन्हीं दिनों आपकी पत्नी बीमार भी होगी और उसे रक्त-विकार, बालों का झड़ना, कमजोरी, मिर्गी, हिस्टीरिया, मासिक-धर्म में रुकावट या रक्तस्राव जैसी बीमारियां होंगी, जिसके फलस्वरूप आपको अपना काफी समय उस ओर देना पड़ेगा तथा अतिरिक्त व्यय भी विशेष हो जाने के फलस्वरूप मासिक बजट गड़बड़ा जायेगा।

६. इन्हीं दिनों आपको मुकदमों में भी उलझना पड़ सकता है। कोई आप पर झूठा मुकदमा भी चला सकता है, या मानहानि कर सकता है जिसकी वजह से आपको न्यायालय का दरवाज़ा खटखटाना पड़े। यों यह न्यायालय का चक्कर तो जीवन में लगा ही रहेगा। इन्हीं दिनों जमीन-जायदाद या मकान के प्रश्न को लेकर भी मुकदमेबाज़ी हो सकती है।

७. यदि आपकी नौकरी ऐसी जगह है जहां बिजली, विस्फोट-कीय पदार्थ आदि से संबंधित उद्योग हों तब तो आपको अत्यधिक साव-धान रहना है। विद्युत के तार आदि से संबंधित नौकरी होने पर आप यथासंभव अपने हाथ-पैर बचाये रक्खें।

८—यदि शिकारी हैं तो आप कुछ समय के लिए शिकार कार्य-

क्रम स्थगित कर लें, क्योंकि ऐसा समय आपके अनुकूल नहीं रहता। यदि जायें भी तो अधिक खतरा किसी भी हालत में न उठावें, सदा चौकन्ने रहें तथा जागरूकता बरतें।

९. आप स्वयं इन दिनों बीमार पड़ेंगे और रक्त से संबंधित बीमारियों से पीड़ित रहेंगे। एक बीमारी मिटायेंगे या उसका उपचार करेंगे तो दूसरी उपस्थित हो जायेगी।

१०. इन्हीं दिनों दुर्घटना के मौके भी अधिक रहेंगे। जीवन में किसी भी प्रकार की दुर्घटना ऐसी ही ग्रह स्थितियों में होगी। फिर चाहे यह दुर्घटना शारीरिक हो, मानसिक हो या सामाजिक हो। माता-पिता की मृत्यु, पत्नी का विछोह, पुत्र से अलग होना, किसी कार या स्कूटर या मोटरसाईकल का एक्सीडेंट हो जाना, पागल हो जाना आदि कुछ भी और कैसी भी स्थितियां बन सकती हैं। अतः जहां तक हो सके, अपने आपको सावधान रखिये तथा अपने मस्तिष्क पर पूरा नियंत्रण रखिये।

११. ऊपर कह चुका हूं कि आप वीर हैं, साहसी हैं तथा शत्रु को ललकार कर पछाड़ने में विश्वास रखते हैं, परन्तु निर्बल ग्रह स्थिति में आप छिप कर आघात करेंगे, या उसकी कमजोरियों का अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु कुछ ही समय बाद आपका मन इस प्रकार के व्यवहार के लिए अपने आपको धिक्कारेगा। आपकी कुल परम्परा ऐसी नहीं रही है, अतः आप ऐसा कोई भी अशोभनीय कार्य न करें।

१२. वृद्धावस्था में आप कुछ अधिक शिथिलता अनुभव करेंगे तथा धीरे-धीरे पुंसत्वहीनता के शिकार बन जायेंगे, अतः आपको चाहिए कि आप यौवनावस्था से ही अपने चरित्र तथा शरीर पर नियंत्रण रखें।

१३. आपके जीवन में एक से अधिक स्त्रियों का प्रवेश संभव है, आप इससे बच नहीं सकते और यौवनावस्था में इसके दुष्परिणाम आप देख भी न सकेंगे, परन्तु वृद्धावस्था में आप पछतायेंगे भी और परेशान भी होंगे।

१४. शराब या अन्य नशा यौवनावस्था से ही प्रारंभ हो जायगा प्रारंभ में मित्रों की संगति से यह व्यसन मुंह को लगेगा और बाद में गम भुलाने के लिए इसका प्रयोग अधिकाधिक बढ़ता जाएगा और कभी-कभी तो ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि आप नशे की सीमा-रेखा को पार कर जाये, परन्तु आपको चाहिए कि आप प्रारंभ में ही इन पर नियंत्रण रक्खें, इससे बचने के ही उपाय खोजें, क्योंकि वृद्धावस्था में यह स्थिति और परिस्थितियां आपके लिए कष्टकर हो सकती हैं।

१५. जीवन में रक्त से संबंधित बीमारियां या हृदय रोग बना ही रहेगा और आप इनसे पूर्णतया मुक्त नहीं हो सकेंगे। जीवन की प्रौढ़ावस्था मे आपको रक्तचाप जैसी कठिनाइयां भी हो सकती हैं।

१६. नकली स्वाभिमान, टीपटाप, दिखावे और प्रदर्शन को जहां तक हो सके जल्दी से जल्दी छोड़ दीजिए, क्योंकि यह तो आप स्वयं ही मानते हैं कि यह व्यर्थ का आडम्बर है और इससे कोई विशेष लाभ नहीं, फिर इस लबादे को आप कहां तक ओढ़े रहेंगे।

१७. उतावलापन आपके जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता है। कोई बोलता है तो आप उसकी पूरी बात सुनने से पहले ही अपना फतवा दे डालते हैं। कोई भी कार्य हो, जल्दी से जल्दी पूरा करने की कोशिश में रहते हैं, चाहे उससे हानि ही उठानी पड़े। कई बार आपने अनुभव किया होगा कि यदि उतावलापन न किया जाता तो आप कार्य को अधिक अच्छी तरह से कर सकते थे। इस उतावलेपन के कारण आप को कई बार गलतफहमियों का शिकार भी होना पड़ा है इसलिए जहां तक हो सके, उतावलेपन में न तो कोई कार्य करें और न भली प्रकार सोचे विचारे बिना किसी से गहरे संबंध ही स्थापित करें, तभी आपके जीवन की सार्थकता बनी रह सकती है।

१८. छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करना, जोश दिखाना या उग्र होना आपके व्यक्तित्व के लिए ठीक नहीं है। प्रत्येक कार्य या परिस्थिति को शान्ति से सुलझाइए, उग्रता और हिंसा पशुओं का आचरण

है, आपका नहीं।

१९. मुकदमेबाजी में मत पड़िये। जहाँ तक हो सके बातचीत से ही मामला सुलझा लीजिए, कोर्ट-कचहरी या मुकदमेबाजी से आप परेशान ही होंगे तथा अपनी समस्यायें बढ़ा लेंगे। आपका जीवन और कई बातों के लिए है जिन्हें पूरा करना आपके लिए जरूरी है, फिर भी छोटी-छोटी बातों पर समय व्यतीत करना या धनहानि करना क्या आपके लिए शोभनीय है ?

२०. नौ के अंकों के लिए दुर्भाग्य ही है कि न चाहते हुए भी उसके शत्रु हो जाते हैं। कल तक जो मित्र थे या जिनसे घनिष्ठता थी, वे ही आज जड़ काटने पर तुले बैठे हैं, परन्तु आपकी बुद्धिमानी इसी में है कि आप कम से कम शत्रु बनने दें। अपने मित्रों की संख्या बढ़ाइये। आपकी चतुराई इसी में है कि आप शत्रुओं के हृदय में उत्पन्न मतभेदों को दूर करें तथा उन्हें अनुकूल बनाने का प्रयत्न करें।

२१. किसी भी कागज पर चाहे वह आपको अपनी शर्तों के अनुकूल ही दिखाई दे रहा हो—तुरन्त हस्ताक्षर न कर दें, बल्कि कुछ ऐसे उपाय करें कि एक-दो दिन उस पर सोचने का मौका मिल जाय। जब आप सभी प्रकार से आश्वस्त हो जायें, तभी उस पर हस्ताक्षर करें।

२२. अपने घर में विस्फोटीय पदार्थ तो भूल कर भी न रखिये, आग पकड़ने वाले पदार्थ—पेट्रोल, गोला-बारूद, विष आदि पदार्थ कभी भी घर में न रखें क्योंकि आपने स्वयं यह अनुभव किया होगा कि जब आपको गुस्सा आता है तो सब कुछ करने के लिए उतारू हो जाते हैं और ऐसी मानसिक शिथिलता में आप कभी आत्महत्या भी कर बैठें तो इसमें आश्चर्य नहीं।

२३. जीवन में शत्रु होंगे ही, पर मित्रों की संख्या भी नगण्य न होगी, जो आपकी प्रत्येक प्रकार से सहायता करने को प्रस्तुत रहेंगे। जीवन की तीस वर्षों के पश्चात् एक ऐसा मित्र भी मिलेगा, जो खरी-खरी कहने वाला तथा एक प्रकार से मार्गदर्शक-सा होगा। वह न आपको जीवन-भर खतरों से ही बचायेगा, अपितु आपके जीवन को

समृद्ध करने में भी भरपूर सहायता देगा।

२४. यथासंभव ऑपरेशन की स्थिति से बचें, फिर भले ही वह आपका ऑपरेशन हो या आपकी पत्नी का अथवा बच्चे का, क्योंकि ऑपरेशन की स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है और यदि एक बार यह दृढ़ धारणा बना लेंगे कि मुझे ऑपरेशन नहीं कराना है तो आप स्वयं देखेंगे कि बिना ऑपरेशन के भी समस्या हल हो गई है तथा वह बाधा या बीमारी, जिसके लिए ऑपरेशन जरूरी था, दूर हो गई है।

२५. यह मैं ऊपर ही कह चुका हूँ कि आप स्वाभिमानी व्यक्ति हैं और अपनी आन पर अपनी बात पर मर-मिटने वाले जीव हैं, फलतः जरा भी विपरीत परिस्थिति या विपरीत बात सुनते ही आप को क्रोध आ जाता है और जब क्रोध चढ़ आता है तो कुछ भी नहीं सूझता, उस समय केवल एक ही धुन रहती है कि किस प्रकार सामने वाले को समूल नष्ट कर दूं। मैं आपको सलाह दूंगा कि आप इस अतिरेकता से बचें, इतना अधिक क्रोध, इतनी अधिक प्रतिशोध की भावना, इतना अधिक तेज मिजाज ठीक नहीं। समय और वातावरण को देखकर अपने आपको ढालने का प्रयत्न कीजिए।

२६. आप जहां तक हो सके अपनी समस्याओं को ही निपटाइये, दूसरों की परेशानियों में पड़ने की जरूरत नहीं और न दूसरों की समस्याओं को निपटाने की पंचायत ही कीजिए, क्योंकि यह न आपके हित में है और न उचित में ही।

२७. अपने परिवार की अस्तव्यस्तता को संतुलित कीजिए। आप स्वयं देखिये कि आपकी वजह से घर में आतंक का वातावरण बना रहता है। घर में जो शांति होती है, वह दिखाई नहीं देती। अपने आपको संतुलित कीजिये तथा परिवार में पुलक, चहल तथा प्रसन्नता का वातावरण बनाने की ओर ध्यान दीजिये।

२८. जब कभी भी जमीन से संबंधित मामला हो, आप यह निश्चित समझिए कि आपका लाभ है। चाहे जमीन खरीदनी हो,

बेचनी हो या इसकी दलाली करनी हो। आपको इस कार्य में लाभ है, इसलिए उतावली करके या हड़बड़ी में घाटा उठाने की कोशिश मत कीजिए। आप स्वयं देखेंगे कि ज्यों ही ग्रह स्थिति आपके अनकूल हुई कि आपको इस प्रकार के कार्य से काफी लाभ हो जाता है।

२९. अपने चेहरे पर जरा मुस्कराहट थिरकने दीजिये, हर समय तनावपूर्ण चेहरा बनाये रखना अनुशासन के लिए तो ठीक हो सकता है, परन्तु इससे आप सामाजिकता से कोसों दूर जा सकते हैं तथा आपकी लोकप्रियता में कमी आती है। अतएव अपने आपको प्रसन्न-चित्त तथा आकर्षक बनाये रखने का प्रयत्न कीजिये।

३०. निराश मत होइए, क्योंकि आपके मन के विपरीत कार्य होने या स्वभाव के विपरीत सुनने को मिलते ही आप निराश हो जाते हैं और घन्टों उदासी से जकड़े रहते हैं, परन्तु इस प्रकार से समस्या का हल तो प्राप्त नहीं होता। आपको चाहिए कि आप गीता के इस श्लोक पर विश्वास रक्खें, तू अपना कार्य करता जा, फल की इच्छा मत करे।

३१. इधर की बात उधर और उधर की बात इधर कहने की कोशिश मत कीजिए, क्योंकि देर-सवेर इससे आपकी प्रतिष्ठा को खतरा होने की आशंका है। अतः न तो आप इस प्रकार का आचरण कीजिये और न ही ऐसे व्यक्तियों को पास फटकने दीजिए, जिनकी ऐसी प्रवृत्ति हो।

३२. आप 'फील्डवर्कर' हैं, अर्थात् आप में संगठन का अद्भुत गुण है। आपकी वाणी में कुछ ऐसी दृढ़ता है कि लोग सहज ही आकृष्ट हो जाते हैं। अतः जहां तक हो सके ऐसे ही काम हाथ में लीजिए। राजनीति के क्षेत्र में आप विशेष रूप से चमक सकते हैं।

३३. चुगली, निंदा, परस्त्री के प्रति आकृष्ट होना, पत्नी की निंदा आदि दुर्गुणों से अपने आपको बचाने का प्रयत्न कीजिए।

यदि आपने इन सावधानियों की ओर पूरा ध्यान दिया तो निःसंदेह आप संसार के श्रेष्ठतम और कुशल पुरुष हैं, इसमें सन्देह नहीं।

निर्बल समय—मार्च, मई, जून, अक्टूबर तथा १५ नवम्बर से २७ दिसम्बर तक का समय आपके लिए निर्बल समय है, अतः उपयुक्त समय को विशेष ध्यान में रक्खें, और इस समय में ऐसा कोई भी कार्य न करें जो ऊपर सावधानी शीर्षक में स्पष्ट किया है। जहाँ तक हो सके १, १०, १९, २८ तारीखों से भी बचिये, क्योंकि एक का अंक आपके लिए शुभ नहीं है। अतः उपर्युक्त तारीखों में अपने आपको अधिक से अधिक नियंत्रित रखिये।

उन्नत समय—जहाँ निर्बल समय आपको हानिप्रद है, वहाँ उन्नत समय आपके लिए सौभाग्यसूचक भी है, क्योंकि उन्नत समय में आप लाभदायक स्थिति में रहते हैं। मार्च के उत्तरार्द्ध से अप्रैल के पूर्वार्द्ध तक का समय एवं २१ अक्टूबर से १४ नवम्बर तक का समय आपके लिए उन्नत है।

शुभ तारीखें—प्रत्येक महीने की ९, १८ तथा २७वीं तारीख भाग्यवर्धक, श्रेष्ठ एवं सबल हैं, इन तारीखों से ही आप कोई भी नया कार्य प्रारंभ करें या किसी अधिकारी से मिलने जावें। इसके साथ ही ३ का अंक भी आपका मित्र अंक है, अतः प्रत्येक महीने की ३, ६, १५ २१, २४, ३० तारीख भी आपके लिए अनुकूल एवं श्रेष्ठ कही जा सकती है।

शुभ दिवस—प्रत्येक सप्ताह का मंगलवार तथा शुक्रवार आपके लिए अनुकूल है। उन्नत समय में, शुभ तारीखों में यदि मंगल या शुक्रवार हो तो आपके लिए अधिक उन्नत, श्रेष्ठ एवं भाग्यवर्धक होता है, अतः उस दिन का पूरा-पूरा सदुपयोग करें।

शुभ रंग—आपका प्रधान ग्रह मंगल है तथा उसका रंग लाल है, अतः लाल रंग ही आपके लिए सौभाग्यसूचक है, इसलिए जहाँ तक हो सके, अपने ड्राइंगरूम के पर्दे, सोफा कवर, बैड कवर, कुशन कवर आदि लाल रंग के ही रक्खें। यदि आप हर समय अपनी जेब में लाल रंग का रूमाल रक्खें तो वह आपके लिए शुभसूचक तथा श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ रत्न—आपका प्रधान रत्न मूँगा है, जिसे संस्कृत में विद्रुम,

फारसी में मिरजान तथा अंग्रेजी में कोरल Coral कहते हैं। हिमालय तथा मानसरोवर के आसपास यह अधिक पाया जाता है।

इसके प्रधान चार गुण हैं :—१. यह चमकदार होता है। २. यह चिकना तथा उंगलियों पर लेने में फिसलता-सा महसूस होता है। ३. यह कोणदार होता है। ४. यह औसत से अधिक वजनदार प्रतीत होता है।

इसकी दो प्रकार से परीक्षा की जा सकती है।

१. दूध में मूंगा डालने से दूध में लाल रंग की झांई-सी दिखाई पड़ती है। २. सूर्य की धूप में यदि कागज या रूई पर मूंगा रख दिया जाय तो कुछ ही समय बाद रूई में अग्नि प्रवेश हो जाती है।

शुभ मुहूर्त में सोने की अँगूठी में पाँच रत्ती से बड़ा मूंगा इस प्रकार से जड़वावें कि यह अँगुली को स्पर्श करता रहे तो ऐसी अँगूठी आपको सभी बाधाओं को मिटाकर उन्नति की ओर ले जाने वाली सिद्ध होगी।

देवता—आपके प्रधान देवता श्री हनुमान हैं, जो अत्यन्त बलशाली, भक्तों के कष्टों को दूर करने में समर्थ एवं सहायक हैं, अतः प्रत्येक मंगलवार को गेहूँ के आटे का रोट बनाकर, गुड़-घी डालकर, उसका लड्डू बनाकर हनुमान को भोग लगावें तो यह उपाय अष्टसिद्धि, नवनिधि देने वाला है।

ध्यान— शुद्ध घी का दीपक जलाकर आप निम्न ध्यान भक्तिपूर्वक पढ़ें।

रामेष्ट मित्रं जगदेक वीरं
प्लवंग राजेन्द्र कृत प्रणायम्।
सुमेरु शृंगागम चिन्त्य माद्यं
हृदि स्मेरेऽहं हनुमन्त मीडयम्॥

मंत्र—यथासंभव रोज एक बार तो हनुमान कवच का पाठ अवश्य करें एवं निम्न मंत्र की एक माला अवश्य फेरें।

॥ ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः ॥

व्रतोपवास—आप मंगलवार का व्रत आजीवन करते रहें तो यह

आपके लिए शुभ ही होगा। मंगलवार को प्रातः श्री हनुमान जी के दर्शन कर लें तथा उस दिन केवल एक बार ही भोजन करें और उस दिन भोजन मे नमक का प्रयोग न करें। यदि संभव हो सके तो रात्रि में जब आकाश में मंगल ग्रह का उदय हो तब उसका दर्शन भी अवश्य कर लिया करें।

मित्रता—आपको अपने मित्रों का चुनाव अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए, क्योंकि अधिकतर ऐसा ही हुआ है कि समय पड़ने पर मित्र ही विपरीत बने हैं, तथा उन्होंने धोखा दिया है। ऐसे स्त्री या पुरुष जिनका जन्म किसी भी महीने की ९, १८, २७ तारीखों को हुआ है वे आपके विश्वासपात्र एवं सहायक सिद्ध हो सकते हैं। पत्नी का चुनाव करते समय भी इन तारीखों का ध्यान रक्खें इसके साथ ही यदि आपके लिए जो उन्नत समय निर्धारित है, उस समय में जिनका जन्म हुआ हो और उसका मूलांक नौ हो तो वह आपके लिए अवश्य ही पूर्ण सहायक होगा, ऐसा समझना चाहिए। मित्र के अतिरिक्त नौकर रखते समय, पार्टनर बनाते समय, भागीदार करते समय भी उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखना शुभ रहेगा।

शुभ वर्ष—आपके जीवन में ९ के अंक का विशेष महत्व है, अतः ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९० और ९९वां वर्ष श्रेष्ठ, उन्नत एवं जीवन में परिवर्तन लाने वाले वर्ष होंगे, जो उन्नति की ओर अग्रसर करने में सहायक होंगे। इसके साथ ही वे सन् भी आपके लिए श्रेष्ठ रहेंगे जिसमें ९ का पूरा-पूरा भाग जाता है। उदाहरणार्थ, भविष्य के लिए सन् १९७१, १९८०, १९८९, १९९८ आदि वर्ष भी उन्नत कहे जायेंगे।

वस्तुतः आप कई अर्थों में सौभाग्यशाली हैं कि आप नौ मूलांक से धनी हैं। आप साहसी हैं, समर्थ हैं, कर्मक्षेत्र से टक्कर ले सकते हैं, अतः उठिए और कुछ ऐसा कर दिखाइये, जिससे संसार आपके कार्यों से चौंक जाय और अश-अश कर उठे।

उल्लेखनीय व्यक्तित्व—वे प्रमुख एवं उल्लेखनीय व्यक्ति जिनका

मूलांक नौ रहा है।

१.	राजा एडवर्ड	जन्म	९	नवम्बर	मूलांक	९
२.	थियोडोर रूजवेल्ट	"	२७	अक्तूबर	"	९
३.	लार्ड कर्जन	"	९	फरवरी	"	९
४.	अर्नेस्ट रेनान (लेखक)	"	२७	फरवरी	"	९
५.	एलिजाबेथ (आस्ट्रेलिया)	"	१८	अगस्त	"	९
६.	निकोलस	"	१८	मई	"	९
६.	जार्ज स्टीफेन्सन	"	९	मई	"	९
८.	उमर खय्याम	"	१८	मई	"	९
९.	ओनासिस (ग्रीस का धनी)	"	९	सितम्बर	"	९
१०.	काका हाथरसी	"	१८	सितम्बर	"	९
११.	डोरिस ड्यूक	"	१८	दिसम्बर	"	९
१२.	प्रेसिडेंट जानसन	"	२७	अगस्त	"	९
१३.	हरिभाऊ उपाध्याय	"	९	मार्च	"	९
१४.	श्री चैतन्य	"	१८	फरवरी	"	९
१५.	के० के० शाह	"	२७	अक्तूबर	"	९
१६.	जॉन मिल्टन	"	९	दिसम्बर	"	९
१७.	श्री गोलवलकर	"	१८	फरवरी	"	९
१८.	राधाकृष्ण परमहंस	"	१८	फरवरी	"	९
१९.	शशिकपूर	"	१८	मार्च	"	९
२०.	बेला बोस	"	१८	अप्रैल	"	९
२१.	निम्मी	"	१८	फरवरी	"	९
२२.	तबस्सुम	"	९	जुलाई	"	९
२३.	महेन्द्र कपूर	"	९	जनवरी	"	९
२४.	नौशाद (संगीतकार)	"	२७	दिसम्बर	"	९

अंक और जन्म तारीख

आप अपनी जन्म तारीख से अंग्रेजी पद्धति के अनुसार राशि ज्ञात कीजिये, जिसका कि आपके जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव है। नीचे की पंक्तियों में जन्म तारीख तथा उसके सामने उसकी राशि दी जा रही है। उदाहरणार्थ, यदि किसी पुरुष या स्त्री का जन्म २१ मार्च से २० अप्रैल के बीच किसी भी तारीख को हुआ हो तो उसकी राशि मेष कहलायेगी, जिसे अंग्रेजी में एरेज (Aries) कहते हैं।

क्र० सं	जन्म से	जन्म तक	राशि
१.	२१ मार्च से	२० अप्रैल तक	मेष (Aries)
२.	२१ अप्रैल से	२० मई तक	वृष (Taurus)
३.	२१ मई से	२० जून तक	मिथुन (Gemini)
४.	२१ जून से	२० जुलाई तक	कर्क (Cancer)
५.	२१ जुलाई से	२१ अगस्त तक	सिंह (Leo)
६.	२२ अगस्त से	२२ सितम्बर तक	कन्या (Virgo)
७.	२३ सितम्बर से	२२ अक्तूबर तक	तुला (Libra)
८.	२३ अक्तूबर से	२२ नवम्बर तक	वृश्चिक (Scorpio)
९.	२३ नवम्बर से	२० दिसम्बर तक	धनु (Sagittarius)
१०.	२१ दिसम्बर से	१९ जनवरी तक	मकर (Capricorn)
११.	२० जनवरी से	१८ फरवरी तक	कुंभ (Aquorius)
१२.	१९ फरवरी से	२० मार्च तक	मीन (Pisces)

आज के इस युग में इतनी अधिक व्यस्तता बढ़ गई है कि विवाह जैसे मामलों में भी समय निकालना कठिन हो गया है। हमारे पूर्वज तब तक विवाह करने की स्वीकृति नहीं देते थे, जब तक कि लड़का-लड़की दोनों की जन्म कुण्डलियों का मिलान नहीं हो जाता था।

आज की अंक-विद्या ने इस समस्या का भी हल ढूंढ़ निकाला है और योग्य पति या पत्नी के चुनाव में यह विज्ञान सहायक सिद्ध हुआ है। मैं एक सर्वथा नवीन पद्धति स्पष्ट कर रहा हूँ, जिसके माध्यम से सरलतापूर्वक पति-पत्नी के चुनाव में सहायता मिलती है।

पहले मैं उन कुमारियों के लिए पद्धति स्पष्ट कर रहा हूँ जो योग्य पतियों का चुनाव करना चाहती हैं, तत्पश्चात् कुमारों के लिए भी पद्धति स्पष्ट की है।

उदाहरणार्थ, आपका जन्म (स्त्रियों, कुमारियों, अविवाहिताओं के लिए) सन् १९३० में २१ मई से २० जून के बीच किसी भी तारीख को हुआ है तो आपको चाहिए कि आप ऐसे पुरुष का चुनाव करें, जिसकी राशि मेष या Aries है, यानि जिसका जन्म २१ मार्च से २० अप्रैल के बीच किसी भी तारीख को हुआ हो। ऐसा पुरुष आपके लिए सभी प्रकार से सहायक एवं सुख देने वाला साबित होगा।

सन्	यदि आपका (कुमारी) जन्म हुआ हो	पति की राशि होनी चाहिए
१९३०		
	२१ मार्च से २० अप्रैल	धनु
	२१ अप्रैल से २० मई	कन्या
	२१ मई से २० जून	मेष
	२१ जून से २० जुलाई	मकर
	२१ जुलाई से २१ अगस्त	मीन
	२२ अगस्त से २२ सितम्बर	कुंभ

२३ सितम्बर से २२ अक्तूबर	वृष
२३ अक्तूबर से २२ नवम्बर	कर्क
२३ नवम्बर से २० दिसम्बर	सिंह
२१ दिसम्बर से १६ जनवरी	तुला
२० जनवरी से १८ फरवरी	कुंभ
१६ फरवरी से २० मार्च	वृश्चिक

१६३१

२१ मार्च से २० अप्रैल	सिंह
२१ अप्रैल से २० मई	वृप
२१ मई से २० जून	धनु
२१ जून से २० जुलाई	कर्क
२१ जुलाई से १८ अगस्त	मेप
१६ अगस्त से २० सितम्बर	वृश्चिक
२३ सितम्बर से २० अक्तूबर	मिथुन
२१ अक्तूबर से १६ नवम्बर	मीन
२० नवम्बर से २१ दिसम्बर	तुला
२२ दिसम्बर से २० जनवरी	कन्या
२१ जनवरी से १६ फरवरी	कुंभ
२० फरवरी से २० मार्च	मकर

१६३२

२० मार्च से २२ अप्रैल	मिथुन
२३ अप्रैल से २१ मई	तुला
२२ मई से २० जून	वृप
२१ जून से २७ जुलाई	धनु
२८ जुलाई से १ सितम्बर	कन्या
२ सितम्बर से २६ सितम्बर	कुंभ

३० सितम्बर से २१ अक्तूबर	मेष
२२ अक्तूबर से २० नवम्बर	वृश्चिक
२१ नवम्बर से २१ दिसम्बर	सिंह
२२ दिसम्बर से २० जनवरी	मीन
२१ जनवरी से २० फरवरी	मकर
२१ फरवरी से १९ मार्च	कर्क

१९३३

१९ मार्च से २० अप्रैल	मेष
२१ अप्रैल से २० मई	वृष
२१ मई से २१ जून	मिथुन
२२ जून से २१ जुलाई	धनु
२२ जुलाई से २० अगस्त	तुला
२१ अगस्त से २१ सितम्बर	वृश्चिक
२२ सितम्बर से २० अक्तूबर	सिंह
२१ अक्तूबर से १९ नवम्बर	कुंभ
२० नवम्बर से २० दिसम्बर	कन्या
२१ दिसम्बर से २१ जनवरी	मकर
२२ जनवरी से २० फरवरी	मीन
२१ फरवरी से १८ मार्च	कर्क

१९३४

२० मार्च से २० अप्रैल	वृष
२१ अप्रैल से २१ मई	धनु
२२ मई से २० जून	मिथुन
२१ जून से २१ जुलाई	तुला
२२ जुलाई से २० अगस्त	मीन
२१ अगस्त से २३ सितम्बर	मेष
२४ सितम्बर से २४ अक्तूबर	वृश्चिक

२५ अक्तूबर से १६ नवम्बर	कर्क
२० नवम्बर से २० दिसम्बर	मकर
२१ दिसम्बर से २१ जनवरी	कन्या
२२ जनवरी से १८ फरवरी	कुंभ
१६ फरवरी से १८ मार्च	सिंह

१६३५

२१ मार्च से २४ अप्रैल	कन्या
२५ अप्रैल से २३ मई	मिथुन
२४ मई से २२ जून	तुला
२३ जून से २० जुलाई	सिंह
२१ जुलाई से २१ अगस्त	मेष
२२ अगस्त से २२ सितम्बर	कर्क
२३ सितम्बर से २० अक्तूबर	वृष
२१ अक्तूबर से २१ नवम्बर	धनु
२२ नवम्बर से २० दिसम्बर	मीन
२१ दिसम्बर से १८ जनवरी	मकर
१६ जनवरी से २२ फरवरी	कुंभ
२३ फरवरी से २० मार्च	वृश्चिक

१६३६

२२ मार्च से २२ अप्रैल	वृश्चिक
२३ अप्रैल से २० मई	वृष
२१ मई से २१ जून	तुला
२२ जून से २० जुलाई	धनु
२१ जुलाई से २१ अगस्त	मिथुन
२२ अगस्त से २० सितम्बर	कुंभ
२१ सितम्बर से १६ अक्तूबर	मेष
२० अक्तूबर से २१ नवम्बर	कन्या

	२२ नवम्बर से २० दिसम्बर	मकर
	२१ दिसम्बर से २१ जनवरी	सिंह
	२२ जनवरी से २० फरवरी	मीन
	२१ फरवरी से २१ मार्च	कर्क
१९३७		
	१८ मार्च से १ मई	वृष
	२ मई से २८ मई	वृश्चिक
	२९ मई से २ जुलाई	कुंभ
	३ जुलाई से ४ अगस्त	धनु
	५ अगस्त से २ सितम्बर	मेष
	३ सितम्बर से २० अक्तूबर	तुला
	२१ अक्तूबर से २० नवम्बर	मकर
	२१ नवम्बर से २१ दिसम्बर	कर्क
	२२ दिसम्बर से २० जनवरी	कन्या
	२१ जनवरी से १९ फरवरी	मीन
	२० फरवरी से ३ मार्च	मिथुन
	४ मार्च से १८ मार्च	सिंह
१९३८		
	२२ मार्च से २० अप्रैल	तुला
	२१ अप्रैल से २० मई	सिंह
	२१ मई से २२ जून	कर्क
	२३ जून से १९ जुलाई	कन्या
	२० जुलाई से २१ अगस्त	मेष
	२२ अगस्त से २० सितम्बर	मकर
	२१ सितम्बर से २२ अक्तूबर	वृश्चिक
	२३ अक्तूबर से २१ नवम्बर	वृष
	२२ नवम्बर से २१ दिसम्बर	कुंभ

२३ दिसम्बर से १८ जनवरी	मिथुन
२२ जनवरी से २० फरवरी	मीन
२१ फरवरी २१ मार्च	धनु

१९३९

२० मार्च से २० अप्रैल	मेष
२१ अप्रैल से १७ मई	कन्या
१८ मई से २१ जून	मिथुन
२२ जून से २२ जलाई	तुला
२३ जुलाई से २१ अगस्त	सिंह
२२ अगस्त से २० सितम्बर	धनु
२१ सितम्बर से २० अक्तूबर	कर्क
२१ अक्तूबर से २० नवम्बर	कुंभ
२१ नवम्बर से २४ दिसम्बर	वृश्चिक
२५ दिसम्बर से २२ जनवरी	मीन
२३ जनवरी से २० फरवरी	मकर
२१ फरवरी से १६ मार्च	वृष

१९४०

१८ मार्च से १८ अप्रैल	वृष
१६ अप्रैल से २० मई	कर्क
२१ मई से २१ जून	मेष
२२ जून से १७ जुलाई	मिथुन
१८ जुलाई से २० अगस्त	कन्या
२१ अगस्त से २१ सितम्बर	वृश्चिक
२२ सितम्बर से २० अक्तूबर	धनु
२१ अक्तूबर से १६ नवम्बर	तुला
२० नवम्बर से २० दिसम्बर	कुंभ
२१ दिसम्बर से १८ जनवरी	मीन

१६ जनवरी से १७ फरवरी	मकर
१८ फरवरी से १७ मार्च	सिंह

१९४१

१६ मार्च से २० अप्रैल	कन्या
२१ अप्रैल से २१ मई	वृश्चिक
२२ मई से २३ जून	सिंह
२४ जून से २० जुलाई	मेप
२१ जुलाई से २१ अगस्त	कुंभ
२३ अगस्त से २० सितम्बर	कर्क
२१ सितम्बर से २० अक्तूबर	तुला
२१ अक्तूबर से १८ नवम्बर	वृप
१६ नवम्बर से १६ दिसम्बर	मकर
२० दिसम्बर से १७ जनवरी	धनु
१६ जनवरी से २० फरवरी	मीन
२१ फरवरी से १८ मार्च	मियुन

१९४२

२१ मार्च से १० अप्रैल	मेप
२१ अप्रैल से १८ मई	तुला
१६ मई से १७ जून	सिंह
१८ जून से २० जुलाई	वृश्चिक
२१ जुलाई से २१ अगस्त	मियुन
२२ अगस्त से २० सितम्बर	कर्क
११ सितम्बर से १६ अक्तूबर	कन्या
२० अक्तूबर से १६ नवम्बर	वृष
२० नवम्बर से २० दिसम्बर	कुंभ
२१ दिसम्बर से १८ जनवरी	धनु
१६ जनवरी से १६ फरवरी	मीन

	२० फरवरी से २० मार्च	मकर
१९४३		
	१७ मार्च से १९ अप्रैल	मेष
	२० अप्रैल से १८ मई	धनु
	१९ मई से १९ जून	सिंह
	२० जून से २१ जुलाई	कन्या
	२२ जुलाई से १९ अगस्त	कुंभ
	२० अगस्त से १८ सितम्बर	वृष
	१९ सितम्बर से १४ अक्तूबर	तुला
	१५ अक्तूबर से १७ नवम्बर	मीन
	१८ नवम्बर से १९ दिसम्बर	मिथुन
	२० दिसम्बर से १६ जनवरी	वृश्चिक
	१८ जनवरी से १९ फरवरी	मकर
	२० फरवरी से १९ मार्च	कर्क
१९४४		
	१९ मार्च से २३ अप्रैल	मिथुन
	२४ अप्रैल से १४ मई	तुला
	१५ मई से १७ जून	मेष
	१८ जून से १७ जुलाई	कन्या
	१८ जुलाई से १९ अगस्त	धनु
	२० अगस्त से २० सितम्बर	कर्क
	२१ सितम्बर से १८ अक्तूबर	वृष
	१९ अक्तूबर से १७ नवम्बर	वृश्चिक
	१८ नवम्बर से २० दिसम्बर	मकर
	२१ दिसम्बर से १६ जनवरी	सिंह
	१७ जनवरी से १७ फरवरी	कुंभ
	१९ फरवरी से १८ मार्च	मीन

१९४५

२० मार्च से २१ अप्रैल	मिथुन
२२ अप्रैल से २१ मई	तुला
२२ मई से १७ जून	धनु
१८ जून से १८ जुलाई	मीन
१९ जुलाई से १४ अगस्त	कर्क
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	वृश्चिक
१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	मेष
१९ अक्तूबर १७ नवम्बर	सिंह
१८ नवम्बर २० दिसम्बर	मकर
२१ दिसम्बर से २० जनवरी	वृष
२१ जनवरी से १० फरवरी	कुंभ
२१ फरवरी से १९ मार्च	कन्या

१९४६

२० मार्च से २४ अप्रैल	कर्क
२५ अप्रैल से १४ मई	कुंभ
१५ मई से १७ जून	मिथुन
१८ जून से २० जुलाई	धनु
२१ जुलाई से १७ अगस्त	सिंह
१८ अगस्त से १७ सितम्बर	वृश्चिक
१८ सितम्बर से १६ अक्तूबर	वृष
१७ अक्तूबर से १४ नवम्बर	मकर
१५ नवम्बर से १४ दिसम्बर	कन्या
१५ दिसम्बर से १७ जनवरी	तुला
१८ जनवरी से १८ फरवरी	मीन
१९ फरवरी से १९ मार्च	मेष

१९४७

२४ मार्च से २० अप्रैल	मेष
२१ अप्रैल से २० मई	वृष
२१ मई से १७ जून	मिथुन
१८ जून से २० जुलाई	धनु
२१ जुलाई से २० अगस्त	कन्या
२१ अगस्त से १७ सितम्बर	तुला
१८ सितम्बर से २० अक्तूबर	मकर
२१ अक्तूबर से १९ नवम्बर	सिंह
२० नवम्बर से १८ दिसम्बर	वृश्चिक
१९ दिसम्बर से १४ जनवरी	मीन
१५ जनवरी से १७ फरवरी	कुंभ
१८ फरवरी से २३ मार्च	कर्क

१९४८

१८ मार्च से १७ अप्रैल	वृष
१८ अप्रैल से २० मई	मीन
२१ मई से १९ जून	कन्या
२० जून से २७ जुलाई	कर्क
१८ जुलाई से २० अगस्त	मेष
२१ अगस्त से १८ सितम्बर	मकर
१९ सितम्बर से १८ अक्तूबर	मिथुन
१९ अक्तूबर से २० नवम्बर	वृश्चिक
२१ नवम्बर से २० दिसम्बर	सिंह
२१ दिसम्बर से १७ जनवरी	तुला
१८ जनवरी से २० फरवरी	धनु
२१ फरवरी से १७ मार्च	कुंभ

१९४९

१७ मार्च से १७ अप्रैल	मिथुन
१८ अप्रैल से १४ मई	मेष
१५ मई से १७ जून	कन्या
१८ जून से १९ जुलाई	वृष
२० जुलाई से २१ अगस्त	कर्क
२२ अगस्त से १७ सितम्बर	तुला
१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	सिंह
१९ अक्तूबर से १९ नवम्बर	धनु
२० नवम्बर से १७ दिसम्बर	मीन
१८ दिसम्बर से २० जनवरी	कुंभ
२१ जनवरी से १७ फरवरी	मकर
१८ फरवरी से १२ मार्च	वृश्चिक

१९५०

१४ मार्च से १७ अप्रैल	कन्या
१८ अप्रैल से १६ मई	मिथुन
१७ मई से २० जून	वृष
२१ जून से २० जुलाई	कुंभ
२१ जुलाई से १९ अगस्त	धनु
२० अगस्त से १७ सितम्बर	मेष
१८ सितम्बर से १९ अक्तूबर	मकर
२० अक्तूबर से २० नवम्बर	कर्क
२१ नवम्बर से १७ दिसम्बर	सिंह
१८ दिसम्बर से १४ जनवरी	वृश्चिक
१५ जनवरी से १७ फरवरी	मीन
१८ फरवरी से १३ मार्च	तुला

१९५१

२० मार्च से १७ अप्रैल	कन्या
१८ अप्रैल से १७ मई	धनु
१८ मई से २० जून	तुला
२१ जून से १९ जुलाई	वृश्चिक
२० जुलाई से २० अगस्त	सिंह
२१ अगस्त से १७ सितम्बर	कुंभ
१८ सितम्बर से १७ अक्तूबर	मकर
१८ अक्तूबर से १४ नवम्बर	मीन
१५ नवम्बर से २० दिसम्बर	मेष
२१ दिसम्बर से १४ जनवरी	मिथुन
१५ जनवरी से १४ फरवरी	कर्क
१५ फरवरी से १६ मार्च	वृष

१९५२

१७ मार्च से २० अप्रैल	वृष
२१ अप्रैल से १९ मई	धनु
२० मई से १७ जून	कर्क
१८ जून से १४ जुलाई	वृश्चिक
१५ जुलाई से २७ अगस्त	मिथुन
१८ अगस्त १९ सितम्बर	कन्या
२० सितम्बर से १८ अक्तूबर	मीन
१९ अक्तूबर से २० नवम्बर	सिंह
२१ नवम्बर से १८ दिसम्बर	मकर
१९ दिसम्बर से १७ जनवरी	तुला
१८ जनवरी से १४ फरवरी	कुंभ
१५ फरवरी से १६ मार्च	मेष

१९५३

२० मार्च से १३ अप्रैल	मिथुन
१४ अप्रैल से १७ मई	मेष
१८ मई से १४ जून	धनु
१५ जून से १६ जुलाई	वृष
१८ जुलाई से १९ अगस्त	वृश्चिक
२० अगस्त से १२ सितम्बर	मकर
२२ सितम्बर से २१ अक्तूबर	कर्क
२२ अक्तूबर से २४ नवम्बर	तुला
२५ नवम्बर से १९ दिसम्बर	कुंभ
२० दिसम्बर से १७ जनवरी	सिंह
१८ जनवरी से १४ फरवरी	मीन
१५ फरवरी से १९ मार्च	कन्या

१९५४

१४ मार्च से १७ अप्रैल	मिथुन
१८ अप्रैल से १४ मई	वृष
१५ मई से १७ जून	मेष
१८ जून से १७ जुलाई	कन्या
१८ जुलाई से १९ अगस्त	तुला
२० अगस्त से २४ सितम्बर	सिंह
२५ सितम्बर से १७ अक्तूबर	मकर
१८ अक्तूबर से १४ नवम्बर	धनु
१५ नवम्बर से १७ दिसम्बर	कर्क
१८ दिसम्बर से १७ जनवरी	मीन
१८ जनवरी से १३ फरवरी	कुंभ
१४ फरवरी से १३ मार्च	वृश्चिक

१९५५

२० मार्च से १७ अप्रैल	मेष
१८ अप्रैल से १८ मई	धनु
१९ मई से २० जून	तुला
२१ जून से १७ जुलाई	कुंभ
१८ जुलाई से १७ अगस्त	सिंह
१८ अगस्त से १४ सितम्बर	वृष
१५ सितम्बर से १७ अक्तूबर	वृश्चिक
१८ अक्तूबर से १९ नवम्बर	कन्या
२० नवम्बर से १७ दिसम्बर	कर्क
१८ दिसम्बर से १७ जनवरी	मकर
१८ जनवरी से १९ फरवरी	मीन
२० फरवरी से १९ मार्च	मिथुन

१९५६

१९ मार्च से १७ अप्रैल	मेष
१८ अप्रैल से १४ मई	कर्क
१५ मई से १७ जून	मिथुन
१८ जून से १७ जुलाई	कन्या
१८ जुलाई से २० अगस्त	तुला
२१ अगस्त से १४ सितम्बर	सिंह
१५ सितम्बर से १७ अक्तूबर	वृष
१८ अक्तूबर से १९ नवम्बर	कुंभ
२० नवम्बर से १४ दिसम्बर	मकर
१५ दिसम्बर से १७ जनवरी	वृश्चिक
१८ जनवरी से २० फरवरी	मीन
२१ फरवरी से १८ मार्च	धनु

१९५७

१४ मार्च से १७ अप्रैल	मिथुन
१८ अप्रैल से १६ मई	मीन
१५ मई से १९ जून	मकर
२० जून से १९ जुलाई	तुला
२० जुलाई से २१ अगस्त	मेष
२२ अगस्त से २२ सितम्बर	वृश्चिक
२३ सितम्बर से २१ अक्तूबर	कन्या
२२ अक्तूबर से २१ नवम्बर	वृष
२२ नवम्बर से २० दिसम्बर	कर्क
२१ दिसम्बर से १७ जनवरी	धनु
१८ जनवरी से १८ फरवरी	कुंभ
१९ फरवरी से १३ मार्च	सिंह

१९५८

१७ मार्च से १४ अप्रैल	कन्या
१५ अप्रैल से १८ मई	धनु
१९ मई से १७ जून	मीन
१८ जून से १४ जुलाई	तुला
१५ जुलाई से १७ अगस्त	वृश्चिक
१८ अगस्त से १७ सितम्बर	मेष
१८ सितम्बर से १५ अक्तूबर	कर्क
१६ अक्तूबर से १७ नवम्बर	कुंभ
१८ नवम्बर से १७ दिसम्बर	वृष
१८ दिसम्बर से १५ जनवरी	मकर
१६ जनवरी से १४ फरवरी	मिथुन
१५ फरवरी से १६ मार्च	सिंह

१९५९

१४ मार्च से १२ अप्रैल	धनु
१३ अप्रैल से १४ मई	मिथुन
१५ मई से १७ जून	वृष
१८ जून से १८ जुलाई	कर्क
१९ जुलाई से १४ अगस्त	मकर
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	मेष
१८ सितम्बर से १४ अक्तूबर	सिंह
१५ अक्तूबर से १९ नवम्बर	वृश्चिक
२० नवम्बर से १७ दिसम्बर	कुंभ
१८ दिसम्बर से १४ जनवरी	कन्या
१५ जनवरी से १४ फरवरी	मीन
१५ फरवरी से १३ मार्च	तुला

१९६०

१२ मार्च से १४ अप्रैल	कर्क
१५ अप्रैल से १७ मई	मिथुन
१८ मई से १४ जून	धनु
१५ जून से १३ जुलाई	सिंह
१४ जुलाई से १७ अगस्त	मेष
१८ अगस्त से १७ सितम्बर	वृश्चिक
१८ सितम्बर से २० अक्तूबर	कन्या
२१ अक्तूबर से २२ नवम्बर	मकर
२३ नवम्बर से २१ दिसम्बर	वृष
२२ दिसम्बर से २२ जनवरी	कुंभ
२३ जनवरी से १७ फरवरी	मीन
१८ फरवरी से ११ मार्च	तुला

उदाहरणार्थ यदि आपकी (कुमारी) जन्म तारीख १४ मई, १९४८

है तो यह स्पष्ट है कि आपकी राशि वृष है, जो कि २१ अप्रैल से २० मई तक जन्म लेने वाले प्राणियों की होती है (देखिये—जन्म तारीख राशि और चरित्र-अध्याय)।

चूंकि आपका जन्म १९४८ ईस्वी सन् में हुआ है, अतः पिछले पृष्ठों में से सन् १९४८ निकालिये और उसमें १४ मई देखिये। आप देखेंगी कि दूसरी पंक्ति में १८ अप्रैल से २० मई के बीच ही आपकी तारीख पड़ती है और सामने 'मीन' राशि अंकित है।

अतः आप अपने पति का चुनाव करते समय ऐसे युवक का चुनाव कीजिये, जिसकी राशि मीन हो अर्थात् जो किसी भी सन् में १९ फरवरी से २० मार्च के बीच किसी भी तारीख को जन्मा हो।

इस प्रकार का चुनाव पूर्ण दाम्पत्य जीवन स्पष्ट करता है। यह एक वैज्ञानिक, खोजपूर्ण तथा तथ्यों पर आधारित पद्धति है, अतः इस विधि का उपयोग करते हुए यदि आप अपने पति का चुनाव करेंगी तो निश्चय ही वह युवक आपके जीवन को प्रसन्नता, समृद्धि एवं खुशियों से भरने वाला सिद्ध होगा।

अब मैं अविवाहित कुमारों के लिए इस पद्धति को स्पष्ट कर रहा हूँ, जिससे वे भी अपनी पत्नी के चुनाव में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

सन्	यदि आपका (कुमार) जन्म हुआ हो	पत्नी की राशि होनी चाहिए
१९३०		
	२१ मार्च से २० अप्रैल	तुला
	२१ अप्रैल से २० मई	कन्या
	२१ मई से २० जून	धनु
	२१ जून से २० जुलाई	मिथुन
	२१ जुलाई से २१ अगस्त	सिंह
	२२ अगस्त से २२ सितम्बर	कुंभ
	२३ सितम्बर से २२ अक्तूबर	मेष

२३ अक्तूबर से २२ नवम्बर	वृश्चिक
२३ नवम्बर से २० दिसम्बर	मीन
२१ दिसम्बर से १६ जनवरी	मकर
२० जनवरी से १८ फरवरी	वृष
१६ फरवरी से २० मार्च	कर्क

१६३१

१७ मार्च से १४ अप्रैल	वृष
१५ अप्रैल से १७ मई	कन्या
१८ मई से १२ जून	मीन
१३ जून से १४ जुलाई	मेष
१५ जुलाई से १७ अगस्त	मकर
१८ अगस्त से १४ सितम्बर	तुला
१५ सितम्बर से ३० अक्तूबर	धनु
३१ अक्तूबर से १६ नवम्बर	मिथुन
२० नवम्बर से २१ दिसम्बर	वृश्चिक
२२ दिसम्बर से २० जनवरी	सिंह
२१ जनवरी से २१ फरवरी	कुंभ
२२ फरवरी से १६ मार्च	कर्क

१६३२

२१ मार्च से १८ अप्रैल	वृष
१६ अप्रैल से १७ मई	मिथुन
१८ मई से २१ जून	वृश्चिक
२२ जून से २० जुलाई	सिंह
२१ जुलाई से २१ अगस्त	मेष
२२ अगस्त से २२ सितम्बर	कर्क
२२ सितम्बर से २४ अक्तूबर	कन्या

१५ अक्तूबर से १६ नवम्बर	तुला
२० नवम्बर से १७ दिसम्बर	मकर
१८ दिसम्बर से १४ जनवरी	धनु
१५ जनवरी से १६ फरवरी	मीन
२० फरवरी से २० मार्च	कुंभ

१६३३

२२ मार्च से १७ अप्रैल	वृश्चिक
१८ अप्रैल से २१ मई	धनु
२२ मई से १८ जून	वृष
१६ जून से १६ जुलाई	तुला
२० जुलाई से १७ अगस्त	मेष
१८ अगस्त से २० सितम्बर	कन्या
२१ सितम्बर से १८ अक्तूबर	मिथुन
१६ अक्तूबर से १८ नवम्बर	सिंह
१६ नवम्बर से १७ दिसम्बर	कर्क
१८ दिसम्बर से २१ जनवरी	मीन
२२ दिसम्बर से १६ फरवरी	मकर
२० फरवरी से २१ मार्च	कुंभ

१६३४

२१ मार्च से २० अप्रैल	कन्या
२१ अप्रैल से २० मई	सिंह
२१ मई से १७ जून	तुला
१८ जून से २० जुलाई	कर्क
२१ जुलाई से १५ अगस्त	धनु
१६ अगस्त से २७ सितम्बर	वृश्चिक
१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	मेष
१६ अक्तूबर से १४ नवम्बर	कुंभ

	१५ नवम्बर से २० दिसम्बर	मकर
	२१ दिसम्बर से १३ जनवरी	मीन
	१४ जनवरी से १८ फरवरी	मिथुन
	१९ फरवरी से २० मार्च	वृष
१९३५		
	२० मार्च से १७ अप्रैल	मिथुन
	१८ अप्रैल से २० मई	वृष
	२१ मई से १९ जून	धनु
	२० जून से १७ जुलाई	वृश्चिक
	१८ जुलाई से १५ अगस्त	मेष
	१६ अगस्त से १४ सितम्बर	मकर
	१५ सितम्बर से १७ अक्तूबर	कर्क
	१८ अक्तूबर से २० नवम्बर	तुला
	२१ नवम्बर से १२ दिसम्बर	कुंभ
	१३ दिसम्बर से १४ जनवरी	सिंह
	१५ जनवरी से १८ फरवरी	मीन
	१९ फरवरी से १९ मार्च	कन्या
१९३६		
	१२ मार्च से १७ अप्रैल	मिथुन
	१८ अप्रैल से १३ मई	वृष
	१४ मई से ११ जून	कर्क
	१२ जून से १० जुलाई	कन्या
	११ जुलाई से १४ अगस्त	मेष
	१५ अगस्त से १५ सितम्बर	वृश्चिक
	१६ सितम्बर से १७ अक्तूबर	सिंह
	१८ अक्तूबर से १८ नवम्बर	मकर
	१९ नवम्बर से २२ दिसम्बर	तुला

२३ दिसम्बर से २० जनवरी	धनु
२१ जनवरी से १७ फरवरी	कुंभ
१८ फरवरी से ११ मार्च	मीन

१९३७

१४ मार्च से १८ अप्रैल	मिथुन
१९ अप्रैल से १२ मई	मेष
१३ मई से १८ जून	वृष
१९ जून से १७ जुलाई	सिंह
१८ जुलाई से १८ अगस्त	मीन
१९ अगस्त से २० सितम्बर	कर्क
२१ सितम्बर से १८ अक्तूबर	कुंभ
१९ अक्तूबर से १५ नवम्बर	वृश्चिक
१६ नवम्बर से १४ दिसम्बर	कन्या
१५ दिसम्बर से १७ जनवरी	मकर
१८ जनवरी से २० फरवरी	तुला
२१ फरवरी से १३ मार्च	धनु

१९३८

२० मार्च से २७ अप्रैल	कर्क
२८ अप्रैल से १४ मई	सिंह
१५ मई से १७ जून	मिथुन
१८ जून से १८ जुलाई	वृश्चिक
१९ जुलाई से १४ अगस्त	कन्या
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	तुला
१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	धनु
१९ अक्तूबर से २० नवम्बर	कुंभ
२१ नवम्बर से २० दिसम्बर	मेष
२१ दिसम्बर से २१ जनवरी	मकर

	२२ जनवरी से १७ फरवरी	मीन
	१८ फरवरी से १६ मार्च	वृष
१६३६		
	२१ मार्च से २१ अप्रैल	वृष
	२२ अप्रैल से १७ मई	सिंह
	१८ मई से १४ जून	कन्या
	१५ जून से १६ जुलाई	कर्क
	१७ जुलाई से १८ अगस्त	मेष
	१६ अगस्त से १७ सितम्बर	तुला
	१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	मिथुन
	१६ अक्तूबर से २० नवम्बर	धनु
	२१ नवम्बर से १७ दिसम्बर	मीन
	१८ दिसम्बर से १५ जनवरी	वृश्चिक
	१६ जनवरी से १६ फरवरी	कुंभ
	२० फरवरी से २० मार्च	मकर
१६४०		
	१८ मार्च से २१ अप्रैल	कर्क
	२२ अप्रैल से १७ मई	सिंह
	१८ मई से १८ जून	मेष
	१६ जून से २० जुलाई	वृश्चिक
	२१ जुलाई से १७ अगस्त	कन्या
	१८ अगस्त से २० सितम्बर	तुला
	२१ सितम्बर से २० अक्तूबर	धनु
	२१ अक्तूबर से १७ नवम्बर	वृष
	१८ नवम्बर से २० दिसम्बर	कुंभ
	२१ दिसम्बर से १७ जनवरी	मकर
	१८ जनवरी से १४ फरवरी	मीन

१५ फरवरी से १७ मार्च	मिथुन

१९४१

१२ मार्च से १४ अप्रैल	कर्क
१५ अप्रैल से १७ मई	सिंह
१८ मई से २० जून	मिथुन
२१ जून से २४ जुलाई	मकर
२५ जुलाई से १७ अगस्त	मेष
१८ अगस्त से २५ सितम्बर	धनु
२१ सितम्बर से १९ अक्तूबर	तुला
२० अक्तूबर से १८ नवम्बर	वृष
१९ नवम्बर से २१ दिसम्बर	कन्या
२२ दिसम्बर से २० जनवरी	वृश्चिक
२१ जनवरी से १७ फरवरी	कुंभ
१८ फरवरी से १७ मार्च	मीन

१९४२

१८ मार्च से १७ अप्रैल	कर्क
१८ अप्रैल से १४ मई	धनु
१५ मई से १७ जून	सिंह
१८ जून से २० जुलाई	कन्या
२१ जुलाई से १८ अगस्त	मेष
१९ अगस्त से १७ सितम्बर	तुला
१८ सितम्बर से २० अक्तूबर	मकर
२१ अक्तूबर से २० नवम्बर	वृष
२१ नवम्बर से १७ दिसम्बर	वृश्चिक
१८ दिसम्बर से २० जनवरी	मीन
२१ जनवरी से १७ फरवरी	मिथुन
१९ फरवरी से १७ मार्च	कुंभ

१९४३

१४ मार्च से १८ अप्रैल	मिथुन
१९ अप्रैल से २० मई	तुला
२१ मई से १५ जून	कर्क
१६ जून से १७ जुलाई	मेष
१८ जुलाई से १७ अगस्त	वृश्चिक
१८ अगस्त से १४ सितम्बर	कन्या
१५ सितम्बर से १८ अक्तूबर	धनु
१९ अक्तूबर से २० नवम्बर	वृष
२१ नवम्बर से १४ दिसम्बर	मकर
१५ दिसम्बर से १७ जनवरी	सिंह
१८ जनवरी से १२ फरवरी	मीन
१३ फरवरी से १२ मार्च	कुंभ

१९४४

१८ मार्च से १२ अप्रैल	मेष
१३ अप्रैल से १४ मई	मीन
१५ मई से १७ जून	वृष
१८ जून से १८ जुलाई	तुला
१९ जुलाई से १२ अगस्त	कर्क
१३ अगस्त से १४ सितम्बर	कन्या
१५ सितम्बर से १८ अक्तूबर	वृश्चिक
१९ अक्तूबर से २० नवम्बर	मिथुन
२१ नवम्बर से २० दिसम्बर	सिंह
२१ दिसम्बर से १७ जनवरी	धनु
१८ जनवरी से १५ फरवरी	कुंभ
१६ फरवरी से १७ मार्च	मकर

१९४५

१९ मार्च से १२ अप्रैल	वृश्चिक
१३ अप्रैल से १४ मई	वृष
१५ मई से १७ जून	मिथुन
१८ जून से १४ जुलाई	धनु
१५ जुलाई से १७ अगस्त	मेष
१८ अगस्त से १८ सितम्बर	मकर
१९ सितम्बर से १७ अक्तूबर	कर्क
१८ अक्तूबर से १४ नवम्बर	कुंभ
१५ नवम्बर से १२ दिसम्बर	सिंह
१३ दिसम्बर से १४ जनवरी	मीन
१५ जनवरी से १७ फरवरी	तुला
१८ फरवरी से १८ मार्च	कन्या

१९४६

१४ मार्च से १४ अप्रैल	वृष
१५ अप्रैल से १७ मई	कन्या
१८ मई से २० जून	मिथुन
२१ जून से १८ जुलाई	तुला
१९ जुलाई से १४ अगस्त	मेष
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	सिंह
१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	कर्क
१९ अक्तूबर से २० नवम्बर	मकर
२१ नवम्बर से २० दिसम्बर	कुंभ
२१ दिसम्बर से १४ जनवरी	वृश्चिक
१५ जनवरी से १७ फरवरी	मीन
१८ फरवरी से १३ मार्च	धनु

१९४७

१८ मार्च से १७ अप्रैल	मिथुन
१८ अप्रैल से १२ मई	मकर
१३ मई से १६ जून	वृष
१७ जून से १८ जुलाई	कर्क
१९ जुलाई से १७ अगस्त	मेष
१८ अगस्त से १२ सितम्बर	सिंह
१३ सितम्बर से १७ अक्तूबर	धनु
१८ अक्तूबर से १७ नवम्बर	वृश्चिक
१८ नवम्बर से २० दिसम्बर	कन्या
२१ दिसम्बर से १४ जनवरी	कुंभ
१५ जनवरी से १७ फरवरी	तुला
१८ फरवरी से १७ मार्च	मीन

१९४८

१२ मार्च से १३ अप्रैल	मिथुन
१४ अप्रैल से १४ मई	सिंह
१५ मई से १७ जून	वृष
१८ जून से १९ जुलाई	कन्या
२० जुलाई से १४ अगस्त	मेष
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	कर्क
१८ सितम्बर से १८ अक्तूबर	मीन
१९ अक्तूबर से १२ नवम्बर	तुला
१३ नवम्बर से १७ दिसम्बर	कुंभ
१८ दिसम्बर से १४ जनवरी	मकर
१५ जनवरी से १४ फरवरी	धनु
१५ फरवरी से ११ मार्च	वृश्चिक

१९४९

१७ मार्च से १४ अप्रैल	वृष
१५ अप्रैल से १२ मई	मिथुन
१३ मई से १८ जून	मीन
१९ जून से २० जुलाई	कर्क
२१ जुलाई से १८ अगस्त	कुंभ
१९ अगस्त से १७ सितम्बर	सिंह
१८ सितम्बर से १२ अक्तूबर	मकर
१३ अक्तूबर से १७ नवम्बर	मेष
१४ नवम्बर से १२ दिसम्बर	वृश्चिक
१३ दिसम्बर से १३ जनवरी	कन्या
१४ जनवरी से १७ फरवरी	धनु
१८ फरवरी से १६ मार्च	तुला

१९५०

१२ मार्च से १९ अप्रैल	कर्क
२० अप्रैल से २१ मई	मिथुन
२२ मई से १७ जून	सिंह
१८ जून से २० जुलाई	वृष
२१ जुलाई से १४ अगस्त	कन्या
१५ अगस्त से १२ सितम्बर	मीन
१३ सितम्बर से २१ अक्तूबर	मेष
२२ अक्तूबर से २४ नवम्बर	तुला
२५ नवम्बर से २२ दिसम्बर	मकर
२३ दिसम्बर से २१ जनवरी	कुंभ
२२ जनवरी से १८ फरवरी	वृश्चिक
१९ फरवरी से ११ मार्च	धनु

१९५१

१५ मार्च से १७ अप्रैल	वृष
१८ अप्रैल से १८ मई	मिथुन
१९ मई से २० जून	मेष
२१ जून से १७ जुलाई	सिंह
१८ जुलाई से १० अगस्त	कर्क
११ अगस्त से १३ सितम्बर	वृश्चिक
१४ दिसम्बर से १२ अक्तूबर	तुला
१३ अक्तूबर से १५ नवम्बर	मकर
१६ नवम्बर से १२ दिसम्बर	धनु
१३ दिसम्बर से १७ जनवरी	कन्या
१८ जनवरी से १२ फरवरी	कुंभ
१३ फरवरी से १४ मार्च	मीन

१९५२

१८ मार्च से १७ अप्रैल	तुला
१८ अप्रैल से १४ मई	वृश्चिक
१५ मई से १७ जून	कन्या
१८ जून से १३ जुलाई	धनु
१४ जुलाई से १२ अगस्त	मेष
१३ अगस्त से १० सितम्बर	मकर
११ सितम्बर से १२ अक्तूबर	सिंह
१३ अक्तूबर से १९ नवम्बर	कुंभ
२० नवम्बर से २२ दिसम्बर	वृष
२३ दिसम्बर से १३ जनवरी	मीन
१४ जनवरी से १६ फरवरी	कर्क
१७ फरवरी से १७ मार्च	मिथुन

१९५३

१५ मार्च से १७ अप्रैल	वृष
१८ अप्रैल से १२ मई	कन्या
१३ मई से १८ जून	मेष
१९ जून से १२ जुलाई	सिंह
१३ जुलाई से १४ अगस्त	मिथुन
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	तुला
१८ सितम्बर से १३ अक्तूबर	कर्क
१४ अक्तूबर से १७ नवम्बर	धनु
१८ नवम्बर से १२ दिसम्बर	वृश्चिक
१३ दिसम्बर से १४ जनवरी	मीन
१५ जनवरी से १४ फरवरी	मकर
१५ फरवरी से १८ मार्च	कुंभ

१९५४

१८ मार्च से २० अप्रैल	सिंह
२१ अप्रैल से १४ मई	कर्क
१५ मई से १७ जून	मेष
१८ जून से १६ जुलाई	वृश्चिक
१७ जुलाई से १२ अगस्त	कन्या
१३ अगस्त से १७ सितम्बर	मिथुन
१८ सितम्बर से २० अक्तूबर	तुला
२१ अक्तूबर से १९ नवम्बर	वृष
२० नवम्बर से १८ दिसम्बर	धनु
१९ दिसम्बर से १४ जनवरी	मीन
१५ जनवरी से १२ फरवरी	कुंभ
१३ फरवरी से १८ मार्च	मकर

१९५५

१३ मार्च से १३ अप्रैल	सिंह
१४ अप्रैल से १५ मई	कन्या
१६ मई से १७ जून	कर्क
१८ जून से १४ जुलाई	तुला
१५ जुलाई से १७ अगस्त	कुंभ
१८ अगस्त से १२ सितम्बर	मेष
१३ सितम्बर से १८ अक्तूबर	वृश्चिक
१९ अक्तूबर से १७ नवम्बर	मीन
१८ नवम्बर से १२ दिसम्बर	धनु
१३ दिसम्बर से १२ जनवरी	मकर
१३ जनवरी से ७ फरवरी	मिथुन
८ फरवरी से १२ मार्च	वृष

१९५६

१० मार्च से १७ अप्रैल	मेष
१८ अप्रैल से १३ मई	मकर
१४ मई से १२ जून	वृष
१३ जून से ७ जुलाई	कर्क
८ जुलाई से १४ अगस्त	धनु
१५ अगस्त से १७ सितम्बर	कुंभ
१८ सितम्बर से ९ दिसम्बर	वृश्चिक
१० दिसम्बर से १३ जनवरी	सिंह
१४ जनवरी से १७ फरवरी	तुला
१८ फरवरी से ९ मार्च	कन्या

१९५७

१८ मार्च से १३ अप्रैल	वृश्चिक
१४ अप्रैल से ७ मई	मेष

८ मई से १३ जून	तुला
१४ जून से १७ जुलाई	वृष
१८ जुलाई से १४ अगस्त	कन्या
१५ अगस्त से १३ सितम्बर	मिथुन
१४ सितम्बर से १७ अक्तूबर	धनु
१८ अक्तूबर से १२ नवम्बर	कुंभ
१३ नवम्बर से १४ दिसम्बर	कर्क
२५ दिसम्बर से १३ जनवरी	मकर
१४ जनवरी से १० फरवरी	सिंह
११ फरवरी से १७ मार्च	मीन

१९५८

१३ मार्च से १४ अप्रैल	मिथुन
१५ अप्रैल से १७ मई	सिंह
१८ मई से १२ जून	कर्क
१३ जून से १४ जुलाई	मेष
१५ जुलाई से १७ अगस्त	वृष
१८ अगस्त से १३ सितम्बर	तुला
१४ सितम्बर से १२ अक्तूबर	मकर
१३ नवम्बर से ११ अक्तूबर	धनु
१२ नवम्बर से १४ दिसम्बर	कन्या
१५ दिसम्बर से १२ जनवरी	वृश्चिक
१३ जनवरी से १४ फरवरी	कुंभ
१५ फरवरी से १२ मार्च	मीन

१९५९

१४ मार्च से १३ अप्रैल	वृष
१४ अप्रैल से १० मई	तुला
११ मई से ८ जून	धनु

६ जून से १७ जुलाई	कन्या
१८ जुलाई से ११ अगस्त	वृश्चिक
१२ अगस्त से १४ सितम्बर	सिंह
१५ सितम्बर से १७ अक्तूबर	मकर
१८ अक्तूबर से ६ नवम्बर	मेष
१० नवम्बर से १२ दिसम्बर	कुंभ
१३ दिसम्बर से १२ जनवरी	कर्क
१२ जनवरी से १२ फरवरी	मीन
१३ फरवरी से १३ मार्च	मिथुन

१९६०

८ मार्च से १४ अप्रैल	वृष
१५ अप्रैल से १० मई	कन्या
११ मई से १७ जून	मकर
१८ जून से १४ जुलाई	मेष
१५ जुलाई से १० अगस्त	धनु
११ अगस्त से १३ सितम्बर	मीन
१४ सितम्बर से १० अक्तूबर	वृश्चिक
११ अक्तूबर से १३ नवम्बर	कुंभ
१४ नवम्बर से ११ दिसम्बर	तुला
१२ दिसम्बर से १४ जनवरी	मिथुन
१५ जनवरी से १७ फरवरी	सिंह
१८ फरवरी से ७ मार्च	कर्क

* ऊपर हमने अविवाहित कुमारों के लिए विवाह सारणी तैयार की है, जिसके उपयोग से वे केवल सुखी ही नहीं अपितु सफल एवं आदर्श दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ किसी युवक की जन्म तारीख १७-१२-१९३४ है तो उसे सन् १९३४ की सारणी देखनी चाहिए। इसमें उपर्युक्त तारीख

१५ नवम्बर से २० दिसम्बर के बीच आती है, जिसके सामने 'मकर' राशि अंकित है।

अतः यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त युवक यदि किसी मकर राशि की कन्या (अर्थात् जिसका जन्म किसी भी सन् में २१ दिसम्बर १६ जनवरी के बीच हुआ हो) से विवाह करे तो वह आदर्श जोड़ा कहा जा सकता है। इस प्रकार से यह सारणी सभी अविवाहित स्त्री-पुरुषों के लिए उपयोगी है।

जन्म-तारीख, राशि और चरित्र

यह सम्पूर्ण गगन-मण्डल बारह कल्पित भागों में विभाजित है, जिसके एक भाग को राशि के नाम से संबोधित किया गया है। ये बारह राशियां, सूर्य-संचरण से अपना विशेष प्रभाव मनुष्य को प्रदान करती हैं। राशियों से संबधित समय को नीचे स्पष्ट किया गया है। आप देखें कि आपका जन्म किस विशेष समय विभाजन में हुआ है और मूलतः कौन से ग्रह आपको प्रभाश्रित कर रहे हैं।

मेष (२१ मार्च से २० अप्रैल तक)—यह वह समय है जब सूर्य अपने पूरे प्रभाव एवं पराक्रम से इस राशि पर संचरण करता है, अतः आपका यह सौभाग्य है कि आप सीधे सूर्य के प्रभाव क्षेत्र में हैं। सूर्य ग्रहपति है, न्यूनाधिक रूप से ठीक यही बात आप पर भी लागू होती है। आप स्वतन्त्र चेता है तथा 'सेल्फ गाइडेड' हैं। दूसरों की हुकूमत में न तो आप रह सकते हैं और न रह सकेंगे। कोई आपको जरा-सा भी

विपरीत कह दे, यह आपको सहन नहीं हो सकता। आप तुरन्त उसका प्रतिवादन करने को तैयार रहते हैं और यह भी ठीक है कि आप दूसरों के आधिपत्य में रहकर विकास भी नहीं कर सकते। आपका भाग्योदय तभी सम्भव है जब आप स्वतंत्र कार्य करें, स्वतंत्र व्यवसाय अपनायें या स्वतंत्र जीविकोपार्जन करें। सूर्य पूर्णतः अग्निरूप है। अतः आपको क्रोध शीघ्र ही आ जायगा, परन्तु यह आपकी विशेषता है कि आप उसे अन्दर ही अन्दर दबाये रखते हैं। अपने चेहरे पर झलकने नहीं देते, परन्तु जब क्रोध चढ़ जाता है तो लावे की तरह आप धधक उठते हैं। उस समय आपको कुछ भी आगा-पीछा नहीं सूझता। इस क्रोध में दूसरों को हानि पहुँचाने की वृत्ति तो होती ही है, परन्तु आप अपनी भी हानि कर बैठते हैं, इसलिए आपको चाहिए कि आप अपने मनोभावों पर नियंत्रण रक्खें। आपकी सफलता इसी में है कि आप एक बार में एक ही कार्य प्रारम्भ करें तथा उसे भली प्रकार सम्पन्न कर फिर किसी दूसरे कार्य में हाथ डालें। एक साथ कई कामों में शक्ति बँट जाने से कार्य उस रूप में सम्पन्न नहीं होता जिस रूप में होना चाहिए। झूठी शान-शौकत, व्यर्थ के पाखण्ड और प्रभुता के दिखावे को तिलांजलि दीजिए तथा यथासम्भव मूल धन की रक्षा कीजिए। परिश्रम करें और कुछ विशेष ही परिश्रम करें क्योंकि बिना परिश्रम आपको विशेष लाभ होने की सम्भावना नहीं है।

वृष (२१ अप्रैल से २० मई तक)—आपकी यह विशेषता है कि आपका मस्तिष्क हर समय कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। निष्क्रिय होना तो उसने सीखा ही नहीं है, इसीलिए आप ऐसे कार्यों में विशेष सफलता-प्राप्त कर सकते हैं जो पेचीदा हों, उलझनपूर्ण हों, मशीनरी से सम्बन्धित हों। यदि आपकी आजीविका का साधन ही इस प्रकार का कार्य हो तो निश्चय ही आप भाग्यशाली हैं तथा आपका एक न एक दिन भाग्योदय होकर रहेगा। अपने समाज में, इष्ट मित्रों में तथा बन्धु-बान्धवों में आप लोकप्रिय होंगे। दूसरों के दुःख में भागीदार होना आपका स्वभाव है। मित्रों की संख्या विशेष होगी। विशेषकर

ऐसे मित्र जो आपके सुख-दुःख में भागीदार हैं तथा आपके जीवन-निर्माण में उनका हाथ रहा है। गृहस्थ जीवन सन्तोषप्रद कहा जा सकता है। यद्यपि पत्नी पूर्णतः आपके विचारों से अनुप्राणित हो या आपके सूक्ष्म विचारों को समझ सके ऐसा तो नहीं कहा जा सकता फिर भी आपके गृहस्थ जीवन में कोई मोटी दरार दिखाई नहीं देगी। बच्चों के मामले में भी आप सौभाग्यशाली बने रहेंगे। आपकी उन्नति या प्रगति की गति धीमी रहेगी। कई बार आपने यह भी देखा होगा कि वे व्यक्ति जो आप से जूनियर थे या पद-प्रतिष्ठा में कम थे; आप से आगे बढ़ गये हैं तथा सफल जीवन विताने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इससे शनैः-शनैः आपमें निराशा की भावना बलवती होगी, परन्तु आप चिन्ता न करें। आपकी उन्नति तभी सम्भव है जब आप एक से अधिक कार्य हाथ में लें। केवल एक ही प्रकार का कार्य करने से आपकी प्रगति दिखाई नहीं देती। धन संग्रह की इच्छा रखते हुए भी धन संचय आपके लिए कठिन हो गया है। बजट संतुलित रखते-रखते भी वह घाटे की ओर चला जाता है। इस बजट पर कड़ाई से नजर रक्खें। स्वास्थ्य की ओर ध्यान दें तथा आप जो भी कार्य करने को कहें उसे पूरा करने का प्रयत्न करें।

मिथुन (२१ मई से २० जून तक)—आपका जीवन जितना ऊबड़-खाबड़, संघर्षपूर्ण एवं परिवर्तनमय रहा है उतना शायद ही किसी अन्य व्यक्ति का रहा होगा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में—चाहे वह सामाजिक हो, चाहे आर्थिक आपको संघर्ष करने पड़े हैं। आपकी प्रगति के बीच निरन्तर बाधाएँ आती रही हैं। निरन्त संघर्षपूर्ण क्षण आते रहे हैं, परन्तु आप इन सभी बाधाओं को पार कर आगे बढ़ने के लिए सदैव सचेष्ट रहे हैं, आगे बढ़ते रहे हैं। इसका मूलभूल कारण है अदम्य साहस और विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते रहने की क्षमता। यही कारण है जिसके बलबूते पर आप आगे बढ़ सके हैं, कुछ करके दिखा सके हैं। आपका जीवन परिवर्तनमय रहा है। एक प्रकार से यह ठीक ही रहा है, क्योंकि इसके कारण ही आप सब प्रकार के व्यक्तियों

के सम्पर्क में आये हैं, जीवन के ऊँच-नीच को सही-सही रूप में समझ सके और सही बात तो यह है कि इसी कारण आप इस छोटी उम्र में ही जो अनुभव प्राप्त कर सके हैं, वह अन्य बुजुर्गों से कहीं बढ़-चढ़ कर ही है। आप अपने द्वारा ही संचलित हैं। हां, आप बात सभी की सुनते हैं, सलाह सभी की लेते हैं, परन्तु करते वही हैं जो आप करना चाहते हैं, इसलिए कुछ लोग आपको रहस्यवादी भी कह देते हैं क्योंकि आप कहते कुछ हैं, करते कुछ। अपने मन की थाह नहीं लेने देते। हां, दूसरों के मन को तुरन्त पा लेते हैं और यही विशेषता है जो आपको सफलता की ओर अग्रसर कर रही है। आप दूसरों के भी काम आइये, क्योंकि इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा बनेगी। केवल स्वार्थ में ही रत रहना ठीक नहीं है। विनोदप्रियता एक शुभ लक्षण है और यह आपमें प्रचर मात्रा में है। दूसरों से किस प्रकार सहयोग लिया जाय यह आप बखूबी जानते हैं। पारिवारिक जीवन सामान्य ही कहा जा सकता है। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें।

कर्क (२१ जून से २० जुलाई तक)—आपके चरित्र की सर्वाधिक विशेषता यह है कि आप भावुक हैं। जरा-सा भी विपरीत कार्य हो जाय या कुछ संकट हो जाय तो आप तुरन्त विचलित हो उठते हैं तथा घबरा से जाते हैं। आपको चाहिए कि आप स्वयं पर नियंत्रण रखना सीखें। जरा-जरा-सी बात पर विचलित होना आपके लिए शोभनीय नहीं। आपका दाम्पत्य जीवन अधिक मधुर नहीं कहा जा सकता। पति-पत्नी दोनों के विचारों में मतभेद रहेगा तथा एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में अक्षम होंगे। हां, बच्चों की ओर से आप कुछ निश्चितता पा सकते हैं। आपके घर का बजट हमेशा असन्तुलित रहेगा। यद्यपि संचय की प्रवृत्ति आप में है तथा धन संग्रह की ओर प्रयत्नशील भी हैं फिर भी इसमें बहुत अधिक सफलता मिलना कठिन ही है। आप अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हैं, निरन्तर उन्नति की ओर ही आपके विचार केन्द्रित रहते हैं। किस प्रकार से प्रगति करूं यह विचार सदैव बना रहता है, परन्तु जब कार्य सिद्धि में कभी असफलता मिलती है तो आप झुंझला

पड़ते हैं तथा निराशा के सागर में डूब जाते हैं। आप को अपने आप पर ही विश्वास नहीं है, आपको यह भरोसा ही नहीं है कि आप अमुक कार्य कर भी पायेंगे या नहीं और यही अविश्वास आपकी प्रगति में बाधक है। मित्र होंगे, पर आपके लिए एक भी सहायक नहीं होगा। मित्रों से आपको उल्टे नुकसान है, अतः व्यर्थ के दिखावे में आकर अत्यधिक व्यय न करें। आपका स्वभाव मृदु, सरल, परोपकारी तथा साधुवत् होगा, जो शुभ है।

सिंह (२१ जुलाई से २१ अगस्त तक)—आपका व्यक्तित्व, आप का स्वभाव, आपका व्यवहार और आपका प्रत्येक कार्यकलाप मुख्यतः नेतृत्व के लिए ही है। अतः जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए भी आपको ऐसे ही काम हाथ में लेने चाहिए जिनमें नेतृत्व की गुंजाइश हो। यह आपकी सफलता है कि आप अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को भी अपना बनाने में सक्षम हैं। उसे अपना बना लेना या उससे काम निकाल लेना आपको बखूबी आता है। इसी से आपको जीवन में असफल नहीं कहा जा सकता। समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा बने रहने के भी यही कारण हैं कि आप दूसरों का विश्वास जीत सकने में समर्थ हैं। यथासंभव आपका स्वभाव परोपकारी है। दूसरों की सेवा और सहायता करने में आपको प्रसन्नता होती है। आप वस्तुतः साहसी हैं। ऐसे ही कार्य हाथ में लीजिए जिनमें साहस, शक्ति और सूझबूझ की आवश्यकता हो और ऐसे कार्यों में आप निश्चय ही सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे। यह गलत बात है कि लोग आपको रहस्यमय समझें और आपकी विशेषताओं को भली प्रकार न समझ सकें, परन्तु यह उनका ही दोष है। आप लोगों को भ्रम में बनाये रख सकते हैं और यही विशेषता आपको सर्वप्रिय बनाने में सहायक है।

कन्या (२२ अगस्त से २२ सितम्बर तक)—आपका बचपन प्रबल संघर्षपूर्ण रहेगा, जीवन की सुविधाएं उतनी सरलता से प्राप्त नहीं होंगी, जितनी आप जैसे व्यक्तियों को होना चाहिए, परन्तु यह भी सही है कि बाल्यावस्था की अपेक्षा आपकी प्रौढ़ और वृद्धावस्था अधिक

सन्तोषपूर्ण और सुखद रहेगी। विपरीत-परिस्थितियों में भी आप अडिग रूप से आगे बढ़ते ही रहेंगे, विचलित होकर अपने लक्ष्य से च्युत नहीं होंगे, यह आपकी ही विशेषता कही जायगी। इसके मूल में है आपकी तीव्र बुद्धि और कार्य के प्रति अटूट विश्वास। आप जो भी कार्य एक बार अपने हाथ में ले लेते हैं उस पर भूत की तरह लग जाते हैं और तब तक विश्राम नहीं लेते, जब तक कि उस कार्य को आप सम्पन्न न कर लें, परन्तु अपने जन्म स्थान पर आपका भाग्योदय संभव नहीं है। अनजान धरती और अनजान लोगों के बीच आप अधिक लोकप्रिय हो सकते हैं और अपने कार्य को अच्छी तरह से सम्पन्न कर सकते हैं, इसलिए आपको चाहिए कि दूसरे प्रान्तों तथा विदेशों से अपना सम्पर्क बनाइये तथा वहाँ की यात्राएँ कीजिए। परिश्रम तथा कार्य के प्रति अटूट लगन ही आपके साथी हैं, अतः नरन्तर लक्ष्य को अपने सामने रक्खें, जिससे कि आप उस तक सफलतापूर्वक पहुँच सकें।

तुला (२३ सितंबर से २२ अक्तूबर तक)—आप जैसे व्यक्ति सभी प्रकारसे योग्यताएँ रखते हुए भी अपने आपसे अपरिचित होते हैं, उन्हें यही ज्ञात नहीं होता कि उनमें क्या-क्या और कितनी मात्रा में कौन योग्यता है और उसका किस प्रकार से उपयोग किया जा सकता है ? आप वस्तुतः मौलिक सूझबूझ के धनी हैं, प्रत्येक कार्य में कुछ न कुछ मौलिकता देना या उस कार्य को इस प्रकार से संपन्न करना कि अन्य दूसरा ऐसा कर ही न सके, यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता है। व्यर्थ और रद्दी चीज का भी सदुपयोग आप कर सकते हैं तथा उसे इस भाँति सजा सकते हैं कि लोग आपकी तारीफ करें तथा आपकी मौलिक सूझ-बूझ की दाद दे सकें। आप ऐसे ही कार्यों में लगिये, जिनमें दिमागी निपुणता की आवश्यकता हो। शारीरिक श्रम न तो आपके वश की बात है और न उससे भाग्योदय हो सकता है। इसके विपरीत मानसिक श्रम से आप लाभ उठा सकते हैं एवं इसी प्रकार के कार्यों से आपका भाग्योदय भी होगा। इसे आप जितना जल्दी समझ लें, उतना ही आप के लिए अच्छा है। आपका स्वभाव तर्कप्रधान है, किसी भी बात को

चुपचाप मान लेना आपके वश की बात नहीं। प्रत्येक कार्य या बात को तर्क की कसौटी पर कस कर ही निर्णय करके आप उसे स्वीकार करते हैं, परन्तु आपको चाहिए कि भावुकता को भी जीवन में कुछ स्थान दें, भावुकता और तार्किकता का अद्भुत सम्मिश्रण आपके जीवन को उन्नति के शिखर पर पहुँचा देगा, इसमें सन्देह नहीं।

वृश्चिक (२३ अक्तूबर से २२ नवंबर तक)—आप साहसी हैं, कर्मठ हैं, परिस्थितियों की मार के सामने भी सहज झुकने वाले नहीं हैं तथा निरन्तर अबाध गति से आगे बढ़ने वालों में हैं, परन्तु कभी-कभी जो निराशा आपके मन में घर कर लेती है यह ठीक नहीं है, क्योंकि इस निराशा के फलस्वरूप आपका जोश समाप्त हो जाता है, आप जीवन-पथ से विचलित होने लगते हैं तथा मन में हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ जन्म लेने लगती हैं। आप को चाहिए कि आप शान्त रूप से अपने कार्यों पर विचार करें, आपने कहाँ पर गलती की, इसका विश्लेषण करें और भविष्य में उस गलती की पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान रखें। उतावलेपन में किसी भी प्रकार का निर्णय लेना आपके लिए हितकर नहीं है। यह माना कि प्रयत्न करने पर भी सफलता आपको प्राप्त नहीं होती या उस रूप में कार्यसिद्धि नहीं हो पाती है, जिस रूप में इतना श्रम करने पर होनी चाहिए थी, आप प्रयत्न करते रहिये, सफलता निश्चय ही आपको मिलेगी, इसमें सन्देह नहीं। गोपनीयता आपके जीवन में जरूरी है। इधर की बात उधर कह देने की मनोवृत्ति ठीक नहीं है। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का सदुपयोग कीजिए, जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य सिद्धि तो आपको प्राप्त होनी ही है, इसमें सन्देह नहीं।

धनु (२३ नवंबर से २० दिसंबर तक)—भाग्योन्नति एवं आगे बढ़ने के कई अवसर आपको प्राप्त होंगे और,आप आगे बढ़ेंगे भी,परंतु असफलता भी आपके साथ ही साथ चलती रहती है, इसका कारण है, समय पर चूक जाना। आप समय को पहचानते नहीं और न समय का सदुपयोग ही कर पाते हैं और फिर समय बीत जाने के पश्चात् आप पछताते हैं कि यदि उस समय यह कर देता तो ठीक रहता या उस मौके

पर उनके मुंह के सामने यह बात कह देता तो अच्छा रहता। आपको चाहिए कि आप अपने जीवन से इस त्रुटि को निकाल दें, समय की पहचान करना सीखें और उसका सदुपयोग करने का प्रयत्न करें। आप अपने घनीस्थ संबंधियों एवं कर्मचारियों पर भी नियन्त्रण रखियें। ढील छोड़ देने से कई बार नुकसान उठाया है और उठायेंगे। साथ ही गंभीरता रखिये, बात-बात पर हल्कापन प्रदर्शित करना आपके लिए उचित नहीं है। अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखें।

मकर (२३ दिसंबर से २० जनवरी तक)—जीवन में विनोदी स्वभाव बनाये रखना आपकी विशेपता है और इसी विशेपता के कारण अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति भी आपके मित्र बन जाते हैं तथा आप उनका लाभ उठाने में समर्थ होते हैं, परंतु आपका यही विनोद-व्यवहार कई बार जीवन-क्षेत्र में आपको हल्का भी बना देता है। हर जगह विनोद वृत्ति उचित नहीं, जीवन में कुछ गंभीरता भी लाइये। अपने कार्यों पर गंभीरता, मौलिकता तथा अपने व्यक्तित्व की छाप लगाइये, तभी आप जीवन-क्षेत्रों में ऊँचे उठ सकेंगे तथा आपके कार्यों की प्रशंसा हो सकेगी। संघर्षमय जीवन में आपको कई बार असफलताओं का सामना भी करना पड़ सकता है, पर इससे विचलित होकर लक्ष्यच्युत होना ठीक नहीं। निरन्तर अबाध गति से आगे बढ़ते रहिये, परन्तु आप एकदम से उन्नति के शिखर पर न पहुँच सकेंगे, वहाँ तक पहुँचने में शनैः-शनैः आगे बढ़ना पड़ेगा। सतर्कता से, गम्भीरता से तथा परिश्रम-पूर्वक अपना हर पग आगे बढ़ाइये, सफलता निश्चय ही सामने है।

कुंभ (२० जनवरी से १८ फरवरी तक)—आपका स्वभाव मृदु सरल एवं सद्गुणों से पूर्ण है, परन्तु आपकी संकोचशीलता इन सब विशेपताओं को नष्ट कर देती है, फलस्वरूप आपके कार्यों का सहज मूल्यांकन नहीं हो पाता। आपमें क्या मौलिक विशेपता है इसका उद्-घाटन लोगों के सामने नहीं हो पाता, यही कारण है कि आप परिश्रम करते तो हैं, पर उसकी वाहवाही तथा प्रशंसा अन्य लोगों को मिल जाती है। आप सुन्दर योजना बनाते हैं, उस पर अमल करने का विचार

भी रखते हैं, पर उस पर कार्य प्रारम्भ नहीं कर पाते, इसके मूल में भी वही संकोचशीलता है कि क्या मैं कार्य को पूरा कर भी सकूंगा या नहीं ! क्या मैं इतना बड़ा उत्तरदायित्व निभा सकूंगा ! ये कुछ ऐसे प्रश्न आपके मानस में उभरते हैं कि आपको लक्ष्यच्युत कर देते हैं। आपको चाहिए कि आप इस झिझक के लबादे को दूर फेंक दें और ताल ठोक कर मैदान में कूद पड़ें, सफलता आपसे दूर नहीं है। गुस्सा भी आपको शीघ्र आ जाता है, चाहे कोई आपकी निंदा न भी करे, पर उसके कथन से आप ऐसा महसूस करने लग जाते हैं कि कोई आपका अपमान करने की बात सोच रहा है और आप उलझ पड़ते हैं या मन ही मन घुटने लग जाते हैं जब कि ऐसी कोई बात नहीं होती। आप व्यर्थ की बातों पर ध्यान न दें, फालतू शक्ति का अपव्यय करें।

मीन (१६ फरवरी से २० मार्च तक)—आप मूलतः सहृदय, सरल एवं स्वच्छ मनोवृत्ति के व्यक्ति हैं। न तो आप कूटनीति का आश्रय लेते हैं और न यह सोचते हैं कि कोई आपको धोखा देगा। यदि कोई आपके साथ दुर्व्यवहार भी कर बैठता है, तो भी आप उसे क्षमा कर देते हैं, मन में किसी प्रकार का गांठ नहीं रखते परन्तु इच्छाएं बढ़ी-चढ़ी होती हैं तथा मन ही मन आप उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की कल्पनाएं करते रहते हैं। जब ये इच्छाएं पूरी होती नहीं दीखतीं तो आप घोर निराशा के गर्त में डूबते से प्रतीत होते हैं तथा संसार के प्रति घृणा के भाव आपके मन में जम जाते हैं। आप चिकित्सा, शिक्षा, प्रकाशन आदि कार्यों को प्रारम्भ करें। आपमें ईमानदारी है, फलस्वरूप सफलता आपसे दूर नहीं हो सकती, शीघ्र ही आपका परिश्रम रंग लायेगा तथा आप उन्नति की ओर तीव्र गति से बढ़ते हुए दृष्टि गोचर होंगे। परिश्रमपूर्वक डटे रहिये तथा आपमें जो मौलिक गुण हैं, उन्हें छोड़िए मत, अपितु जहां तक हो सके उनका विकास कीजिये। निश्चय ही आप महसूस करेंगे कि समाज आपकी कद्र करता है। विजयश्री आपके साथ है तथा आप भी उन गिने-चुने व्यक्तियों में से हैं, जिन्हें जनता आदर की दृष्टि से देखती है।

अंक ज्योतिष : भविष्यदर्शन

अंक ज्योतिष भी अपने-आपमें पूर्णतया ज्योतिष है और इसके माध्यम से भी भविष्यदर्शन स्पष्ट रूप से किया जा सकता है। यद्यपि बहुत ही कम ग्रन्थों में इस प्रकार का विवेचन है कि किस प्रकार से हम अंक ज्योतिष के माध्यम से जीवन के भविष्य को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

जैसा कि मैंने बताया है कि एक से नौ तक के अंक अपने-आपमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और सारा अंक ज्योतिष इन्हीं अंकों के इर्दगिर्द घूमता है। अंक ज्योतिष को समझने से पूर्व यह ज्ञात कर लेना चाहिए कि स्वयं का अंक कौन-सा है। स्वयं के अंक का आधार जन्म-तारीख होती है। इसमें महीना व सन् की गणना नहीं की जाती। नीचे मैं प्रत्येक अंक, संबंधित ग्रह तथा संबंधित तारीखें स्पष्ट कर रहा हूँ। अंग्रेजी पद्धति के अनुसार किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीखों में व्यक्ति का जन्म हुआ हो तो उससे संबंधित अंक ही उसका अंक कहलाएगा और उसी के द्वारा भविष्य स्पष्ट किया जाता है।

क्रम संख्या	अंक	ग्रह	सम्बन्धित तारीखें
१.	१	सूर्य	१, १०, १९, २८
२.	२	चन्द्र	२, ११, २०, २९
३.	३	गुरु	३, १२, २१, ३०
४.	४	हर्शल	४, १३, २२, ३१
५.	५	बुध	५, १४, २३
६.	६	शुक्र	६, १५, २४
७.	७	वरुण	७, १६, २५
८.	८	शनि	८, १७, २६
९.	९	मंगल	९, १८, २७

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी महीने की १८ तारीख को हुआ है तो उसका अंक ९ होगा तथा उससे सम्बन्धित ग्रह मंगल होगा। इसी प्रकार अपना अंक ज्ञात कर सम्बन्धित भविष्य-फल जाना जा सकता है।

भविष्य-फल को समझने से पूर्व ग्रहों के परस्पर मित्र आदि की जानकारी भी ले लेनी चाहिए। नीचे मैं प्रत्येक ग्रह व उसके मित्र, शत्रु व सम आदि का विवेचन कर रहा हूँ। सम से तात्पर्य जो न तो मित्र हो और न शत्रुवत् भावना रखता हो।

क्र० सं०	ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
१.	सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
२.	चन्द्र	रवि, बुध	—	शुक्र, मंगल, गुरु, शनि
३.	मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
४.	बुध	सूर्य, शुक्र,	चन्द्रमा	मंगल, गुरु, शनि
५.	गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
६.	शुक्र	बुध, शनि	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
७.	शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
८.	हर्शल	बुध, शनि, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
९.	वरुण	सूर्य, चन्द्र	बुध, शुक्र, मंगल	शनि

यहाँ पर अंकों के माध्यम से जब समझना हो तो ग्रहों से सम्बन्धित अंक को आधार बनाकर समझ लेना चाहिए। उदाहरण के लिए जिसके जीवन में एक का अंक महत्त्वपूर्ण हो अर्थात् जिसका जन्म १, १०, १९, २८ तारीख में से किसी एक तारीख को हुआ हो तो उसका अंक एक कहलाएगा, उसका ग्रह सूर्य होगा तथा उसके मित्र अंक २, ३ तथा ९ होंगे। इसी प्रकार उसके शत्रु ६ और ८ होंगे और सम भाव ५ से होगा, अर्थात् उसे अपने जीवन में किसी से भी सम्बन्ध स्थापित करने से पूर्व सामने वाले व्यक्ति, मित्र, पत्नी, पति, प्रेमी, प्रेमिका, अधिकारी, नौकर आदि की जन्म-तारीख से उसका अंक समझ लेना चाहिए और यह देख लेना चाहिए कि उसका जन्म-अंक क्या आपके

अंक का मित्र है या नहीं।

अंकों के माध्यम से दैनिक और भारतीय भविष्यफल भी देखा जा सकता है। दैनिक भविष्यफल में प्रातः ६ बजे से गणना होती है तथा एक ग्रह की अवधि १ घंटा ३० मिनट तक रहती है। यदि उस समय आपके जन्म-अंक से सम्बन्धित अंक के स्वामी का समय चल रहा है तो वह अनुकूल है और यदि आपके अंक से सम्बन्धित ग्रह के शत्रु ग्रह का समय चल रहा है तो उस समय में किया गया कार्य आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। इसी प्रकार सम ग्रह से सम्बन्धित समय में मिश्रित फल प्राप्त हो सकेगा।

दैनिक भविष्यफल

इसमें प्रत्येक वार में अलग-अलग प्रकार से ग्रहों का समय निर्धारित है। नीचे मैं इस सम्बन्ध में तालिका स्पष्ट कर रहा हूँ :

रविवार : दिन / रात्रि

ग्रह	समय	ग्रह	समय
सूर्य	६-०० से ७-३०	गुरु	६-०० से ७-३०
शुक्र	७-३० से ९-००	चन्द्र	७-३० से ९-००
बुध	९-०० से १०-३०	शुक्र	९-०० से १०-३०
चन्द्र	१०-३० से १२-००	मंगल	१०-३० से १२-००
शनि	१२-०० से १-३०	शनि	१२-०० से १-३०
गुरु	१-३० से ३-००	बुध	१-३० से ३-००
मंगल	३-०० से ४-३०	सूर्य	३-०० से ४-३०
सूर्य	४-३० से ६-००	गुरु	४-३० से ६-००

सोमवार : दिन / रात्रि

ग्रह	समय	ग्रह	समय
चन्द्र	६-०० से ७-३०	शुक्र	६-०० से ७-३०
शनि	७-३० से ९-००	मंगल	७-३० से ९-००

ग्रह	समय	ग्रह	समय
गुरु	९-०० से १०-३०	शनि	९-०० से १०-३०
मंगल	१०-३० से १२-००	बुध	१०-३० से १२-००
सूर्य	१२-०० से १-३०	सूर्य	१२-०० से १-३०
शुक्र	१-३० से ३-००	गुरु	१-३० से ३-००
बुध	३-०० से ४-३०	चन्द्र	३-०० से ४-३०
चन्द्र	४-३० से ६-००	शुक्र	४-३० से ६-००

मंगलवार : दिन **रात्रि**

ग्रह	समय	ग्रह	समय
मंगल	६-०० से ७-३०	शनि	६-०० से ७-३०
सूर्य	७-३० से ९-००	बुध	७-३० से ९-००
शुक्र	९-०० से १०-३०	सूर्य	९-०० से १०-३०
बुध	१०-३० से १२-००	गुरु	१०-३० से १२-००
चन्द्र	१२-०० से १-३०	चन्द्र	१२-०० से १-३०
शनि	१-३० से ३-००	शुक्र	१-३० से ३-००
गुरु	३-०० से ४-३०	मंगल	३-०० से ४-३०
मंगल	४-३० से ६-००	शनि	४-३० से ६-००

बुधवार : दिन **रात्रि**

ग्रह	समय	ग्रह	समय
बुध	६-०० से ७-३०	सूर्य	६-०० से ७-३०
चन्द्र	७-३० से ९-००	गुरु	७-३० से ९-००
शनि	९-०० से १०-३०	चन्द्र	९-०० से १०-३०
गुरु	१०-३० से १२-००	शुक्र	१०-३० से १२-००
मंगल	१२-०० से १-३०	मंगल	१२-०० से १-३०
सूर्य	१-३० से ३-००	शनि	१-३० से ३-००
शुक्र	३-०० से ४-३०	बुध	३-०० से ४-३०
बुध	४-३० से ६-००	सूर्य	४ ३० से ६-००

गुरुवार : दिन | **रात्रि**

ग्रह	समय	ग्रह	समय
गुरु	६-०० से ७-३०	चन्द्र	६-०० से ७-३०
मंगल	७-३० से ९-००	शुक्र	७-३० से ९-००
सूर्य	९-०० से १०-३०	मंगल	९-०० से १०-३०
शुक्र	१०-३० से १२-००	शनि	१० ३० से १२-००
बुध	१२-०० से १-३०	बुध	१२-०० से १-३०
चन्द्र	१-३० से ३-००	सूर्य	१-३० से ३-००
शनि	३-०० से ४-३०	गुरु	३-०० से ४-३०
गुरु	४-३० से ६-००	चन्द्र	४-३० से ६-००

शुक्रवार : दिन | **रात्रि**

ग्रह	समय	ग्रह	समय
शुक्र	६-०० से ७-३०	मंगल	६-०० से ७ ३०
बुध	७-३० से ९-००	शनि	७-३० से ९-००
चन्द्र	९-०० से १०-३०	बुध	९-०० से १०-३०
शनि	१०-३० से १२-००	सूर्य	१०-३० से १२-००
गुरु	१२-०० से १-३०	गुरु	१२-०० से १-३०
मंगल	१-३० से ३-००	चन्द्र	१-३० से ३-००
सूर्य	३ ०० से ४-३०	शुक्र	३-०० से ४-३०
शुक्र	४-३० से ६ ००	मंगल	४-३० से ६-००

शनिवार : दिन | **रात्रि**

ग्रह	समय	ग्रह	समय
शनि	६-०० से ७-३०	बुध	६-०० से ७-३०
गुरु	७-३० से ९-००	सूर्य	७-३० से ९-००
मंगल	९-०० से १०-३०	गुरु	९-०० से १०-३०
सूर्य	१०-३० से १२-००	चन्द्र	१०-३० से १२-००
शुक्र	१२-०० से १-३०	शुक्र	१२-०० से १-३०

ग्रह	समय	ग्रह	समय
बुध	१-३० से ३-००	मंगल	१-३० से ३-००
चन्द्र	३-०० से ४-३०	शनि	३-०० से ४-३०
शनि	४-३० से ६-००	बुध	४-३० से ६-००

दैनिक भविष्य-फल को समझना आसान है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपकी जन्म-तारीख क्या है और उसका मूलांक क्या है। नीचे मैं तारीख व उससे सम्बन्धित मूलांक स्पष्ट कर रहा हूँ। आपका जन्म चाहे किसी भी महीने में या किसी भी सन् में हुआ हो, पर जन्म-तारीख के आगे अंकित अंक ही आपका मूलांक होगा।

जन्म-तारीख	मूलांक	जन्म-तारीख	मूलांक
१	१	१७	८
२	२	१८	९
३	३	१९	१
४	४	२०	२
५	५	२१	३
६	६	२२	४
७	७	२३	५
८	८	२४	६
९	९	२५	७
१०	१	२६	८
११	२	२७	९
१२	३	२८	१
१३	४	२९	२
१४	५	३०	३
१५	६	३१	४
१६	७		

उदाहरण के लिए यदि आपका जन्म किसी भी महीने की १२ तारीख को हुआ है तो आपका मूलांक ३ होगा और इसका स्वामी ग्रह

मंगल है अतः आपके जीवन में मूलांक का स्वामी मंगल है।

पीछे दिए गए विवरण के अनुसार मंगल ग्रह के सूर्य, चन्द्र, गुरु मित्र हैं, बुध शत्रु है तथा शुक्र और शनि सम भाव हैं। अब दैनिक भविष्य-फल देखते समय इस बात का ध्यान रखें कि जिस ग्रह का समय चल रहा है, वह ग्रह आपके मूलांक ग्रह का मित्र है या शत्रु। यदि मित्र है तो उस अवधि में आपके लिए अनुकूलता रहेगी, पर यदि शत्रु ग्रह से संबंधित समय चल रहा है, तो वह समय आपके लिए किसी भी कार्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं है। अतः उस समय को टालकर ही कार्य करना चाहिए। यदि सम ग्रह का समय चल रहा है तो उस समय में किए गए कार्य का मिश्रित फल होगा।

इसके साथ ही इस बात का भी विचार कर लेना चाहिए कि कौन-सा समय कार्य प्रारंभ करने के लिए स्वीकार करना चाहिए।

अब मैं आगामी पृष्ठों में वार्षिक भविष्य-फल प्राप्त करने की विधि स्पष्ट कर रहा हूँ जो कि पहली बार प्रकाशित हो रही है और अंक ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए यह विधि पूर्णतया अनुकूल तथा प्रामाणिक है।

भारतीय पद्धति से राशि का निर्णय जन्म-समय में गतिशील नक्षत्र से होता है। या उस दिन चन्द्रमा जिस राशि पर होता है, वही राशि उस व्यक्ति की कही जाएगी। चन्द्रमा एक महीने में बारह राशियों पर भ्रमण कर लेता है अतः एक राशि पर वह सवा दो दिन रहता है। या यों कहा जाए कि सवा दो दिन में जन्म लेने वाले व्यक्तियों की राशि एक होती है।

परन्तु अंग्रेजी पद्धति मे या अंक ज्योतिष पद्धति से एक महीने में एक राशि का निर्धारण होता है अर्थात् सूर्य जिस राशि पर होता है, वही राशि उस व्यक्ति की मानी जाती है। चूंकि सूर्य एक राशि पर लगभग एक महीने तक रहता है अतः उस पूरे महीने में जितने भी बालकों का जन्म होता है उन सबकी राशि एक ही होती है।

नीचे मैं राशि व उससे संबधित समय स्पष्ट कर रहा हूँ। यह समय किसी भी वर्ष का हो सकता है। राशि के आगे जो समय लिखा हुआ है किसी भी वर्ष इस समय में पैदा हुए बालक की उससे सबंधित राशि ही मानी जाएगी।

राशि	सम्बन्धित समय
मेष	२१ मार्च से २० अप्रैल तक
वृष	२१ अप्रैल से २० मई तक
मिथुन	२१ मई से २० जून तक
कर्क	२१ जून से २० जुलाई तक
सिंह	२१ जुलाई से २१ अगस्त तक
कन्या	२२ अगस्त से २२ सितम्बर तक
तुला	२३ सितम्बर से २२ अक्तूबर तक
वृश्चिक	२३ अक्तूबर से २२ नवम्बर तक
धनु	२३ नवम्बर से २० दिसम्बर तक
मकर	२१ दिसम्बर से २० जनवरी तक
कुंभ	२१ जनवरी से १८ फरवरी तक
मीन	१९ फरवरी से २० मार्च तक

वार्षिक भविष्य-फल

नीचे मै ग्रह तथा उससे सम्बन्धित समय स्पष्ट कर रहा हूँ प्रत्येक वर्ष नीचे लिखे समय म सम्बन्धित ग्रह का ही प्रभाव विशेष रूप से गतिशील होता है।

ग्रह	समय
सूर्य	१४ अप्रैल से ४ मई तक
चन्द्र	५ मई से २५ जून तक
मंगल	२६ जून से २४ जुलाई तक
बुध	२५ जुलाई से २१ सितम्बर तक
शनि	२२ सितम्बर से २८ अक्तूबर तक
गुरु	२९ अक्तूबर से २७ दिसम्बर तक

राहु	२८ दिसम्बर से १० फरवरी तक
शुक्र	११ फरवरी से १३ अप्रैल तक

जन्म-तारीख से भविष्य-निर्धारण

नीचे मैं प्रत्येक मूलांक से सम्बन्धित मित्र, शत्रु, सम अंकों का विवरण स्पष्ट कर रहा हूँ :

मूलांक	मित्र	शत्रु	सम
१	२ ३ ९	६ ८	५
२	१ ५		६ ९
३	१ २ ३	५	६ ८
४	१ ६	२	३ ९
५	१ २ ९	५ ६	८
६	५ ८	१ २	३ ९
७	५ ६	१ २ ९	३
८	५ ६ ८	१ २ ९	३
९	१ २	५ ६ ९	८

ऊपर की तालिका स्पष्ट है। यदि किसी का मूलांक ६ है तो ५ और ८ अंक उसके मित्र हैं, १ और २ अंक उसके शत्रु हैं तथा ३ और ९ अंक उसके सम हैं।

विवाह करते समय यह देख लेना चाहिए कि होने वाली पत्नी का मूलांक आपके मूलांक का मित्र है या शत्रु।

इसी प्रकार व्यापार में, लेन-देन करते समय, मित्र बनाते समय भी उसका मूलांक ज्ञात कर देख लेना चाहिए कि उसका अंक आपके मूलांक से मेल खाता है या नहीं।

मूलांक के साथ-साथ भाग्यांक पर भी विचार कर लेना चाहिए। मूलांक में केवल जन्म की तारीख को ही महत्त्व दिया जाता है जबकि भाग्यांक में पूरी जन्म-तारीख को जोड़कर एक अंक निर्धारित किया जाता है।

०००



साहित्य प

